नैतिक आध्यात्मिक गीताञ्जली

(नीति एवं विकृति का सुफल एवं कुफल)

गीत रचनाकार – कविवर आचार्य श्री कनकनन्दी जी

''पावन पुण्य स्मरण में ग्रंथ प्रकाशन''

परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर

आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज की पुण्य स्मृति में

-: सौजन्य :-

मोहनलाल चन्द्रवती जैन चैरिटेबल ट्रस्ट

W-11/4 वेस्टर्न एवेन्यू सैनिक फार्म

नई दिल्ली – 110062

ग्रंथाङ्क – 202 संस्करण – 2011

प्रतियाँ – 1000 मूल्य – 51/–रु.

-: प्राप्ति स्थान :-

धर्म दर्शन सेवा संस्थान, द्वारा – श्री छोटूलाल जी चित्तौड़ा,

चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास, उदयपुर

(राज.) – 313001, मो. 9783216418

-: सम्पर्क सूत्र :-

डॉ. नारायणलाल कछारा (सचिव)

55, रवीन्द्र नगर, उदयपुर (राज.) – 313001

फोन नं. (0294) 2491422, मो. 9214460622

E-mail : nlkachhara@yahoo.com

हृदयोद्‌गार

(विभिन्न कवियों के स्वरूप एवं विभिन्न कविताएँ)

भाव को अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा है। भाषायें विभिन्न होने पर भी उन सब की दो प्रमुख विधाये होती हैं। यथा (1) गद्यात्मक (2) पद्यात्मक। गद्यात्मक विधा से पद्यात्मक विधा से लिखना तथा गाना कठिन होते हुए भी यह विधा लालित्य, कर्णप्रिय, मनमुग्धेरी, प्रभाव उत्पादक, चिरस्मरणीय, लय-ताल-संगीतमय है। इस विधा के लेखक को कवि कहते हैं और बोलने/गाने वालो को गायक कहते हैं। सच्चे कवि में विषयज्ञान, भाषाज्ञान, कल्पनाशीलता, भावप्रवणता, प्रेरणा, स्व-परविश्वकल्याण की भावना के साथ-साथ भक्ति/पीड़ा/उत्साह/उत्कंठा आदि विशेष गुण भी होते हैं। आध्यात्मिक सन्त कवि में यह भक्ति आदि स्व-आराध्य के प्रति होती है तो प्रकृति प्रेमी कवि में प्रकृति के प्रति, राष्ट्रप्रेमी कवि में राष्ट्र प्रति होती है। ऐसा ही अन्यान्य विषयों के कवि के बारे मे जान लेना चाहिए। आध्यात्मिक सन्त कवि/भक्त कवि द्वारा लिखित पद्य को प्रार्थना, स्तुति, भजन, आरती, पूजा, आराधना, कीर्तन आदि कहते हैं। भक्त कवि स्वयं को स्व-आराध्य तथा स्व-आराध्य धर्म के समक्ष क्षुद्र/अल्पज्ञ/असमर्थ मानते जानते हुए भी स्व-आराध्य तथा स्व-आराध्य धर्म के प्रति उनमें जो उत्कृष्ट भक्तिआदि होती है उससे वे प्रेरित होकर पद्य आदि की रचना करते है। यथा -

स्तुति पुण्य गुणोत्कीर्तिः स्तोता भव्यः प्रसन्नधीः।
निष्ठितार्थो भवां स्तुत्यः फल नैश्रेयसं सुखम्।। (99) सहस्त्रनाम

पुण्यमय आदर्श गुणों के कीर्तन/प्रशंसा/गुणगान को स्तुति, अर्चना, स्तुति करने वाला पूजक होता है। जिसने कृतकृत्य होकर परम पुरुषार्थ रूप अमृत स्वरूप पूर्णावस्था को प्राप्त कर लिया है ऐसे परम ब्रह्मस्वरूप शुद्धात्मा स्तुत्य/पूजनीय है। स्तुति, पुजा, प्रार्थना का फल नैश्रेयस सुख है।

न पूजयार्थस्त्वयि वीतरागे न निन्दया नाथ विवान्तवैरे।

तथापि ते पुण्यगुण स्मृतिर्नः पुनातु चित्तं दुरितांजनेम्यः।। (57)

(स्वयंभू स्तोत्र)

हे जिनेन्द्र भगवान् ! आप वीतरागी होने के कारण आपको पूजा से कोई प्रयोजन नहीं है तथा निन्दा करने वालों से आपका किसी प्रकार का वैरत्व नहीं है तथापि आपके पुण्यश्लोक, गुणों के स्मरण मात्र से चित्त पवित्र हो जाता है एवं पाप रूपी कलंक दूर हो जाते हैं।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।

देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्र।।(14)

वे केवलज्ञानी जिनेन्द्र भगवान् पूजा करने वाले के लिए चैत्य, चैत्यालय और धर्म की रक्षा करने वालों के लिए आचार्य,उपाध्याय और साधुओं के लिए, शैक्ष्य आदि सामान्य तपस्वियों के लिए, देश के लिए, राष्ट्र के लिए, नगर के लिए, प्रजा के लिए, शान्ति प्रदान करें।

यः संस्तुतः सकल वाङ्मय तत्त्व बोधा,

दुद्भूत बुद्धि पटुभिः सुरलोक नाथै।

स्तोत्रेर्जगत् त्रितय चित्र हरै रुदारेः,

स्तोष्ये किलाह मपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्।। (2) भक्तामर स्तोत्र

द्वादशांग वाणी व तत्त्वज्ञान में जो चतुर हैं, ऐसे बृहस्पति द्वारा मनमोहक स्तोत्रों से जिनकी स्तुति की गई है, अतः मैं भी उन आदि प्रभु की निश्चय से स्तुति करूँगा।

बुद्धया विनापि विबुधार्चित पाद पीठ,

स्तोतुं समुद्यत मति र्विगत त्रपोऽहम्।

बालं विहाय जल संस्थित मिन्दुबिम्ब,

मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्।। (3)

हे स्वामी! आपकी सेवा देवों द्वारा की गई है अतः हम भी मन्दबुद्धि होते हुए भी आपकी भक्तिकरते हैं। मेरा यह प्रयास वैसा है जैसे - कोई बालक जल में पड़े चन्द्र बिम्ब को अल्पबुद्धि के कारण शीघ्र पकड़ने को दौड़ता है।

सोऽहं तथापि तव भक्ति वशान्मुनीश,

कर्तुं स्तवं विगत शक्ति रपि प्रवृतः।

प्रीत्यात्म वीर्यं मविचार मृगी मृगेन्द्रम्,

नाभ्येति किं निज शिशोः परिपालनार्थम्।। (5)

हे मुनीश ! जिस प्रकार कमजोर हिरणी पुत्र स्नेह के कारण अपने शिशु को बचाने के लिए शक्ति का ख्याल न करते हुए शेर से लड़ती है, उसी प्रकार मैं भी शक्तिरहित होते हुए भी आपकी स्तुति में प्रवृत्त हो रहा हूँ।

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास धाम,

त्वद् भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम्।

यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,

तच्चाम्र चारु कलिका निकरैक हेतु।। (6)

आपकी स्तुति करने में मैं अल्पज्ञानी हूँ, विद्धानों द्धारा हास्य का पात्र हूँ, लेकिन आपकी भक्ति मुझे बलात् वाचाल बना रही है। जैसे बसन्त ऋतु में कोयल से गुञ्जन कराने के लिए निश्चय से सुन्दर आम्रमञ्जरी ही मुख्य कारण है।

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद

मारभ्यते तनु धियापि तव प्रभावात्।

चेतो हरिष्यति सतां नलिनी दलेषु,

मुक्ताफल द्युति मुपैति ननूद बिन्दूः।। (8)

जिस प्रकार कमल के पत्ते के प्रभाव के कारण पत्ते पर पड़ी जल की बून्द

मोती सी लगती है वैसे ही मुझ अल्पज्ञ के द्धारा किया गया यह स्तवन सज्जनों के मन को आकर्षित करेगा तो इसमें आपका ही प्रभाव है।

आस्तां तव स्तवनमस्त समस्त दोषं,

त्वत् संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।

दूरे सहस्त्र किरणः कुरुते प्रभैव,

पद्मा करेषु जलजानि विकास भाञ्जि।। (9)

सूर्य की तो बात ही क्या जब उसकी प्रभा से ही सरोवर में कमल खिल जाते हैं, ठीक वैसे ही आपकी स्तुति तो दूर आपकी पवित्र कथा से ही प्राणियों के सभी पाप दूर हो जाते हैं।

नात्यदभूतं भुवन भूषण भूतनाथ,

भूतैर्गुणे र्भुवि भवन्तमभिष्ठुवन्तः।

तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,

भूत्याश्रितं य इह नात्म समं करोति।। (10)

हे जगभूषण ! प्राणियों के स्वामी ! आपके यथार्थ गुणों की भक्ति करने वाले इस पृथ्वी पर आप जैसे ही हो जाते हैं, इसमें कोई अचरज नहीं। सच्चा मालिक वही है, जो अपने आश्रित को स्वयं अपने जैसा बनाले।

स्तोत्रसजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धा,

भक्त्या मया विविध वर्ण विचित्र पुष्पाम्।

धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्त्रं,

तं 'मानतुंग' मवशा समुपैति लक्ष्मीः।। (48)

हे जिनदेव! नाना रुचि, अलंकार, पुष्पों से गूँथा गया आपका यह पावन स्त्रोत जो व्यक्ति हमेशा भक्ति पूर्वक पढ़ता है, गाता है, याद करता है, उसे नियम से भविष्य में मोक्ष लक्ष्मी प्राप्त होती है।

बाल्मीकि ने भी मैथुनरत क्रोंच पक्षी की जोड़ी की अवस्था/ व्यथा से द्रवीभूत होकर रामायण की रचना की। यथा-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम शाश्वती समा।

यत्क्राँच मिथुनादेकमवधी काम मोहितम्।।

48 कोठों के मध्य में राजा द्धारा बन्दी किये गये आचार्य मानतुंग स्वामी ने भक्तामर स्त्रोत, भस्मक रोग से पीड़ित आचार्य समन्तभद्र स्वामी (छद्मवेश में) ने स्वयम्भू स्तोत्र, सर्पदंश से पीड़ित स्व-पुत्र की सूचना प्राप्त करके धनञ्जय कवि ने विषापहार स्तोत्र, कुष्ठरोग से आक्रान्त आचार्य वादीराज स्वामी ने एकीभाव स्तोत्र आदि की रचनाएँ की हैं। उपरोक्त कवियों के द्धारा उत्कट भक्ति पूर्वक स्तुति की रचना एवं स्मरण-गान से उनके स्व-स्व संकट आदि दूर हुए।

मन्त्र विज्ञान, संगीत चिकित्सा, प्राकृतिक चिकित्सा, मनोवैज्ञानिक चिकित्सा आदि से भी उपर्युक्त प्रकरण को बल मिलता है। विशेष परिज्ञान के लिए जिज्ञासु मेरी (आ. कनकनन्दी) 1. मन्त्र विज्ञान 2. शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक स्वास्थ्य के विविध आयाम आदि का अध्ययन करें। निम्न में कुछ संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत है।

इन रचनाओं की आवश्यकता-पीड़ा-प्रेरणा

मैं (आचार्य कनकनन्दी) बाल्य विद्यार्थी अवस्था से ही विभिन्न भाषाओं की देश-विदेशों की प्राचीन से लेकर आधुनिक आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक, राष्ट्रीय, सामाजिक, प्राकृतिक, क्रान्तिकारी कविताओं को पढ़ता-सुनता आ रहा हूँ जिसमें से श्रेष्ठ कविताओं का प्रभाव मेरे जीवन में प्रेरणास्पद है। कुछ वर्षों से हिन्दी सिनेमा के कुप्रभाव तथा कुछ कुकवियों के कारण विशेषतः हिन्दी कविता के स्तर में गिरावट हुई है और हो रही है। ऐसा ही प्रादेशिक भाषाओं की कविताओं में भी कुछ गिरावट हो रही है। जिसका कुप्रभाव भारतीयों

के ऊपर पड़ रहा है, इससे भी मुझे पीड़ा हो रही है और श्रेष्ठ कविताओं की आवश्यकता को अनुभव कर रहा हूँ। वैसे तो मैं विद्यार्थी जीवन से ही विदेशी साहित्य आदि का अध्ययन कर रहा हूँ परन्तु 2000 से विदेशी वैज्ञानिकों चैनलों का विशेष अध्ययन कर रहा हूँ। इससे विदेशी वैज्ञानिकों की उदारता, व्यापकता, प्रगतिशीलता, अहिंसा, शान्ति, पर्यावरण सुरक्षा, निष्पक्षता, निडरता, नम्रता, जिज्ञासा, सहज-सरलता आदि से मुझे प्रेरणा मिल रही है। 2010 को हमारा ससंघ का चातुर्मास सीपुर अतिशय क्षेत्र में हुआ। वहाँ के एकान्त, शान्त, स्वच्छ, शुद्ध वातावरण में मेरी उपरोक्त आवश्यकता-पीड़ा-प्रेरणा ने मूर्तरूप लेकर इन कविताओं को रचा है। कविताओं के रागों को सही रूप देने में संघस्थ साधु-साध्वी, ब्रह्मचारिणियों का महत्वपूर्ण सहयोग मिल रहा है। इन सबको, अर्थसहयोगियों को मेरा यथायोग्य प्रतिनमोऽस्तु, आशीर्वाद है। प्रस्तुत कृति में कुछ कविताओं का प्रकाशन हो रहा है। शेष कविताओं का प्रकाशन आगामी कृतियों में शीघ्र होगा। इन सब कविताओं के माध्यम से स्व-पर-विश्व में आध्यात्मिक क्रान्ति-शान्ति हो, ऐसी शुभ मंगल कामनाओं के साथ-

विशेष सूचनाः- किसी भी कविता में राग सम्बन्धी तृटियाँ हो तो सदाशयता से राग विशेषज्ञ उसे संशोधित करते हुए गायेंगे एवं हमें सूचित करेंगे।

- आचार्य कनकनन्दी

आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव की विशेषता

वन्द्य चरण जिनके... प्रस्तुति-मुनि सुविज्ञसागर

(तर्जः ज्योति कलश छलके...)

वन्द्य चरण जिन के... 2

जिनके सन्मुख विश्व हुआ है, नतमस्तक मन से...

वन्द्य चरण जिनके... 2

अध्यातम की ज्योति जलाएँ, धर्म-दर्श-विज्ञान मिलाएँ

घट-घट में सबके... 2 वन्द्य चरण जिनके...

हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई, दिक्-श्वेताम्बर जैनी भाई

आकर शोध करें...2 वन्द्य चरण जिनके...

देश-विदेश में जाकर प्रतिनिधि, गुरुवर का अभियान प्रचारें

भावे तन-मन से...2 वन्द्य चरण जिनके...

वैश्विक दृष्टि सब अपनाएँ, ऐसी भावना है गरुवर की

'सुविज्ञ' कहे मन से...2 वन्द्य चरण जिनके...

विषयानुक्रमणिका

हृदयोद्गार (विभिन्न कवियों के स्वरूप एवं विभिन्न कविताएँ)

इन रचनाओं की आवश्यकता-पीड़ा-प्रेरणा

वन्द्य चरण जिनके (आचार्य श्री कनकनन्दी जी की विशेषता)

अ.क्र.	विषय एवं गीत क्रमांक	पृ.क्र.
परिच्छेद - I		
नीति सुमनाञ्जली		
1.	नीति सुमनाञ्जली (1)	14
2.	छोटे छोटे सदाचार नित्य ही पालो (2)	15
3.	होना चाहिये (3)	16
4.	अनुशासन से बने जीव महान् (4)	17
5.	नैतिक नियम न कर सको तो (5)	18
6.	मानव की उपलब्धियों का सदुपयोग (6)	20
7.	धर्म शून्य धर्माचार (7)	21
8.	क्यों करो अभिमान रे! (8)	22
9.	किया न करो... किया करो (9)	23
10.	स्वीकार्य-अस्वीकार्य (10)	24
11.	यथा बोये-तथा पाये (11)	25
12.	अपेक्षा-उपेक्षा-प्रतीक्षा रहित विकास (12)	26
13.	अच्छे काम करो (प्रेरणादायी कविता) (13)	27
14.	गुण सर्वत्र पूज्यते (नैतिक कविता) (14)	28
15.	सर्वोच्च (दोहे) (15)	29

16. सुखी बनने के लिए गुणी बनना चाहिए (16) 29
17. नवयौवन में महान् लक्ष्य प्राप्त करो (यौवन रूपी सुअवसर का सदुपयोग-वन्दे क्रान्तिवीर) 30
18. प्रौढ़काल का सदुपयोगः आत्मकल्याण (18) 32
19. मौन रहो या सत्य कहो (बातूनी वृत्ति की निवृत्ति से मिलती है शान्ति) (19) 33
20. महान् बनने के लक्षण (20) 34
21. निन्दा-प्रशंसा से अप्रभावी होता है सुखी (आदर्श बनने के सूत्र) (21) 36
22. भारतीय बने सुभाव धारी (भारतीयों की 28 कमियों को दूर करने के उपाय) (22) 37
23. पञ्च स्थावरों के महान् योगदान (पञ्च एकेन्द्रिय जीवों के त्रस जीवों के प्रति उपकार) (क्षुद्र जीवों का बड़े जीवों के प्रति उपकार) 39
24. कार्य सम्पादन तथा विकास के सूत्र (मैनेजमेन्ट एवं सफलता के सूत्र) (24) 41
25. मेरे साध्य-साधना-भावना-पीड़ा (कृपा) (25) 42
26. मानव के महान् होने पर...!? (26) 43
27. माँ सरस्वती-स्तुति (27) 45
28.a भारत है मातृभूमि आर्यजाति की (28) 46
28.b तन-मन के स्वास्थ्य कारक पैदल भ्रमण (अहिंसा पालन एवं पर्यावरण-सुरक्षा हेतु भी) (29) 47
28.c सबको सदा सुख-शान्ति प्राप्त करने का सच्चा एवं मिथ्या उपाय (30) 49

परिच्छेद - II

विकृति (विभिन्न विकृतियों को दूर करने का उपाय)

29. न सीखी मायाचारी (मैं क्यों भोला बनता जा रहा हूँ) (1) 51
30. दुनियाँ वालों की दोगली कहानी (2) 52
31. लोभी की आत्मकथा (3) 53
32. शिक्षा की गाथा-व्यथा-वृथा-आत्मा(4) 54
33. पाप के विश्वरूप (फल तथा सुख प्राप्ति के उपाय) (5) 56
34. हे मानव तू न बन अपावन (6) 56
35. विचित्र जीव की अजीब कहानी (7) 57
36. महापुरुषों से मानव जाति महान् अन्यथा दानव (8) 58
37. अनावश्यकता से जीव पाप करे अधिक (अनर्थदण्ड़ (अनुत्पादक कार्य) के दुष्परिणाम(9) 59
38. सब न होते महान् या दुर्जन (10) 60
39. दूर से सुन्दर लगे (दूर के ढ़ोल सुहावने) (11) 61
40. दुनियाँ की विचित्रता (12) 63
41. भ्रष्टाचार की महिमा (रूपक अलंकार युक्त व्यंगात्मक कविता) (13) 63
42. पाप के विभिन्न रूप समझा करो (14) 64
43. अपने आत्मा की हत्या किया न करो (15) 65
44. भगवान महावीर यदि भारत में होते अभी समस्यायें होती भारी (भारतीय अव्यवस्था एवं विकृति पर एक व्यंगात्मक रचना) (16) 67
45. बड़ी तृष्णाओं का अन्तिम फल असफलता (17) 68
46. विपरीत ज्ञान से विपरीत मान्यता (18) 69
47. मानव की विचित्र वधशालायें बन्द हों ! (पुरुषार्थ सिद्धयुपाय) (19) 70

48. खोटे छोटे लक्ष्यधारी अनुदारी (20) 71
49. धर्म शून्य धर्माचार (21) 73
50. क्यों करो अभिमान रे! (22) 74
51. विनाश होता है धीरे-धीरे (नकारात्मक विकास के सूत्र) (23) 75
52. विकास होता है धीरे-धीरे (सकारात्मक विकास के सूत्र) (24) 76
53. अनुभव आता है धीरे-धीरे (अनुभव के मोती) (25) 77
54. भारतीयों की स्टेटस सिम्बल-अप टू डेट की विकृत मानसिकता (भारतीयों की अभिजात्य प्रवृति एवं आधुनिकता) (वॉरेन बफेट व बिल गेट्स से आधुनिकता सीखें भारतीय) (वर्तमान भारत की तस्वीर) (26) 79
55. भारतीयों की कमी सम्बन्धी व्यंगात्मक चित्रण - (हाय रे ! दयालु भारत) (27) 81
56. क्यों करो है ढोंगाचार? (28) 82
57. तुच्छ (नीच) व्यक्तिके व्यक्तित्व (दुर्जन की आत्मकथा) (व्याजात्मक रूपक अलंकार की कविता) (29) 83
58. न करो हे आत्महत्या! (30) 85
59. विपरीत ज्ञान से विपरीत मान्यता (31) 85
60. महान् हिंसक, रोगकारक, ज्वालामुखी कारक रसोई गैस (32) 86
61. इण्ड़ियनों के पिछड़ापन के कारण एवं निवारण (भारत के पतन एवं उत्थान के कारण) (33) 88
62. आधुनिक इण्डियन की एक ही भाषा (व्यंगात्मक उद्‌बोधन परक कविता) (34) 90
63. भारतीय नारी की गरिमावस्था एवं पतितावस्था (35) 93
64. आधुनिक पढ़ी-लिखी रानी (आधुनिकता से नारी के लिए सुविधा एवं समस्याएँ) (36) 94
65. सुखी एवं दुःखी होने के कारण (दुःखी की विकृत भावना) (हे दुःखी देश इण्ड़िया सुखी बनने का उपाय करो) खुशी के

पैमाने पर भारत का स्थान 90 वें स्थान पर है पृथ्वी में
(एक अन्तर्राष्ट्रीय विदेशी रिपोर्ट) (37) 96

66. भारत के भ्रष्टाचार एवं पापाचार कारणों के अनुसन्धान (38) 98

67. विश्वगुरु भारत बन गया बेईमानों का देश (ईमानदारी में
भारत का स्थान 87 वें पायदान पर) (आधुनिक इण्डिया
की सच्ची तस्वीर) (39) 101

68. पापी पेट से अधिक पाप मन से मानव करता पापाचार (40) 103

69. कम सृजनशील क्यों है नयी पीढ़ी
(क्या मानव यथार्थ से सर्वोदयी बना है?!) (41) 104

-कम सृजनशील है आज के युवा 107

-बच्चों में कम होती रचनात्मकता 107

-अमीर लोग नहीं करते माता-पिता का ख्याल 107

70. रोग एवं हिंसाकारक हैं - टूथपेस्ट प्रयोग (42) 108

71. प्रदूषणों से विभिन्न रोग एवं समस्याएँ (43) 110

72. जीवों के अनन्त परिभ्रमण तथा परिनिर्वाण (44) 111

73. पावन तीर्थ क्षेत्र से पवित्रता सीखें, किन्तु पाप न करें !
(तीर्थ क्षेत्रों का सदुपयोग करें, न कि दुरुपयोग) (45) 112

74. सत्य-समता-शान्ति के बिना शिक्षा धर्म आदि अहितकर (46) 113

-शिक्षा-विज्ञान-मातृ सम्मेलन 115

-स्वसंघ के आदर्शों के द्वारा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार
विश्व स्तर पर संभव 116

-आचार्य श्री कनकनन्दी-साहित्य कक्ष की सूची 121

राग संशोधन के सहयोगीः

1. मुनि सुविज्ञसागरजी
2. मुनि आध्यात्मनन्दीजी
3. आर्यिका क्षमाश्री माताजी
4. ब्र. फाल्गुनी दीदी
5. ब्र. विधि दीदी

सहयोगी- ब्रजलाल जैन (सेमारी)

परिच्छेद - 1

नीति सुमनाञ्जली

(नीति सुमनाञ्जली) (1)

(तर्ज - छोटे-छोटे शिष्य है लेकिन .....)

खोटे ही छोटे होते आकार से नहीं,
क्षुद्रता से क्षुब्ध होते उम्र से नहीं।
विवेकी ही ज्ञानी होते साक्षरी नहीं,
सुभाव से धर्मी होते क्रिया से नहीं।
तृष्णा से दरिद्री होते अपरिग्रही नहीं,
समता से साधु होते वेश से नहीं।
अकषायी अहिंसक है कायर नहीं,
आत्मजयी विश्वजयी दिग्विजयी नहीं।
सत्य ही परमेश्वर वचन के नहीं,
निर्लोभ ही शुचिता स्नान से नहीं।
सुगुणों से सुन्दरता फैशन से नहीं,
नम्रता से महानता घमण्ड से नहीं।
समता से क्षमाधर्म क्षमावाणी नहीं,
सहज ही सरलता जड़ता/(अज्ञता) नहीं।
मनजयी संयमी हैं आलसी नहीं,
तृष्णात्यागी तपस्वी है निराहारी नहीं।
आत्मजयी वीर होते बर्बर/(क्रूर) नहीं;
रक्षक ही शासक है पीड़क नहीं।
सन्तोष ही सम्पन्नता सम्पत्ति से नहीं;

भाव में संसार है ब्रह्माण्ड़ नहीं।
सत्य से न्याय है साक्षी से नहीं,
सच्चा ज्ञान प्रमाण है फैसला नहीं।
अच्छी भावना प्रभावना है प्रसिद्धि नहीं,
आत्मशान्ति धर्म है पन्थ में नहीं।
पाप से पतन है त्याग से नहीं;
भोगी से प्रदूषण हैं योगी से नहीं।
आप्त से आगम है परम्परा नहीं,
सच्चाई के आम्नाय हैं झूठ के नहीं।
आत्मनिष्ठ अनुयायी भीड़तन्त्र नहीं,
पुरुषार्थी प्राप्त करे धोखेबाज नहीं।
स्वविश्वासी धैर्यशाली बलशाली नहीं,
सत्यनिष्ठ नम्रभावी चापलूस नहीं।
अनजान शंकालू प्रज्ञावान् नहीं,
अल्पज्ञान आश्चर्य है पूर्ण ज्ञान नहीं।
आकार नहीं महान् गुणवत्ता सही,
छोटे दीपक से अन्धेरा भागता सही।

छोटे छोटे सदाचार नित्य ही पालो (2)

(तर्ज - 1. अच्छा सिला दिया... 2. छोटी छोटी गैया...)

छोटे छोटे सदाचार नित्य ही पालो, श्वास क्रिया सम इसे नित्य ही करो
छोटे छोटे बच्चों को प्यार करो, बड़े बड़े व्यक्ति का आदर करो,
दुर्गणी दुर्जनों से दूर ही रहो, सुगुणी सज्जनों की संगति करो,

प्यास दूर करने हेतु पानी तो पियो, प्यास दूर करने हेतु विष न पियो।

छोटे छोटे सदाचार .....(1)

साक्षर बना किन्तु राक्षस नहीं, सभ्यता संस्कृति त्याग भी नहीं,
आधुनिक बनो किन्तु उद्दण्ड़ नहीं, फैशनी व्यसनी मूढ़ बनो नहीं,
धार्मिक बनो किन्तु संकीर्ण नहीं, कट्टर अन्धविश्वासी बनो भी नहीं।

छोटे छोटे सदाचार .....(2)

भोजन करो किन्तु सात्विक करो, शाकाहार मिताहार हित भी करो,
बाते भी करो किन्तु सत्य भी बोलो, हित मित प्रिय वच/(बोल) सदा ही बोलो,
कार्य भी करो किन्तु उचित करो, प्रामाणिक अहिंसक समय पे करो।

छोटे छोटे सदाचार .....(3)

कृषि व्यापार सेवा शिल्पादि करो, धर्म नीति सदाचार कभी न भूलो,
नेता न्यायाधीश शासक पुलिस बनों, राष्ट्रहित मर्यादा दया न भूलो,
शिक्षक बनो ज्ञानी अनुभवी भी बनो, वात्सल्य ज्ञानदाता गुणी भी बनो।

छोटे छोटे सदाचार .....(4)

विद्यार्थी बनो किन्तु जिज्ञासु बनो, गुणग्राही सदाचारी विनम्र बनो,
स्वाध्यायी बनो अनुप्रेक्षा भी करो, अनुभवी आत्माकांक्षी व्यापक बनो,
छोटे छोटे सदाचार महत्त्व के हैं, 'कनकनन्दी' को ये गुण सदा भाते हैं।

छोटे छोटे सदाचार .....(5)

होना चाहिये (3)

सत्य समता का सम्मान होना चाहिए।
शान्ति प्राप्ति हेतु प्रयास होना चाहिये।। (1)
धर्म न रूढ़ि से बना, न देश मिट्टी से।

इसके लिए तो सत्य शान्ति होना चाहिए।। (2)

न डिग्री में ही योग्यता, न मन्दिर में ही धर्म है।

इसके लिए ज्ञान और दया होना चाहिये।। (3)

न संसद मे ही विधान, न कोर्ट में न्याय है।

इसके लिए तो समता सत्य होना चाहिए।। (4)

सत्ता व सम्पत्ति से न होता है कोई बड़ा।

इसके लिए श्रेष्ठ ध्येय होना चाहिए।। (5)

बंगला व साधन से न होता कोई सुखी।

इसके लिए तो सन्तोष और शान्ति होनी चाहिए।। (6)

प्रसिद्धि व भीड़ से सन्त न होता महान्।

इसके लिए आत्मिक शान्ति होना चाहिए।। (7)

फैशन व व्यसन से न कोई आधुनिक होता।

इसके लिए तो उदार सोच होना चाहिए।। (8)

धन के संग्रह से न कोई होता सच्चा श्रीमान्।

इसके लिए तो धन का सदुपयोग चाहिए।। (9)

'कनकनन्दी' की भावना का सम्मान होना चाहिए।

विश्वगुरु बनने का अभियान होना चाहिए।। (10)

झाड़ोल (स.) दि= 22/5/2011 रात्रि 11.56

अनुशासन से बने जीव महान् (4)

(तर्ज - यमुना किनारे श्याम.....)

अनुशासन भंग किया न करो, विपत्ति को निमंत्रण दिया न करो।

अनुशासन से धीरे-धीरे होता विकास, अनुशासन भंग से होता विनाश।।

आत्मानुशासन सर्व विकास मूल,अनुशासन विहीनता विनाश मूल।। (टेक)

अनुशासन है संयम नीति नियम, अनुशासन है ध्यान सदाचरण।

अनुशासन है इन्द्रिय मन संयम, क्रोध मान माया लोभ काम संयम।।

शालीनता विनम्रता आज्ञापालन, समय पे कर्त्तव्यों का परिपालन।।

अनुशासन... (1)

अनुशासन से बनते तीर्थेश बुद्ध, ऋषि मुनि गणधर महात्मा सिद्ध।

व्यक्ति परिवार समाज संघ राष्ट्र का, विकास होता है सदा विश्व का।।

अनुशासन से सही काम होते हैं, अनुशासन से सम्मान शान्ति मिले है।। (2)

अनुशासन भंग से होना अनर्थ, दुर्घटना अपमृत्यु कार्य विनाश।

अनुशासन भंगकारी होता दुर्जन, मान मर्यादा नाशक होता कुजन।।

धन जन समय का करे विनाश, स्व-पर के विनाशक दुष्ट राक्षस।। (3)

अनुशासन भंगकारी कंस रावण, दुर्योधन हिटलर बिन लादेन।

अनुशासन हीनता का फल पाया है, स्व-स्व दुष्टता का फल चखा है।।

स्व-स्व दुष्कर्म का फल पाते हैं, पाप के अनुसार पीड़ा पाते हैं।। (4)

अनुशासन है प्राण शिक्षा धर्म का, अनुशासन है प्राण सदाचार का।

न्याय राजनीति प्रशासन का प्राण है, विकास का प्राण है अनुशासन।।

''कनकनन्दी'' के प्रिय अनुशासन, अनुशासन से बने जीव महान्।। (5)

झाड़ोल (स.) 19/5/2011, मध्याह्न-2.43

नैतिक नियम न कर सको तो (5)

व्यायाम यदि न कर सको तो, शारीरिक श्रम तो सदा करना।

प्राणायाम यदि न कर सको तो, पैदल चलना मत भूलना।। (1)

ध्यान यदि न कर सको तो, टेनशन कभी भी मत करना।
अध्ययन यदि न कर सको तो, गुणग्राही भी सदा बनना।। (2)
पूजा यदि न कर सको तो, पूज्यों प्रति भक्ति सदा रखना।
तपस्या यदि न कर सको तो , तृष्णा भाव को नहीं करना।। (3)
साधना यदि न कर सको तो, समता भाव सदा रखना।
पुण्य यदि न कर सको तो पाप भाव भी नहीं करना।। (4)
सही नेता यदि बन न सको तो, राष्ट्रद्रोही भी मत बनना।
न्यायपति यदि बन न सको तो, अन्याय कभी भी मत करना।। (5)
गाय सम यदि बन न सको तो, सर्प सम भी मत बनना।
फूल यदि तुम बिछा न सको तो, काँटा कभी न बिछाना।। (6)
प्रेम यदि तुम दे न सको तो, घृणा भाव भी मत रखना।
प्रशंसा किसी की कर न सको तो, निन्दा कभी भी मत करना।। (7)
अपना यदि न बना सको तो, भेदभाव भी मत करना।
ब्रह्मचर्य नहीं रख सको तो, कुशीलाचार भी मत करना।। (8)
गाना यदि न गा सको तो, गाली कभी भी मत देना।
प्रसन्न कभी न करा सको तो, दुःखी कभी भी मत करना।। (9)
मोक्ष की इच्छा यदि नहीं तो, शोभित भी मत करना।
निर्वाण की इच्छा यदि नहीं तो, निर्मम भी मत बनना।। (10)
सत्यमार्ग में न चल सको तो, असत्य मार्ग में मत जाना।
नदीपार न कर सको तो, नदी में भी मत डूबना।। (11)
सत्यासत्य का विवेक नहीं तो, विवेकी की आज्ञा पालना।
विष मारने की विद्या नहीं तो, विषहर की आज्ञा मानना।। (12)
रक्षा यदि न कर सको तो , कभी जीवों को मत मारना।

दान यदि न कर सको तो, दंभ कभी भी मत करना।। (13)
धर्म यदि न कर सको तो, आडम्बर भी मत करना।
पानी यदि वर्षा न सको तो, बवन्ड़र भी मत करना।। (14)
ज्ञान यदि न कर सको तो, ज्ञानी से भी मत चिढ़ना।
शान्त यदि न रह सको तो, शान्त को भी न सताना।। (15)
मौन यदि न रह सको तो, झूठ भी कभी मत बोलना।
उपवास भी न कर सको तो, कुखाद्य कभी भी मत खाना।। (16)
उपकार यदि कर न सको तो, अपकार भी मत करना।
पिला न सको यदि पानी तो, जहर कभी भी मत पिलाना। (17)
बोल न सको हित बोल तो, कटु बोल भी मत बोलना।
पैर न यदि दबा सको तो, गला कभी भी मत दबाना।। (18)
क्षमादान न कर सको तो, विद्वेष कभी भी मत रखना।
दान यदि न कर सको तो, शोषण कभी भी मत करना।। (19)
औषधिदान न कर सको तो, प्रदूषण भी मत फैलाना।
पर्यावरण रक्षा न करो तो, वृक्षों को भी मत काटना।। (20)

मानव की उपलब्धियों का सदुपयोग (6)

(तर्ज - वह शक्ति हमें दो...)

वह शक्ति प्राप्त कर हे मानव।
जिस शक्ति से अहं को मिटा सको।। (टेक)
अन्याय अत्याचारों से, स्वंय की रक्षा कर सको।
वह ज्योति जगालो हे मानव! जिस ज्योति से अज्ञान मिटा सको।। (1)
मिथ्या परम्परा और नकलों से, स्वयं को तुम भी बचा सको।

वह शिक्षा प्राप्त कर हे मानव! जिस शिक्षा से संस्कृति बचा सको।। (2)
असभ्य, अश्लील, फैशन से, स्वयं को तुम भी बचा सको।

वह विज्ञान प्राप्त कर हे मानव! जिससे विवेकी तुम बन सको।। (3)
प्रकृति के शोषण किये बिना, तुम प्रकृति से लाभ उठा सको।

वह धर्म प्राप्त कर हे मानव! जिससे उदार तुम बन सको।। (4)
विश्व को कुटुम्ब मानकर के, स्व पर का मंगल कर सको।

वह सत्ता प्राप्त कर हे मानव! जिससे सेवक तुम बन सको।। (5)
राष्ट्र विश्व की सेवा से, शान्ति की स्थापना कर सको।

वह वैभव प्राप्त कर हे मानव! जिससे तुम दानी बन सको।। (6)
दान से पुण्य लाभ करके, आत्म वैभव को प्राप्त करो।

वह गाना गा रे हे मानव! जिस गाना से गरिमा बढ़ा सको।। (7)
''**कनकनन्दी**'' कहे निज भारत का, फिर से गौरव भी बढ़ा सको।

वह नृत्य करो रे हे मानव! जिस नृत्य से संस्कृति बना सको।। (8)

दोहाः- कनकनन्दी के भाव हैं, मानव बने भगवान्।
मानव दानव न बने, करके स्वअपमान।।

धर्म शून्य धर्माचार (7)

(तर्ज - 1. आओ बच्चो तुम्हे दिखाएँ ... 2. धर्म से हम नही रख सके वास्ता...)

धर्म से सम्बन्ध नहीं है भाई, छल कपट आड़म्बर का।
बाह्य दिखावा करके न बनता, कोई सच्चा धर्मी महान्।।
जानो सच्चा धर्म ..... जय हो सत्य धर्म..... ।। टेक।।
धर्म न होता केवल ढोंग से, पूजा पाठ नाम जप से,

धर्म तो होता पवित्र भाव व प्राणी मात्र के दया से।
किन्तु धर्म के नाम पर किया, कुभाव व जीव संहार,
बाह्य दिखावा करके न बनता, कोई सच्चा धर्मी महान्...
जानो सच्चा धर्म।। (1)

धर्म ग्रन्थ पढ़कर भी किया, कंठस्थ व वाद विवाद
पर उपदेशी बना स्वयं भी, कभी न किया आत्म संवाद
तो भी स्वयं को ज्ञानी मानकर, अहंकार को किया विस्तार
बाह्य दिखावा करके न बनता, कोई सच्चा धर्मी महान्...
जानो सच्चा धर्म।। (2)

पर्व व्रत दान है करता, उपवास उत्सव त्यौहार
ठाठ बाट में राज पाट में, जुलुस निकाले भीड़ अपार
तथापि शान्ति समता न मन में, करता कलह क्रूर आचार
बाह्य दिखावा करके न बनता, कोई सच्चा धर्मी महान्...
जानो सच्चा धर्म।। (3)

ईश्वर प्रभु की चर्चा करता, चाह करता धन-मान की
धन से धर्म या धर्म से धन की मांग करता है भोग की
पारमार्थिक शून्य भाव से, परिभ्रमण होता संसार
बाह्य दिखावा करके न बनता, कोई सच्चा धर्मी महान्...
जानो सच्चा धर्म।। (4)

क्यों करो अभिमान रे! (8)

(तर्ज - 1. जरा सामने तो आओ छलिये... इस काया)

रे मानव क्यों करो अभिमान रे!

अनित्य वस्तु में क्यों यह दंभ रे-2 (टेक) रे मानव....

यह देह तो मांस का पिण्ड रे, इसके लिये तू करे घमण्ड रे।

जातिकुल रजवीर्य सम्बन्ध रे, घृणित वस्तु में तेरा ये दंभ रे।। -2रे मानव....

सौन्दर्य तो चमड़ी ही मात्र रे, इससे भिन्न तू चैतन्यगात्र रे।

धन से तू हो न मानो धन्य रे, तेरा धन तो शुद्ध चैतन्य रे।। -2 रे मानव....

ज्ञान का मान अग्नि समान रे, स्वपर दाहक यह कुज्ञान रे।

आयु का मान तेरा अज्ञान रे, तू तो अनन्त आवाहमान रे।। -2 रे मानव....

अक्षय अव्यय वैभव धारी रे, पूर्ण कामा तू आत्मविहारी रे।

तू तो अनन्त ज्ञान घन रे, सत्य शिव सुन्दर तेरा मान रे।। -2 रे मानव....

''**कनकनन्दी**'' तो आह्वान करे तो रे, विभाव त्यागो स्वभाव वरो रे।

शवत्व त्याग से शिवत्व वरो रे, सच्चिदानंद में रमण करो रे।। -2रे मानव....

किया न करो .... किया करो... (9)

तर्ज :- (जमुना किनारे श्याम ...)

गलत काम जिया कभी किया न करो, कटु-कटु परिणाम पाया न करों।

गलत काम से नाना पाप चले आते हैं, सुख, शान्ति जिया से सब चले जाते हैं,

स्वयं के आत्मा को दुखाया न करो ... गलत काम ... ।।

अच्छे-अच्छे काम जिया किया ही करो, मीठे-मीठे परिणाम पाया ही करो।

उत्तम काम से नाना पुण्य चले आते हैं, सुख, शान्ति जिया को सब चले जाते हैं,

स्वयं के आत्मा को स्वयं सुखी करो ... अच्छे-अच्छे ..... ।।

व्यसन सेवन कभी किया न करो, रोग दारिद्र्य को कभी पाया न करो।

व्यसन सेवन से नाना रोग चले आते हैं, निरोगता, परिवार नष्ट-भ्रष्ट होते हैं,

निज परिवार को दुःखी न करो ... व्यसन सेवन ... ।।

फैशन आड़म्बर कभी किया न करो, धन-धर्म समय नष्ट किया न करो।
इससे नाना विध कुसंस्कृति चली आती है, संस्कृति सभ्यता का नाश होता जाता है,
अपनी महानता को भ्रष्ट न करो ... फैशन आड़म्बर ... ।।
कषाय के आधीन कभी हुआ न करो, तनाव, झगड़ा, अशान्ति पाया न करो।
कषाय से नाना विध कर्म चले आते हैं, नरक तिर्यंच का दुःख दिया करते हैं,
संसार वर्द्धन जीव, तुम किया न करो ... कषाय के ... ।।

बड़ावली (उदयपुर) ता. 26-3-2011

''स्वीकार्य-अस्वीकार्य'' (10)

तर्ज :- 1.(कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं ... 2.आसरा इस जहाँ ...)

जिस वचन में सत्य व शान्ति न हो,
उस वचन को ग्रहण कभी न कीजिये।
जिस भोजन में सात्त्विक सत्त्व न हो,
उस भोजन को ग्रहण न कभी कीजिये।
जिस धर्म मे सत्य व समता नहीं,
उस धर्म को स्वीकार मत कीजिये। जिस वचन ..... ।।
जिस गुरु में आध्यात्म का भाव नहीं,
उनसे आत्मा का ज्ञान नहीं लीजिये।
जिस साहित्य से विश्व हित भी न हो,
उस साहित्य को कभी मत पढ़िये। जिस वचन ..... ।।
जिस निर्णय में न्याय का पक्ष न हो,
उस निर्णय को कानून मत मानिये।

उस राजनीति को भी मत मानिये,

जिससे प्रजा को कभी भी सुख न मिले। जिस वचन .... ।।

उसे शिष्य रूप में न स्वीकारिये, जिनमें नम्रता सत्यग्राहिता न हो।

वह बन्धु भी सच्चा बन्धु नहीं, जो विपत्ति में सहयोगी न बने।

वह पिता भी सच्चा पिता नहीं, जो सन्तान को पाप से न बचाये।

वह माता भी सच्ची माता नहीं, जो सन्तान को सत् संस्कार न दे।

वह पत्नी भी सच्ची पत्नी नहीं, जो धर्म में सहयोगी न बने।

वह भाई भी सच्चा भाई नहीं, जो नैतिकता मे सहयोग न दे।

वह बहन भी सच्ची बहन नहीं, जो सुख-दुःख में सहयोग न दे।

वह समाज भी क्या समाज है, जो विकास में न सहयोगी बने।

वह राष्ट्र भी कैसा सुराष्ट्र है, जो स्वयं की रक्षा कर न सके।

वह साहस भी क्या साहस है, जो संकट को सह न सके।

वह नीति भी क्या सुनीति है, जो सत्य की रक्षा कर न सके।

उस पुरुषार्थ को भी मत करो, जो आत्मा को शान्ति दे न सके।

''यथा बोये तथा पाये'' (11)

तर्ज :- 1.(जीते लकड़ी मरते लकड़ी ... 2. नगरी-नगरी...)

जो जस करई वो तस (वैसा) पावई, यथा बोये तथा काटे रे।

बबूल बोने से बबूल पावई, धान्य बोये धान्य पाये रे।। टेक ...

क्षमा जो करई क्षमा ही पावई, क्षमा की शक्ति अनन्त रे...

क्षमा के ग्रहीता क्षमा दाता दोनो, ये जगते भाग्यवन्त रे।। जो जस ...

जो शुभ भावई पुण्य वो पावई, पुण्य फल अभ्युदय रे... ।

अशुभ भाव से पाप जो बांधे, पाप फल दुःखदाय रे।। जो जस ...

सेवा के फल से मेवा मिले है, सेवा से बने तीर्थेश रे ...।
त्याग से निश्रेयस फल मिले है, वैराग्य फल लोकेश रे ।। जो जस ...
उपकार पाये परोपकार से, कृषि से यथा कृषक पाये रे ... ।
चन्दन घर्षणे सुगन्धी ही पाये, ''कनक'' से यथा कनकता रे ।। जो जस ...

''उपेक्षा अपेक्षा प्रतीक्षा रहित विकास'' (12)

तर्ज :- (इह विधि ठाड़ौ होय के...)

उपेक्षा अपेक्षा प्रतीक्षा बिना, होता हैं सच्चा विकास,
तीनों से युत सहयोगमय, स्वावलम्ब पुरुषार्थ ... (टेक)

किसी जीव व उपाय मात्र की, कभी न करो उपेक्षा,
द्रव्य क्षेत्र व काल सुभाव की, करो है सही समीक्षा ... (1)
परावलम्बी कभी न होना, अपेक्षा रहित है भाव,
अन्धानुकरण रहित भाव, अपेक्षा रहित भाव ... (2)
ईर्ष्या से युक्त प्रतिस्पर्द्धा, विकास के प्रतिबन्ध,
द्वन्द्व-प्रतिद्वन्द्व रहित भाव से, होता सच्चा विकास ... (3)
प्रतीक्षा न करो प्रमाद युत, शीघ्र करो शुभारम्भ,
हर कार्य होता वर्तमान में, शेष काल नहीं व्यक्त ... (4)
भूतकाल अप्राप्य है, भावी अभी से सम्भव ,
वर्तमान भाव त्रैकाल में, शेष काल अभाव ... (5)
प्रध्वंस अभाव भूतकाल है, भावी तो प्राग् अभाव'
अतएव वर्तमान में, करो है सच्चा उद्योग ... (6)
वर्तमान का भाव तुम्हारा, भविष्य का होगा भाग्य,
भाव भाग्य पुरुषार्थ से, होता है सर्व संभाव्य ... (7)

उपेक्षा अपेक्षा प्रतीक्षा रहित, करूँ मैं सत्य साधना,
''कनकनन्दी'' तो तीनों के द्वारा, करे आत्म आराधना ... (8)

''अच्छे काम करो'' (13)

तर्ज :- (हर देश में तू ...) (प्रेरणादायी कविता)....

अच्छे काम करो, अच्छे काम करो।
मानव बनकर सच्चे काम करो।। (टेक)
'नर' जन्म मिला पुण्योदय से, इस जन्म के सार्थक कार्यों से।
मानव से महामानव बनने से, स्वपर उपकारी महत् कार्यों से।। (1)
किंकर्त्तव्यविमूढ़ होने से, प्रमादयुत काल के बिताने से।
भोगों मे समय की इतिश्री से, फैशन व्यसनों में खोने से।। (2)
निंदा, चुगली में नशाया समय, मानव जन्म को नाश किया।
नर में प्रभु बनने की शक्ति है, भक्ति मे भगवत शक्ति है।। (3)
साधना से सिद्ध की युक्ति है, भावों से भाग्य की शक्ति है।
तुम ही तुम्हारे निर्माता बनों, तुम ही कर्ता व धर्ता हो।। (4)
आने पर संकट के है अन्धियार, प्रकाश बनकर तू कर संहार।
तेरे समक्ष क्या पहाड़ टिके? क्या मक्खन अग्नि से न पिघले।। (5)
क्या महान् लक्ष्य दूर रह पायेगा? न अमोघ बाण नही भेदेगा।
तुम्हारी जाति में हैं तीर्थंकर, साधक सिद्ध व हैं गणधर।। (6)
बुद्ध समाज सेवक हितंकर, ज्ञानी विज्ञानी लेखक शुभंकर।
तुम भी क्या महान् न बन पाओगे, बीज भी न वृक्ष बन पाओगे।। (7)

''गुण सर्वत्र पूज्यते'' (14)

तर्ज :- (जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ...)

गुण सर्वत्र पूज्यता पाये... बादल सम पानी बरसाये।

आड़म्बर से क्या काम हुए — गले के थन से क्या दूध पाये?
पानी से सब प्यास बुझाये — मृगमरीचिका से क्या प्यास जाये?
ज्ञानी से सदा ही ज्ञान मिले — ढ़ोंगी पाखण्डी से क्या ज्ञान मिले?
गन्ना से रस मधुर मिले — मोटा बाँस से क्या रस मिले?
अनुभवी से मार्ग तो मिले — वाचालता से क्या सत्य मिले?
बुलबुल से संगीत सुने — काला कौआ से क्या गाना सुने?
ज्ञानी ध्यानी तो ध्यान करे — बगुला भगत क्या ध्यान करे?
मयूर नाचे पंख फैलाये — मयूरी पंख कहाँ से लाये?
स्वावलम्बी तो सुख को पाये — परावलम्बी गुलाम (दुःखी) होय?
स्वयं खाने से स्व भूख मिटे — अन्य के खाने से अन्य के मिटे।
स्वकर्म फल स्वयं को मिले — जो कर्म नाशे मोक्ष वो वरें/(पाये)।
आत्मशान्ति का फल वो चखे — जो कषाय भाव को त्यागें।
अनाकुलता वह ही पावे — जो राग-द्वेष भाव को त्यागे।
राही तो मञ्जिल को पाए, — बैठा व्यक्ति कहीं न जाये।
विद्याभ्यासी ज्ञानी होय, — विद्याहीन न शोभा पावे।
सतत अभ्यास से कुशलता आये, — अनाभ्यास से जड़ता आये।
विनय सदा मोक्ष का द्वार है, — अविनय पतन का द्वार है।

सेमारी (राज.) दि. 05/04/2011 रात्रि 12.42

''सर्वोच्च'' (15)

दोहे

सत्य बराबर शक्ति नहीं, समता सम न संयम।
आत्मा बराबर प्रिटा नहीं, क्षमा समान न दान।। 1
शान्ति बराबर प्राप्य नहीं, संक्लेश सम नहीं दुःख।
नम्र बराबर मृदु नहीं, मोक्ष समान न सुख।। 2
उदार सम व्यापक नहीं, अनेकान्त सम सूत्र।
स्याद्धाद सम कथन नहीं, धर्म समान न मित्र।। 3
आत्म ज्ञान सम ज्ञान नहीं, पवित्रता सम धर्म।
आत्म साक्षी सम साक्षी नहीं, आध्यात्मिक सम गर्ग।। 4
निष्पक्षता सम न्याय नहीं, आत्म शुद्धि सम कर्म।
मोक्ष मार्ग सम मार्ग नहीं, मोह समान न भ्रम।। 5
आसक्ति सम बन्ध नहीं, संसार सम न भ्रमण।
केवलज्ञान सम मान नहीं, सर्वज्ञ सम न प्रमाण।। 6
अकषाय सम अहिंसा नहीं, प्रमाद सम न पतन।
आत्म विस्मृति सम अन्धा नहीं, स्वलीन ध्यान मनन।। 7

''सुखी बनने के लिए गुणी बनना चाहिए'' (16)

तर्ज :- (वीर महावीर का ...)

हिम्मत हो मानव तो शान्त बनना चाहिए ।
स्वयं की कमियों को दूर करना चाहिए ।।
स्वयं के कारणों से तू दुःखी हुआ सदा ।
उन कारणों को पहले दूर करना चाहिए ।।

स्व के कारणों को हटाने की हिम्मत नहीं ।
तो दूसरों के कारणों से दुःख न होना चाहिए ।।
तेरे ही द्वारा तेरा होता जा रहा पतन ।
दूसरों को दोष दे स्वयं न गिरना चाहिए ।।
गेंद मे जब छेद है तो पवन है कहाँ भरे ।
तब हवा के भरने हेतु छेद भरना चाहिए ।।
स्वयं में जब दोष हैं तो गुण कहाँ से आयेंगे ।
गुणवान् बनने हेतु दोष दूर करना चाहिए ।।
चाह न अन्धेरे की तो प्रकाश करना चाहिए ।
चाह सुख की है यदि तो गुणी बनना चाहिए ।।
''कनकनन्दी'' भाव भाये सुखी बनो हे मानव!।
सुखी होने के लिए तो गुणी होना चाहिए ।।

झाड़ोल (सराड़ा) दि. 23/05/2011 म.2.34

''नवयौवन में महान् लक्ष्य प्राप्त करो'' (17)

तर्ज :- (चमचमाती दुनियाँ में ...)

नव यौवन बसन्त ऋतु में, गुण सुमनों को खिलने दो।
प्रसिद्धि सुवास फैले, पुरुषार्थ पवन बहने दो।।
गत चंचल पत्तों को अब गिर जाने दो।
धैर्य रूपी कोपलों को विकसित होने दो।। नवयौवन ...
सफलता के फल फलने दो फल भार सी नम्रता हो।
जीवन की देहरी पर दानवता न चढ़ने दो।। नवयौवन ...
नर जन्म का सुवर्ण अवसर नवयौवन में प्रगट हुआ।

कर्त्तव्यनिष्ठा अपनी बढ़ा सेवा पुण्य बढ़ने दो।। नवयौवन ...

तन-मन की पक्वता आई, बचपन की चंचलता गई।

दिल-दिमाग में उत्साह भारी बड़े लक्ष्य बनने दो।। नवयौवन ...

''कनकनदी'' तुमको पुकारे, आओ मेरे संग भाई।

आज मेरे भाव समझो, क्रांति ज्योत जलने दो।। नवयौवन ...

''यौवन रूपी सुअवसर का सदुपयोग''

राग :- (आओ बच्चों तुम्हें ...)

बढ़ो है नवजवान क्षुद्रता में तेरा काम नहीं,

खाना-पीना मौज करना यह कोई जीवन लक्ष्य नहीं।। वन्दे क्रान्तिवीर-2

आहार निद्रा भय मैथुन, पशु-पक्षी भी हैं करते सदा,

यह ही यदि तुम करते रहोगे तो, उन पशुओं से नहीं जुदा।।- खाना-पीना(1)

लड़ाई-झगड़ा कलह विसंवाद, यदि करते रहोगे तुम,

नारकी समान तुम्हारा जीवन, उनसे महान् न बनोगे तुम।। (2)

भोग-विलास व मनोरंजन में, यदि जीवन बिताते हो,

देव-दुर्लभ नर तन पाकर, इसको व्यर्थ गँवाते हो।। (3)

खेल कौतुक आवारागर्दी में, ओजपूर्ण यौवन खोते क्यों?

मानव जीवन के महान् लक्ष्य को कदापि नहीं पाओगे तुम।। (4)

धन कमाकर फैशन व्यसनों में, यदि खपाया यौवन तो,

जैसे चिन्तामणि रत्न को कौआ, उड़ाने में (लगाया हो)/लगाते तुम।। (5)

स्व पर विश्व कल्याण हेतु, करो तुम है सदा यतन,

इससे तुम्हारा विकास होगा, इससे होगा उदार मन।। (6)

उदार मन में होता उत्साह, पुण्य बन्धता है सातिशय,

जिससे होता है महान् कार्य, इहपरलोक अभ्युदय।। (7)
पुण्यातिशय व अभ्युदय से, करो तुम हो आत्मविकास,
जिससे तुम पाओगे मोक्ष, सच्चिदानन्दमय आत्म प्रकाश।। (8)
वासुपूज्य से महावीर तक, पंच बालयति तीर्थंकर हुये,
महात्मा बुद्ध, विवेकानन्द, युवावय में विश्व को जगाये।। (9)
खुदीरामवसु भगतसिंह सुभाष (चन्द्र) भी, इसी वय में नेता हुये,
जगदीशचन्द्र आइन्स्टीन व, न्युटन वैज्ञानिक इस वय में हुये।। (10)
राणाप्रताप शिवाजी आदि, इस वय में क्रान्तिकारी हुये,
स्वशक्ति का उपयोग करके, महान् से महान् व्यक्तित्व हुये।। (11)
"**कनकनन्दी**" है तुम्हें जगाये, उठो! जागो! करो प्रयाण!
जब तक न हो लक्ष्य की प्राप्ति, तब तक करो सदा प्रयाण।। (12)

झाड़ोल (सराड़ा) दि. 26/05/2011 रात्रि 2.00

"प्रौढ़काल का सदुपयोग : आत्मकल्याण" (18)

तर्ज :- (1. दुःख से घबराओ ... 2. जीवन में कुछ ...
3. भला किसी का ... 4. बस्ती-बस्ती पर्वत...)

अनुभव के भण्ड़ार लेकर, प्रगट हुआ है प्रौढ़काल।
अनुभव से शिक्षा ले मानव, जिससे बने जीवन निहाल।। (टेक)
बाल में पढ़ा युवा में गुना, अब तू करले परिपालन,
जिससे परम लक्ष्य मिलेगा, ऐसा अब तू करले यतन ।। अनुभव... (1)
बालपने को खेल में खोया, किशोर वय में तुमने जो गाया/(पढ़ा),
युवावय में सुख-दुःख पाया, उसका अब तू कर ले मनन।। अनुभव ... (2)
अब तो समस्त झंझट त्यागो, आत्म कल्याण में सर्वथा जोड़ो,

मानव जन्म को सार्थक करो, वानप्रस्थ या यतिव्रत धरो।। अनुभव ... (3)
बेटा-बेटी के विवाह हो गये, हो गये उनके बाल गोपाल,
अब उनकी चिन्ता छोड़कर, अपना अब तो करो विचार।। अनुभव ... (4)
चिन्ता चिता है जलाये सजीव, चिन्तन से होता जीव निहाल,
पर चिन्ता तो अधम है करे, आत्म चिंतन करे प्रबुद्ध नर।। अनुभव ... (5)
शरीर का तुमने पोषण किया, कमाया तुमने धन अपार,
अब तुम आत्म पोषण करो, कमाओ धर्म धन अपार।। अनुभव ... (6)
भौतिक सम्बन्ध यहाँ। छूटेंगे, कोई न जायेंगे अपने साथ,
साथ में जायेगा आत्म संबंध, उसके लिए तुम करो यतन।। अनुभव ... (7)
पूर्व कुकृत्य स्मरण को त्यागो, करो तुम अब आत्म स्मरण,
निन्दा चुगली ईर्ष्या छोड़ो, करो अभी तुम आत्म स्मरण।। अनुभव ... (8)
प्रभुत्व कर्त्तापन अब छोड़ो, स्वप्रभुत्व में स्वयं को जोड़ो
मरणकाल में स्वयं को भजो, अन्य समस्त विकल्प तजो ।। अनुभव ... (9)
यथा मति तथा गति निदान, मरण काल में विशेष जान,
इसलिए समस्त संक्लेश त्यागो, एकाग्रचित्त से स्वंय को भजो।। अनुभव ... (10)
आगम अनुभव से यह सब गाया, स्व पर कल्याण हो यह मन भाया,
"**कनकनन्दी**" की भावना सदा, सबको मिले आत्म सम्पदा।। अनुभव ... (11)

झाड़ोल दि.27/05/2011 मध्याह्न 3.20

"मौन रहो या सत्य कहो" (19)

(बातूनी वृत्ति की निवृत्ति से मिलती है शान्ति)

बातों के लिए बातें किया न करो,
विवाद हेतु भी बातें किया न करो।

जब बोलो हित-मित-प्रिय बोलो,

अधिक से अधिक मौन धारो।

अवाक् गोचर, अवाच्य होता परम सत्य'

ज्ञान गम्य, ध्यान योग्य होता आत्मिक सत्य।। बातों के ...

बातों-बातों मे जीवन मत बिताओ,

बातों-बातों में विभाव किया न करो।

असत्य, अप्रिय, अधिक बातें न करो,

निन्दा, चुगली, कलह की बातें न करो।। बातों के ...

राग, द्वेष, हिंसाकर कथा न करो,

कथा-कथा से अकथनीय पाप न करो।

हर प्रकार की बातें किया न करो,

हर प्रकार की बातें सुना न करो।। बातों के ...

हर प्रश्न का उत्तर दिया न करो रे,

हर उत्तर को स्वीकार किया न करो रे ।

स्व-पर-विश्व हितार्थे जो बातें होती हैं,

उसे सुनो उसे बोलो अन्य छोड़ो है।। बातों के ...

सत्यधर्म, सत्यव्रत, भाषा समिति तथा,

वचन गुप्ति परिशुद्ध कहो है कथा।

अन्यथा अनेक अनर्थ की बनेगी कथा,

असत्य कथा से महाभारत कथा।। बातों के ...

ऊर्जाक्षय, तनाव, विकथा, शब्ददूषण,

असत्य कथा से होता पाप बन्धन।

अहित अमित अप्रिय असत्य कथा से,

मन चंचल होने से कार्य न होता विधि से।। बातों से ...

तीर्थंकर भी छद्मस्थ कालावधि में,
मौन से साधना करें घाति संहारे।
केवल ज्ञान होने से दिव्यध्वनि निझरि,
मौन का फल विश्वगुरुत्व मिले।। बातों के ...
स्वयं को सम्बोधो स्वयं से चर्चा भी करो।
स्वयं को प्रेरित करो स्वयं को सुधारो।।
स्वयं से वादविवाद तर्क वितर्क करो,
स्वयं के द्वारा स्वयं का उद्धार करो।
इससे बातूनी वृत्ति की होगी निवृत्ति,
जिससे मिलेगी तुम्हे परम तृप्ति।। बातों के ...
बातें छोड़ो काम करो काम स्वयं बोलता,
आदर्श जीवन स्वयं उपदेश देता।
रिक्त चना बाजे घना सूत्र बताता,
जो खोखला होता वो ज्यादा बोलता।।
''कनकनन्दी'' को प्रिय मौन रहना।
मौन से मुक्ति मिले यही भावना ।। बातों के ...

सुरखण्ड खेड़ा दि. 03/06/2011 रात्रि 11.05

''महान् बनने के लक्षण'' (20)

तर्ज :- (आत्मशक्ति से ओतप्रोत ...)
महान् लक्ष्य भाव कर्त्तव्य से, होता है जीव महान् रे।
धन, जन, मान, भोग-विलास से, न होता कोई महान् है।। (टेक)
जीव है चेतन अचेतन धन, धन से नहीं महान् रे।

धनादि त्याग से महान् होते हैं, तीर्थंकर साधूजन रे।। महान्... (1)
धनादि निमित्त होता है अन्याय, अत्याचार पापाचार है।
अन्याय अर्जित अन्याय कारक, धन से न बड़ा नर रे।। महान् ... (2)
स्वार्थ से प्रेरित स्वार्थ के कारक, जन से न बड़ा नर रे।
भेड़चाल व भेड़ियाचाल सम, होते हैं स्वार्थान्ध नर रे।। महान्... (3)
मान मद्य सम नीच कर्म करे, अष्टधा मद के रूप रे।
जाति कुल रूप, ज्ञान, तप, बल, आदि मान के स्वरूप रे।। महान्... (4)
मद्य से भी महामद उत्पादक, पापाचार के जनक रे।
ऐसा मद को करे जो मानव, न होता श्रेष्ठ जनक रे।। महान्... (5)
भोग-विलास में रत जो मानव, वह है इन्द्रियदास रे।
दास कभी भी प्रभु न होता, यह है त्रिकाल सत्य रे।। महान्... (6)
महान् लक्ष्य भाव कर्त्तव्य से, जीवन होता पावन है।
पावन जन ही महान् होते हैं, अन्य हैं अधम जन रे।। महान्... (7)
पावन को जो नवधा माने हैं, वे भी न बनते पावन हैं।
अधम को जो नवधा माने हैं, वे भी बनते अधम हैं।। महान्... (8)

सेमारी दि. 07/06/2011 रात्रि 4.30

''निन्दा-प्रंशसा से अप्रभावी होता है सुखी' (21)
(आदर्श बनने के सूत्र)

राग :- (इक परदेशी मेरा दिल ले गया ...)

सुखी/(महान्/आदर्श) बनने के कुछ उपाय करो,
(आदर्श बनने के कुछ सूत्र अपनाओ)
सुगुण वृद्धि के द्वारा प्रयास करो...

अहंकार दीन-हीन भाव भी तजो, प्रशंसा-निन्दा से स्वगुण विकास करो'
प्रशंसनीय गुणों को बढ़ाते चलो, निन्दनीय कुगुणों को घटाते चलो...(टेक)
प्रशंसा-निन्दा से स्वगुण घटाओ नहीं, प्रशंसा से अहंकार बढ़ाओ नहीं,
निन्दा से भी विचलित होना नहीं, सुगुण त्यागकर कुगुण स्वीकारो नहीं'
ईर्ष्यालु सुगुणी की भी निन्दा करता, चापलूस स्वार्थवश प्रशंसा करता...(1)
समता भाव रख सुगुण बढ़ाओ, निन्दा प्रशंसा से अप्रभावी बन जाओ,
सुगुण रक्षार्थे सनम्र सत्यग्राही बनो, दृढ़ संकल्पी धैयशील साहसी बनो,
सतत प्रयत्नशील उदार बनो, प्रगतिशील गुणग्राही विवेकी बनो..... (2)
निन्दा से बचने का उपाय करो रे, निन्दनीय कुकृत्यों को सर्वदा तजो रे,
निन्दा से विचलित हुआ न करो रे, निन्दा से सुगुणों को त्यागा न करो रे,
आकाश के सम निर्लिप्त व्यापक बनो, निन्दा-प्रशंसा से परे जिया करो...(3)
प्रशंसा हेतु आड़म्बर किया न करो रे, नींव के बिना महल खड़ा न करो रे,
निन्दा से डरकर सुगुण न त्यागो रे, उल्लू हेतु सूर्य को तम न मानो रे,
निन्दा-प्रशंसा दोनों कर्म सापेक्ष होते, कर्म रहित गुणों को पाया ही करो... (4)
सूर्य सम स्व गुणों से प्रकाशी बनो रे, उल्लू सम निन्दकों से डरा न करो रे,
दीपक सम पूजकों से मोह न करो रे, तटस्थ भाव से प्रकाश फैलाया करो रे,
''कनकनन्दी'' सदा साम्य के पुजारी, सुखेच्छुक भी बने साम्य पुजारी... (5)

टोकर दि. 16/06/2011 मध्याह्न 3.28

''भारतीय बने सु-भावधारी'' (22)

तर्ज :- (हे परम कृपालु...)

(भारतीयों की 28 कमियों को दूर करने के उपाय)

त्यागो भारतीय <u>रुढ़िवादिता</u>, <u>सत्य-तथ्य</u> को स्वीकार करो ।

संकीर्णता का भाव त्यागकर, उदारता का भाव धरो ।। (टेक)
अन्धानुकरण की वृत्ति त्यागकर, परीक्षा प्रधानी तुम बनो ।
अकल बिना नकल को छोड़ो, गुण ग्राहकता भाव धरो ।। (1)
ढोंग-पाखण्ड की वृत्ति छोड़कर, सरल-सहज ही चर्या करो ।
फैशन-व्यसनों से दूर-रहकर, सादा जीवन उच्च भाव धरो ।। (2)
रटन्त पढ़ाई की डिग्री छोड़कर, शोध-बोधात्मक कार्य करो ।
अन्धा विदेशी कानून त्यागकर, सत्य-समता का न्याय करो ।। (3)
गुलामी भाषा का मोह छोड़कर, मातृभाषा का भी ज्ञान करो ।
पाश्चात्य की अपसंस्कृति त्यागकर, भारतीय संस्कृति हिये धरो ।। (4)
अश्लील अस्वास्थ्यकर वेश त्यागकर, शालीन स्वास्थ्यप्रद वेश धरो ।
हिंसाकारक रोग जनक खाद्य छोड़कर, स्वास्थ्यप्रद शाकाहार करो।। (5)
परावलम्बी प्रमाद दूरकर, अप्रमादी स्वावलम्बी बनो ।
निन्दा चुगली गप्पे छोड़कर, हितमित प्रिय वचन बोलो ।। (6)
अश्लील हुल्लड़ गाना छोड़कर, शिक्षाप्रद (अच्छा) गाना गाओ ।
वित्तरागता का भाव छोड़कर, वीतरागता भाव धरो ।। (7)
कट्टरता का पंथ छोड़कर, साम्य भाव का पथ धरो ।
एकान्त का आग्रह छोड़कर, अनेकान्त का भाव धरो।। (8)
बाह्यतप का ढोंग छोड़कर, इच्छा व ईर्ष्या का भाव तजो ।
तन से धर्म का पालन छोड़कर, नव कोटी से धर्म करो ।। (9)
प्रदर्शन का भाव त्यागकर, आत्मदर्शन का भाव धरो ।
माला फेरना क्रिया त्यागकर, मन परिवर्तन (मनमंजन) की क्रिया करो ।। (10)
गन्दगी फैलाना वृत्ति छोड़कर, सर्वत्र स्वच्छता का कार्य करो ।
राष्ट्रीय सम्पत्ति को नष्ट न करो, अनुशासन से कार्य करो ।। (11)

भेद-भाव का भाव त्यागकर, प्रेम एकता भाव धरो ।
कार्य संस्कृति पालन करके, भ्रष्टाचार का त्याग करो ।। (12)
आगम-अनुभव दोनों मिलाकर, यह भाव कविता रची गई ।
'कनकनन्दी' तो भाव पुजारी, भारतीय बने सुभावधारी ।। (13)

केजड़ दि. 01/06/2011 रात्रि 2.21

''पञ्च स्थावरों के महान् योगदान'' (23)

(पञ्च एकेन्द्रिय जीवों के त्रस जीवों के प्रति उपकार)

(क्षुद्र जीवों का बड़े जीवों के प्रति उपकार)

राग :- (1. धरती बाँटी अम्बर बाँटा... 2. जीवन में कुछ करना है तो ...)

जीवन यात्रा है प्रारम्भ हुई, पञ्चएकेन्द्रिय स्थान से,
समस्त विश्व व्याप्त इन से, सूक्ष्म-बादर भेद से। (1)

पृथ्वी वनस्पति जल वायु अग्नि पञ्च हैं भेद स्थावर,
पृथ्वी में निवास करते हैं, त्रस बादर चारों स्थावर।। (2)

पृथ्वी में उगते वनस्पति जीव जिनमें लगे फल फूल हैं,
जिसे खाकर जीवित रहते पृथ्वी (धरती) के त्रस सकल हैं। (3)

उससे बनते औषधि, फर्नीचर, मेवा, तेल, गृह, वस्त्र,
पर्यावरण की सुरक्षा कर्त्ती, प्राणवायु दात्री छाया स्थल।। (4)

जल है जीवन (त्रस-स्थावरों) पशु-पक्षी व स्थलचर नभचर,
वनस्पति व मानव जाति या कीट पतंग नक्तंचर/(रात्रिचर)। (5)

पानी पीकर जीवित रहते वनस्पति त्रस जीव हैं,
खाना बनाना स्नान करना खेती उद्योगे उपकार है।। (6)

वायु बिना जीव जीवित न होते प्राणवायु है उपकारी,

श्वास क्रिया हेतु त्रस स्थावरों के प्राणवायु है सहकारी। (7)

अग्नि पाक कर भोजन बनाकर मानव करते हैं आहार,

औषधि बनाकर रोग भगाकर बनते स्वस्थ तन मन धार।। (8)

दाह संस्कार होता है अग्नि से कल कारखाना उद्योग चले,

यज्ञ होम आरती अग्नि से होते है अग्नि से शीत नशे। (9)

पंच स्थावर है भले क्षुद्रजीव, बड़े जीवों के उपकारी,

इनके बिना कीट से मानव न जीते ऐसे वे हैं उपकारी।। (10)

मानव भी स्वयं को समृद्ध बनाता, पञ्चस्थावरों के बल से,

श्वाँस क्रिया व प्यास बुझाना भूख भी दूर करे इनसे ।। (11)

वस्त्र मकान गृहोपकरण औषधि भी बनती इनसे,

यान वाहन यंत्र कारखाना साहित्य भी बनते इनसे। (12)

इसीलिए हे मानव तुम कृतज्ञ बन जाओ इनके,

इन्हे तुच्छमान नहीं सताओ कृतघ्न बनके इनके ।। (13)

इनके शोषण हनन से आज, विभिन्न है प्रदूषण भारी,

जिसके कारण ग्लोबल वार्मिंग, विषम वृष्टि होती भारी।। (14)

ओजोन परत में छेद भी होते, हिम भी पिघले अति भारी,

विभिन्न रोग प्रकोप होते, प्राकृतिक विप्लव भारी। (15)

तुम्हें जीना हो तो इन्हे जीने दो, जो पाना है सो भी दो,

सुख पाना है तो सुख ही दो, दुःख कभी न किसी को दो।। (16)

हे मानव अभी अहंभाव छोड़ो, करो है शुभ समताचार,

'कनकनन्दी' सदा भावना भाये, विश्व में होवे साम्याचार। (17)

झाड़ोल (स.) दि. 25/05!2011 मध्याह्न 2.52

''कार्य सम्पादन तथा विकास के सूत्र'' (24)

(मैनेजमेन्ट एवं सफलता के सूत्र)

राग :- (यमुना किनारे श्याम ...)

विकास के सूत्र तुम सुनो भारत!
जिसे तुम्हारा विकास होगा विशेष/(श्रेष्ठ)
समय, कार्य योजना, विचार श्रेष्ठ
कर्त्तव्यनिष्ठा, स्वावलम्बन, श्रेष्ठ उद्यम/(उद्देश्य)
सहयोगी, उपकरण, दूरदर्शन,
त्रूटियों से शिक्षा प्राप्त, दोष शोधन ... (टेक/सूत्र)...
समय पे हरकार्य करो सम्पन्न, समय का दुरुपयोग प्रथम विघ्न,
समय एक व्यतीत हो अप्रयोजन, करोड़ों धन से प्राप्त न होता निदान,
शल्य चिकित्सक, धावक, सर्पदंशक/(मृत्यु आगत),
बन्ध मोक्ष/(कर्मास्त्रव) से जानो काल महत्व ... (1)
योजना बना के कार्य करो प्रारम्भ, बिना योजना से कार्य होता विनाश,
बीज बोने के पहिले करो भूमी कर्षण, अंकुर उत्पत्ति बाद न करो भूमि कर्षण,
प्यास के पहले कुँआ का करो निर्माण, गृह जलन के पहले करो जल सिंचन... (2)
श्रेष्ठ विचार से श्रेष्ठ कार्य होता सम्पन्न, श्रेष्ठ विचार से होता भाग्य निर्माण,
पवित्र उदार अनुभव सत्य विचार, अनकूल धैर्यपूर्ण हित विचार,
व्यवहारी कार्यकारी दृढ़ विचार, सफलता प्राप्ति का प्रमुख गुर ... (3)
कर्त्तव्यशीलता से तन्मयता उत्पन्न होती, जिससे प्रेरक शक्ति उत्पन्न होती,
स्वावलम्बन से अपेक्षा नहीं रहती, प्रतीक्षा की आवश्यकता नहीं रहती,
उद्यमशीलता से कार्यपूर्ति शीघ्र होती, उक्तं च पुरुषार्थ सिंहमुपैति लक्ष्मी... (4)
सहयोग से एकता की समृद्धि होती, जिससे संगठित शक्ति वृद्धि हो जाती,

उपकरण है उपकारी कार्य के लिए, उपादान निमित्त का संयोग हुए,
दूरदृष्टि से विघ्न भी कम ही आते, शीघ्र समाधान हुए दूरदृष्टि से ... (5)
गलती से शिक्षा ले जो उसे दूर करता, धीरे-धीरे दोष भी दूर हो जाता,
पुण्य कर्म संस्कार भी सहयोग करते, प्रेरणा उत्साह आदर्श मार्ग दर्शाते,
सर्वकारकों के सम्यक् सहयोग होने से, हर कार्य सम्पादन होता शीघ्र से ... (6)
उपरोक्त समन्वय भारत मे नहीं होता है,
जिससे विकास कार्य नही होता है,
भ्रष्टाचार से कार्य करते हर क्षेत्र में,
कुफल का जहर पीते हर क्षेत्र में,
सच्चाई अच्छाई से विकास करो भारत,
'कनकनन्दी' का सदाशय माने भारत ... (7)

सेमारी (राज.) दि. 05/06/2011 रात्रि 11.15

''मेरे साध्य-साधना-भावना-पीड़ा(कृपा)'' (25)

तर्ज :- (1. स्याद्वाद के इस झरने... 2. पावन है इस देश...
3.नरेन्द्र छंद-अनादि काल से जग मे स्वामिन्...)

मेरा लक्ष्य है स्वयं की प्राप्ति, सत्य-साम्यमय साधना - 2
कल्याणमय हो हर जीव सदा, ऐसी शुभ मेरी भावना - 2 (टेक)
पीड़ा होती है कृपापरक, पापियों की वृत्ति से - 2
भावना होती है सभी पापी भी, पावन बने स्ववृत्ति से - 2
अनन्त काल से मैंने जीया, पापमय दीर्घ जीवन - 2
सत्य समता शान्ति विपरीत, अनात्ममय मम जीवन ।। ... (1)
शरीर सम्पत्ति सत्ता यश को, अपना मानकर सर्वस्व - 2

रागद्वेष मोह काम परक, वर्ताव किया मैं अजस्र - 2
विपरीत वृत्ति से विपरीत करूँ, लक्ष्य की होगी साधना - 2
आमजन से विपरीत काम, तथापि सत्य की साधना - 2 ।। ... (2)
मेरी भावना है हर जीव भी, जीये सुखमय जीवन - 2
स्वयं का करे वो सर्वोदय, अन्य के सहयोगी जीवन - 2
उदार सहिष्णु सत्य समता का, सर्व जीव करे पालन -2
इसके बल पर हर जीव भी, करे आत्म उत्थान - 2 ।। (3)
पीड़ा होती है इससे विपरीत, होता है जब वर्तन - 2
इसको दूर करने हेतु, करता हूँ शुभ चिन्तन - 2
लेखन प्रवचन मार्गदर्शन भी, करता हूँ इसके हेतु - 2
यदि न कोई माने न मुझे, डूब जाता समता सिन्धु - 2 ।। ...(4)
इस हेतु रहता हूँ मौन, निष्पृह समता भाव में - 2
एकान्तवास आड़म्बर रहित, ख्याति पूजा भीड़-भाड़ से - 2
''कनकनन्दी'' आचार्यत्व पना, मेरा न अन्तिम लक्ष्य है - 2
सच्चिदानन्दमय मेरा स्वरूप, हर जीव का शुद्ध रूप है - 2 ।। (5)

सेमारी दि. 21/09/2011 मध्याह्न 3.04

''मानव के महान् होने पर''!? (26)

तर्ज :- (रिमझिम बरसता सावन होगा...)

जब ये मानव महान् होगा, आध्यात्मिकमय जीवन होगा।
मानव जाति का ज्ञान भी होगा, गौरव आश्चर्य दुःख भी होगा।। (टेक)
गौरव होगा महामानव प्रति, महान् लक्ष्य व कर्त्तव्य प्रति।
उच्च आदर्श व पवित्र वृत्ति, सत्य समता व त्याग प्रवृत्ति।। ... (1)

आश्चर्य व दुःख उसे भी होगा, जब दुष्टों का ज्ञान करेगा।
विवश होकर वह सोचेगा, दुर्जन वृत्ति को वह खोजेगा।। ... (2)

दुर्जनों की दुष्ट विचित्र वृत्ति, मच्छर जोंक व सर्प की कृति (दृष्टि)।
दुर्जन मच्छरों का होता स्वभाव, सज्जनों को भी डंक लगाये।।.. (3)

जोंक के समान होता स्वभाव, दुर्गुण ग्रहण का होता है भाव।
दूध को विष सम बनाये सर्प, सज्जनों को भी नाशे दुष्ट।। ... (4)

दुष्टों की होती दुष्ट प्रवृत्ति, धर्म कर्म राजनीति प्रभृति।
मन वच काय तन की वृत्ति, सदा ही होती है राक्षस प्रवृत्ति।। ...(5)

धर्म में भी करता है पापाचार, भेद-भावयुक्त भ्रष्टाचार।
युद्ध महायुद्ध आतंकवाद, ईर्ष्या-द्वेषपूर्ण क्रूर आचार।। ... (6)

बलिप्रथा व मिथ्या आचार, मांस भक्षण सुरापान।
धन जन मान का आडम्बर, प्रलोभन भय व कामाचार।। ... (7)

इत्यादि अनर्थ करता धर्म में, तथाहि राजनीति आदि कार्य में।
मानव जब है महान् बनता, तब ही यह सब अनर्थ लगता।। ... (8)

क्षुद्रता में जब मानव होता, क्षुद्र कार्य ही महान् लगता।
अन्धकारमय जब भी होगा, द्रव्य आदि का दर्शन होगा।। ... (9)

यथा अन्धकार दूर हो जाता, प्रकाश में द्रव्य दर्शन होता।
तथा आत्मिक प्रकाश होता, सत्य असत्य का ज्ञान भी होता।। ... (10)

''कनकनन्दी'' सदा भावना भाये, आध्यात्मिकमय सब हो जाये।
समतामय सब जीवन जीयें, कर्मों को नाशे मोक्ष को पायें।। ... (11)

सेमारी दि. 23/09/2011 रात्रि 2.36

''माँ सरस्वती स्तुति'' (27)

जयतु जयतु माँ सरस्वती .... जयतु ज्ञानदायिनी माँ
जयतु जयतु माँ जिनवाणी .... जयतु दिव्यवाणी माँ
जयतु जयतु माँ श्रुतदेवी .... जयतु हंसवाहिनी माँ
जयतु जयतु माँ भारती .... जयतु वीणावादिनी माँ
जयतु जयतु माँ वागीश्वरी .... जयतु बहुभाषिणी माँ
जयतु जयतु माँ दिव्यध्वनि .... जयतु सर्वज्ञनन्दिनी माँ
जयतु जयतु माँ जगन्माता .... जयतु सर्वभाषिणी माँ
जयतु जयतु माँ कुमारी .... जयतु सत्यभाषिणी माँ
जयतु जयतु माँ ब्रह्माणी .... जयतु ब्रह्मचारिणी माँ
जयतु जयतु माँ शारदा .... जयतु पुस्तकधारिणी माँ
जयतु जयतु माँ द्वादशांगी .... जयतु ॐ काररूपिणी माँ
जयतु जयतु माँ दिव्यगी .... जयतु शुभ्रवसनी माँ
जयतु गणधरादि सेविता, जयतु (माँ) अनादिप्रवाहिता
जयतु शतेन्द्र देव पूजिता, जयतु ऋषि मुनि भी सेविता
जयतु अनेकान्त की माता, जयतु स्याद्वाद प्रवाहिता
जयतु विश्वकल्याणी माता, जयतु सर्वज्ञ कथिता
जयतु 'कनकनन्दी' सेविता, 'कनकनन्दी' की तुम ही माता
'कनकनन्दी' का प्रणाम तुम्हें, जग का उद्धार करो हे! माता

सेमारी, दि= 21/9/2011, रात्रि 1.45

भारत है मातृभूमि आर्यजाति की (28)

तर्ज :- (1. दे दी हमें आजादी... 2. रात कली इक...)

भारत है मातृभूमि आर्य जाति की, आदि काल से जन्मी है आर्य सन्तति।
संस्कृति भी यहाँ जन्मी आर्य जाति की, भोग भूमि से जन्मी आर्य सन्तति।। ... (टेक)
वे थे अति सुन्दर कलावान् व बलिष्ट,
उनके वंश में जन्में कुलकर विशिष्ट।
वे थे महामनस्वी व शोधकर्त्ता,
मनुरूप में प्रसिद्ध हुए वे गरिष्ठा।। जय-2 आर्य संस्कृति... (1)
अरबों-खरबों वर्ष पूर्व वे मनु हुए,
उनके आधुनिक अभी के मानव हुए।
हमारे ही पूर्वज हुए शलाका पुरुष/(महान्)
तीर्थंकर चक्रवर्ती राम कृष्ण बुद्ध।। जय... (2)
पूर्वज हमारे नहीं थे हैं वानर,
असभ्य गुफावासी जंगली बर्बर।
आधुनिक विज्ञानी से भी थे वे महान्,
उन्हें था भौतिक व आत्मिक ज्ञान।। जय... (3)
भाषा संस्कृति व गणित विज्ञान,
कला शिल्प संगीत कानून ज्ञान।
अणु सिद्धान्त व सापेक्ष ज्ञान,
पर्यावरण सुरक्षा आध्यात्म ज्ञान।। जय... (4)
विश्वविद्या विशारद सर्वज्ञ हुए,
भौतिक नियमों से पार भी हुए।
इसी से विश्वगुरु भारत भी हुआ,

ज्ञान से विश्व का भरण पोषण किया।। जय... (5)

जब से भारत स्वयं की गरिमा भूला,

दीन-हीन पतित व गुलाम भी हुआ।

जड़ से रहित (जो) वृक्ष जो भी होता,

फल, फूलों से रहित वो होता।। जय... (6)

अब भी भारत वासी तुम संभल जाओ, सुप्त गौरवों को पुनः जगाओ।

''कन्नकन्नन्दी'' का भी आह्वान तुम सुनो, आत्मिक शक्ति को भी अब जागृत करो... (7)

सेमारी- 27/9/2011, मध्याह्न- 2.23

तन-मन के स्वास्थ्य कारक पैदल भ्रमण (29)

(अहिंसा पालन एवं पर्यावरण-सुरक्षा हेतु भी)

(मेरा दीर्घ अनुभव-धर्म-आयुर्वेद एवं आधुनिक वैज्ञानिक अनुसन्धान के आधार पर...)

राग :- (1. यमुना किनारे श्याम जाया न करो... 2. छुप छुप खड़े हो...)

सुबह शाम पैदल भ्रमण करो... तन मन को स्वस्थ्य किया भी करो

विभिन्न रोगों को भगाया करो... स्मरण-शक्ति के बढ़ाया करो

टेन्शन फ्री हुआ भी करो... फ्रेश फील एक्टिव रहा भी करो... स्थायी...

प्रदूषणों से रहित वन उपवनों में... नंगे पैर शीघ्रता से सीधा-तन चलो रे

पाँच-छह कि.मी. हर रोज चलो हे! ... प्राणवायु पर्याप्त नाक द्धारा पाओ हे!

कोमल सूरज की रश्मि से नहाओ... प्रकृति से विटामिन डी भी पाओ... (1)

पैंतीस प्रकार की सुगन्धी होती है... वन-उपवनों में प्राणवायु होती है

प्राकृतिक संगीत-सुन्दरता होती है... विहंगमों की मीठी ध्वनि भी होती है

भौतिक मूल्य बिना यह प्राप्त होती है... संगीत-सुन्दरता स्वयं ही मिलती है... (2)
इसी से पॉजिटिव इफेक्ट्स होते हैं... बॉडी व माइण्ड एक्टिव होते हैं
जिससे हैल्थ भी डेवलपमेन्ट होते हैं... सुगर कैंसर दूर भी होते हैं
हृदय रोग व कब्ज दूर हो जाते हैं... माइकोकॉण्ड्रिया संख्या में बढ़ जाते हैं... (3)
इसी से मानसिक बीमारी दूर होती... मेमोरी पॉवर क्रम से वृद्धि होती
बॉडी भी कूल होती हड्डी भी दृढ़ होती... तन की गन्दगी दूर भी होती जी
तन-मन में चुस्ती-स्फूर्ति भी आती... दिन में स्फूर्ति रात को नींद आती... (4)
पाचन तन्त्र भी स्वस्थ रहता... वात पित्त कफ भी सम रहता
शारीरिक अकड़न दूर भी होता... बुढ़ापा भी शरीर में शीघ्र न आता
साइड इफेक्ट भी नहीं होता... प्राकृतिक चिकित्सा है पैदल-यात्रा... (5)
जुखाम शिरदर्द दूर भी होता... प्रकृति-पर्यावरण का ज्ञान भी होता
प्रकृति से आत्मीयता का भान होता... इसी से विभिन्न अनुभव होता
वैद्य-वैज्ञानिक शोध जो करते... विश्व हित हेतु काम भी करते... (6)
इसी के कारण साधु पैदल भी चलें... स्वयं को स्वस्थ रखें अहिंसा पालें
चरैवेति चरैवेति श्रमण जो चलें... प्रदूषणों से रहित कर्त्तव्य पालें
इसी नियम को जो पालन करे... जीवन सुखमय उसका चले... (7)
'कनकनन्दी' भी इन व्रतों को पाले... बाल्यकाल से नित्य भ्रमण करे
अनुभव आगम व शोध ज्ञान से... यह सब लिखा गया हित भाव से
अहिंसा पालन स्वास्थ्य रक्षा यत्न/(प्रयत्न/हेतु/निमित्त)
मानव सतत करे सच्चा प्रयत्न... (8)

सेमारी, दि= 29/9/2011, रात्रि 4.04 तथा दि= 30/9/2011, प्रातः 8.15

सबको सदा सुख-शान्ति प्राप्त करने का सच्चा एवं मिथ्या उपाय

राग :- (1. सबसों ऊँची प्रेम सदाई... 2. अरे मन पापन सों नित डरिये...)

सबको सदा शान्ति सुखदाई...

चक्रवर्ती भी चक्रीत्व त्यागे भिक्षुक मांगन जाई

त्याग से चक्री आत्मिक सुख चाहे भिक्षुक क्षुधा मिटाई ...

भिक्षुक क्षुधा मिटाई ... (टेक) ...

दानदाता दान से सुख पाये ... पात्र प्राप्त कर पाई

लक्ष्य अनुसार सुखरुप बदलें ... सत्य या भ्रम/(मिथ्या) रूप होई

सबको सदा ... (1)

अमूर्तिक तो आकाश सत्य होता ... नीलारंग भ्रम/(मिथ्या) होई

पानी रूप सत्यरूप होता ... मृगमरीचिका मिथ्या/(मिथ्या) होई

सबको सदा ... (2)

सुख हेतु कोई विवाह रचाये ... कोई परित्यक्त/(तलाक) होई

कोई तो बाल ब्रह्मचारी रहे ... कोई सर्व त्यागी होई

सबको सदा ... (3)

सुख हेतु कोई व्यसनों को त्यागें ... कोई व्यसनों के भोगी/(सेई)

सुख हेतु कोई पापों को त्यागे ... कोई पापों के भोगी/(सेई)

सबको सदा ... (4)

सुख हेतु कोई जीवन चाहत है ... कोई सुख हेतु मरई

सुख हेतु कोई औषधि पीवे (हैं) ... कोई विष को सेई

सबको सदा ... (5)

सुख ही जीव का प्रमुख स्वभाव ... जिसे जीव नित चाही

यथा शीतल-गरम हो पानी ... पीवे प्यास बुझाई

सबको सदा ... (6)

तथाहि जीव प्रत्येक कार्य भी ... सुख ही निमित्त करेई

सुज्ञान सहित सुकार्य करे है ... कुकार्य कुज्ञाने होई

सबको सदा शान्ति सुखदाई ... (7)

सुकार्य का फल सुख तो मिले हैं ... कुकार्य हैं दुःखदाई

अतः सुखार्थे सुकार्य करो है ... कुकार्य को परिहरई/(कुकार्य कबहुँ न करई)

सबको सदा ... (8)

भेद-विज्ञान या आत्मिक ज्ञान ही ... सत्य-तथ्य दरसाई

मोह राग द्वेष काम क्रोध वश ... ज्ञान विपरीत होई

सबको सदा ... (9)

अतः सुख का शुभारम्भ ही ... मोहादि त्याग से होई

'कनकनन्दी' भी भावना भाये ... सर्वजीव सुख होई

सबको सदा ... (10)

सेमारी, दि.30/09/2011, रात्रि 2.01

परिच्छेद - 2

विकृति (विभिन्न विकृतियों को दूर करने का उपाय)

न सीखी मायाचारी (1)

(मैं क्यों भोला बनता जा रहा हूँ)

तर्ज :- (1. मधुवन के मंदिरों में... 2. सब कुछ सीखा हमने...)

सब कुछ सीखा हमने, न सीखी मायाचारी।
सच है दुनियाँ वालों, कि हम है अनाड़ी।। (टेक)
अनादिकाल से हर जीव ने ,सीखी मायाचारी।
क्रोध मान लोभ काम से, बना है पापाचारी।।
इसके कारण हर जीव ने, सहा अनन्त दुःखभारी।
नरक निगोद तिर्यंच योनि में, भोगा संक्लेश भारी।। सब ... (1)
अभी तो मानव जन्म मिला हैं, देवदुर्लभ दुःखहारी।
अभी न करूँ मायाचारी, दुष्प्रवृत्ति दुःखकारी।।
जो भी बना है मायाचारी, दुष्प्रवृत्ति पापकारी।
वह कुफल अवश्य भोगे, निर्धन या सत्ताधारी।। सब ... (2)
रावण कंस व दुर्योधन, और भी कोई नामधारी।
पाप का फल अवश्य भोगे, कोई न रक्षणकारी।।
कभी न किसी को ठगो, ठगा जाता स्वयं द्वारा।
दूसरों को ठगने भाव से, ठग जाये स्वभाव द्वारा।। सब .. (3)
कर्मबंध होता अनन्त, दुःख दे अनेकों जन्म में।
इक बबूल बीज जन्म से, करोड़ों बीज वृक्ष में।।

सुनो हे दुनियाँ वालों!, मैंने सीखी न मायाचारी।
''कनकनन्दी'' के सर्वस्व स्वयं में हैं दुनियॉ सारी।। सब ... (4)

झाड़ोल (सराडा) दि.20/05/2011, मध्याह्न 2.41

दुनियाँ वालों की दोगली कहानी (2)

तर्ज :- (सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालो...)

देखो देखो ऐ दुनियाँ वालों, दुनियाँ वालो की दोगली कहानी।
जिसे नकारे, उसे भी करे, कथनी-करनी में हैं बेईमानी।। ... (टेक/धत्ता)
तम्बाखू न खाओ डॉक्टर कहें, स्वयं भी खाएँ ऐसे वे ज्ञानी ..2
समाचार में निषेध छापे, छपाए विज्ञापन ऐसे वे ज्ञानी ..2
जिसे नकारे ... देखो देखो ... (1)
संसद बनाये न्याय संविधान, स्वयं ही तोड़े वे कानून ... 2
स्वजाति भक्षी सम मानव, स्वभक्षी बना महादानव ...2
जिसे नकारे ... देखो देखो ... (2)
स्वयं कराये मद्य निषेध, स्वयं भी पिये बेचे भी मद्य... 2
पशु क्रूरता करें निषेध, वधशाला में लाखों के वध ... 2
जिसे नकारे ... देखो देखो ... (3)
अहिंसा धर्म प्रधान कहे हैं, कषाय भाव से स्वयं को हने ...2
प्रत्येक जीव में आत्मा माने, तथापि उनसे घृणा भी करें ... 2
जिसे नकारे ... देखो देखो ... (4)
हर जीव को माने प्रभु का अंश, उनको मारे उनको खाये ... 2
प्रभु के नाम से बलि चढ़ायें, प्रभु संतोष हेतु उन्हें सताये ...2
जिसे नकारे ... देखो देखो ... (5)

साक्षर बनकर राक्षस बने, नेता बनकर शोषण करें ... 2
नौकर होकर शाही बने, प्रजा-राजा को नौकर मानें ...2
जिसे नकारे .. देखो देखो ... (6)
मानव से हारे बगुला-भगत, धूर्त-सियार, कौआ-चालाक ...2
क्रूर हिप्पो सर्प व सिंह, मच्छर बिच्छू लोमडी व जोंक ... 2
जिसे नकारे ... देखो देखो ...(7)
मुँह में राम बगल में छुरी, वचन मनोहर हृदय कटारी ...2
बाह्य विदुर तो अन्तःशकुनी, अति विचित्र मानव की कहानी ...2
जिसे नकारे ... देखो देखो ... (8)
विश्व युद्ध लड़ा मानव ने, मानव नाशे प्रकृति व जीव ...2
सर्वभक्षी स्वभक्षी है मानव, नर सम नहीं नारकी राक्षस ...2
जिसे नकारे ... देखो देखो ... (9)
तथापि इस जाति में जन्में, तीर्थेश ऋषि मुनि जीव सेवक ... 2
सत्यप्रेमी व जीव रक्षक, वे ही हमारे पथ प्रदर्शक ...2
जिसे नकारे ... देखो देखो...(10)

लोभी की आत्मकथा (3)

तर्ज :- (सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालों...)

सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालों, मेरी ही है निज कहानी।
धन निमित्ते मैं क्या करुँ, मै क्या सोचूँ सच्ची कहानी।। सुनो-सुनो ...।।धत्ता।।
सबसे प्यारा पैसा हमारा, जीवन जीने का लक्ष्य है सारा।
पढ़ाई करूँ नौकरी करूँ, इसके लिए ही सब कुछ वारा।। सुनो-सुनो ...(1)
मन्दिर जाऊँ पूजा रचाऊँ, भगवन् से इसको ही माँगू।

व्यापार कर शोषण करूँ, पैसा हेतु ठगी भी करूँ।। सुनो-सुनो ...(2)
भ्रष्टाचार व आतंकवाद, जमाखोरी व वाद विवाद।
लोकतन्त्र समाजवाद, तानाशाही व राष्ट्रीयवाद।। सुनो-सुनो ...(3)
उपनिवेश व समुद्रयात्रा, कला कृषि व विदेशयात्रा।
जूआँ भी खेलूँ युद्ध भी करूँ, लूटपाट व चोरी भी करूँ।। सुनो-सुनो ...(4)
न्याय अन्याय सब कुछ करूँ, यथा तथा भी जो कार्य करूँ।
धन निमित्ते धर्म करूँ मैं, परमार्थ भी अर्थ से करूँ।। सुनो-सुनो ...(5)
व्रत उपवास नियम भी पालूँ, भाषण लेखन सेवा करूँ मैं।
दान पुण्य व त्याग करूँ मैं, पंचकल्याणक विधान करूँ मैं।। सुनो-सुनो ...(6)
मुझे न चाह स्वर्ग और मोक्ष, मैं चाहूँ सदा अर्थ ही अर्थ।
पैसा ही मेरा परमेश्वर है, अर्थ से मिले सर्व संसार।। सुनो-सुनो ...(7)
धन ही मेरा ध्यान व ध्येय, सर्व कार्य के प्रमुख ध्येय।
इसे मैं पूजूँ इसे ही भजूँ, मम सर्वस्व इसे ही मानूँ।। सुनो-सुनो ...(8)
दोहा :- सर्व गुणा कांचनमाश्रयन्त, मेरा है यह सिद्धान्त।
अर्थ अनर्थ का कारण है, मानूँ न मैं इसे नितान्त।।

शिक्षा की गाथा-व्यथा-वृथा-आत्मा (4)

तर्ज :- (1.मेरे मन के अंध तमस्... 2. है यही समय की पुकार...)
सुनो हो बच्चों! सुनो सुनो हो बच्चों -2
मैं गाता हूँ शिक्षा की गाथा, मैं गाता हूँ शिक्षा की व्यथा।
मैं गाता हूँ शिक्षा की वृथा, मैं गाता हूँ शिक्षा की आत्मा।। सुनो ...
अक्षर कला अंक विज्ञान केवल रटना नहीं है शिक्षा,
अक्षर कला अंक विज्ञान केवल उत्तीर्ण नहीं है शिक्षा।

अक्षर कला अंक विज्ञान केवल लिखना नहीं है शिक्षा,
अक्षर कला अंक विज्ञान केवल पढ़ाना नहीं है शिक्षा।। सुनो ...
धार्मिक ग्रंथ पूजा-पाठ भी केवल रटना नहीं हैं शिक्षा,
धार्मिक ग्रंथ पूजा-पाठ भी केवल उत्तीर्ण नहीं हैं शिक्षा।
धार्मिक ग्रंथ पूजा-पाठ भी केवल लिखना नहीं हैं शिक्षा,
धार्मिक ग्रंथ पूजा-पाठ भी केवल पढ़ाना नहीं हैं शिक्षा।। सुनो ...
इनकी उपयोगिता में सुशिक्षा की रहती हैं आत्मा,
सुशिक्षा के प्रचार में शिक्षा की है बोलती गाथा।
शिक्षा के अनुपयोग में शिक्षा की चलती व्यथा,
शिक्षा के दुरुपयोग से समस्त शिक्षा होती वृथा।। सुनो ...
संस्कार संस्कृति सदाचार है सभी शिक्षा की होती आत्मा,
इनके बिना सभी शिक्षा है देह की स्थिति बिना आत्मा।। सुनो ...
इनके बिना रावण कंस स्वपर नाशक साक्षर राक्षस,
इनसे युक्त तीर्थेश बुद्ध प्रहलाद कबीर पवित्र अन्तस।। सुनो ...
तुम भी बच्चों पढ़ो भी गुनो आचरण करो सदा सदाचार,
तुम भी बच्चों पढ़ो भी गुनो कभी न करो भ्रष्टाचार,
तुम भी बच्चों पढ़ो भी गुनो कभी न करो मिथ्याचार,
तुम भी बच्चों पढ़ो भी गुनो सदा ही करो शिष्टाचार।। सुनो ...
तुम भी बनो सभ्य शिक्षित, तुम भी बनो देश रक्षक,
तुम भी बनो सभ्य शिक्षित, तुम भी बनो धर्मरक्षक,
तुम भी बनो सभ्य शिक्षित, तुम भी बनो आत्मरक्षक,
तुम भी बनो सभ्य शिक्षित, 'कनकनन्दी' के प्रिय बालक।। सुनो...

पाप के विश्वरूप(फल तथा सुख प्राप्ति के उपाय)(5)

तर्ज :- (1.रघुपति राघव राजाराम.. 2. हे गुरुवर...)

पाप रे तेरे अनेक रूप, विचित्रमय अनन्त रूप।
भावद्रव्य से दो स्वरूप, मन वच काय त्रय रूप।
कषाय मय चतुःस्वरूप, क्रोध मान माया लोभ रूप।
अव्रत रुप पञ्च स्वरूप, हिंसा चौर्यादि संग्रह रूप।
व्यसन रुप मे सप्त स्वरूप, मद्यमांसादि सेवन रूप।
मद रुप में अष्ट स्वरूप, सत्ता सम्पत्ति आदि स्वरूप।
नव कोटि से नवधा रूप, मन वच काय संयोग रूप।
दशधर्म के विलोम रूप, अक्षमा आदि दशधा रूप।
अष्टोत्तर है शत संयुक्त, कषाय योग संरम्भ युक्त।
संख्य असंख्य अनन्त रूप, बाह्म अन्तरंग कर्म रूप।
बाह्म रुप मे संख्यात रूप, अव्रत व्यसन आदि रूप।
संक्लेश रूप कषाय भाव, असंख्य लोक प्रमाण भाव।
कर्माणु भेदे अनन्त रूप, ज्ञानावरणादि अष्ट स्वरूप।
चौरासी लाख योनि स्वरूप, पाप के फल विविध रूप।
जन्म-मरण योग वियोग, रोग संक्लेश पाप के भोग।
पापानुरूपे दुःख की प्राप्ति, पाप विनाशे सुख की प्राप्ति।
कर्म विमुक्तिसुख की प्राप्ति, सच्चिदानन्द स्वरूप प्राप्ति।

हे मानव! तू न बन अपावन (6)

तर्ज :- (मेरा जूता है जापानी...)

धरती का भगवान्, क्यों बना हैवान

सर्वभक्षी, मांसाहारी, स्वभक्षी नराधम... (टेक)
समुद्र पृथ्वी और गगन, सब के ऊपर तेरा शासन... 2
पशु पक्षी कीट पतंग तरुगण, सब के निवास में तेरा भवन... 2 ।।धरती।। (1)
सब प्रदूषणों के तुम निर्माता, सब व्यसनों के तुम भोक्ता... 2
सब पापों के तुम हो कर्त्ता, प्रकृति के विनाश कर्त्ता... 2 ।।धरती।। (2)
तुम्हारी तृषाग्नि अति ही दाहक, समस्त वस्तु का होता पाचक... 2
जड़ चेतन या भौतिक साधन, भस्मासुर सम करते दहन... 2 ।।धरती।। (3)
तेरे अत्याचार से प्रकृति क्षोभित, ग्लोबल वार्मिंग से लेती प्रतिशोध... 2
बाढ़ दुष्काल व भूकम्प सुनामी, तेरी ही दुष्कृति बनी है जननी... 2 ।।धरती।। (4)
मनु के अनुगामी बनो हे मानव, दानवता छोड़ बनो सुमानव... 2
असुरत्व छोड़ जगाओ दिव्यत्व, दिव्यत्व से पाओ तुम अमरत्व... 2 ।।धरती।। (5)

''विचित्र जीव की अजीब कहानी'' (7)

तर्ज :- (सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों...)

सुनो हो बच्चों! सुनो सुनो बच्चों! विचित्र जीव की अजीब कहानी।
स्वयं को माने सबसे ऊँचा, काम करे हैं सबसे नीचा... ।।
स्वयं को मानता है श्रेष्ठ जानवर, खाता है नीच मृत जानवर।
पूँछ रहित माने श्रेष्ठ वानर, वानर से भी है क्रूर आचरण।। सुनो सुनो...
प्राणी जगत् का मुखिया माने, सबको मारे सबको खाये।
प्रकृति का माने स्वामी व रक्षक, उसका नाशक महाराक्षस।। सुनो सुनो...
ज्ञान-विज्ञान करे आविष्कार, स्व-पर नाशक भस्मासुर।
भाषा प्रयोगे वाचस्पति सम, कटुवाणी प्रयोगे सव्यसाची सम।। सुनो सुनो...
पशु को माने स्वयं से नीच, उसकी करणी से पशु संकोच।

स्वयं को माने बड़ा मालिक, तिर्यंचों के बिन है नालायक।। सुनो सुनो...
आदर्शों की करता चर्चा, अनादर्शों की करता चर्या।
राम की तो करते पूजन, रावण के सम करें आचरण।। सुनो सुनो...
बाहर में तो हँस समान, भाव-काम में बगुला समान।
मानव उपकारे दानव समान, उसका वर्णन यह सब जान।। सुनो सुनो...
इसी मानव में जन्म लेते हैं, तीर्थंकर बुद्ध ज्ञानी महान्।
तुम भी बच्चों निर्णय कर लो, बनोगे क्या तुम नीच या महान्।। सुनो सुनो...
तुम्हारा लक्ष्य, भाव, काम से, निर्माण होता है भावी जीवन।
''कनकनन्दी'' का भाव सदा है, तुम भी बन जाओ सच्चे महान्।। सुनो सुनो...
स्वयं को माने अधिक धार्मिक, करता है सब अधर्म कृत्य।
धर्म के नाम पे करता है पाप, हिंसा संकीर्णता भेद व भाव।। सुनो सुनो...

महापुरूषों से मानव जाति महान् अन्यथा दानव (8)

तर्ज :- (जय हनुमान ज्ञान...)

जय जय महापुरूष हो महान्, तुम्हीं ही हो सर्व गुणों की खान।
उदारता है तुम्हारी पहचान, नम्रता तुम्हारी जग में शान।।
सत्यनिष्ठा है तुम्हारा प्राण, गुणग्राहकता तुम्हारा मान।
अपना पराया नहीं तुम्हारा, वसुधैव है कुटुम्ब तुम्हारा।।
मन वच काय से सरल तुम्हीं हो, कूट-कपट से रहित तुम्हीं हो।
क्षमा में तुम्ही तो धरती समान, मृदुता में नवनीत समान।।
शुचिता में पंकज सम तुम हो, दुर्जन के मध्य में निर्लिप्त तुम हो।
संयम रूपी कवच के धारी, सर्व पापों से तुम अविकारी।।
तप त्याग में वृक्ष समान, कष्ट सहन और फल प्रदान।

आकिंचन्य में नभ समान, निर्लिप्त भाव से सबसे महान्।।
तुम से जन्में ज्ञान-विज्ञान, भाषा संस्कृति संस्कार महान्।
कला व साहित्य संगीत शिक्षा, तुमने पढ़ायी जीवों की रक्षा।।
सब ज्ञानों में महाविज्ञान, तुमसे जन्मा आध्यात्म ज्ञान।
तुम ही जग के सच्चे हितकर, तुम बिना ये जग है तमकर।।
बाहर में तुम मानव शरीरा, अन्तर में तुम दिव्य शरीरा।
तव मार्ग में जो मानव चले, सो ही सच्चा नर भूतले।।
अन्यथा सब है मानव दानव, शरीर मानव क्रिया में दानव।

अनावश्यकता से जीव पाप करे अधिक (9)
(अनर्थदण्ड (अनुत्पादक कार्य) के दुष्परिणाम)

तर्ज :- (1. अच्छा सिला दिया तूने... 2. छोटी छोटी गैया...)

राग द्वेष मद मोह प्रमाद युत, जो भाव होता सो भाव अनर्थ।
आर्त्त रौद्र अशुभ परिणाम से युत, संकल्प विकल्प सो महाअनर्थ ।।टेक।।
अनावश्यक से जीव पाप करे सतत, मन वच काय कृत कारित अनुमत।
अनर्थदण्ड इसे कहे आगम, बहुविध पापकर्म कृत निमित्त ।। (1)
इस कारण से तन्दुल मत्स्य है पापी, महामत्स्य सम गया सप्तम नरक।
इस भाव से जो होते व्यर्थ काम, लाभ तो कुछ नहीं पाप महान् ।। (2)
पानी गिराना तथा भूमि खोदना, अग्नि जलाना या व्यर्थ बोलना।
आलस प्रमाद युत काल काटना, यद्धातद्धा रूप से कार्य करना ।। (3)
दूसरों की निन्दा अपमान प्रवृत्ति, महत् अनर्थदण्ड पाप प्रवृत्ति।
वृथा साधन समय शक्ति धन व्यय, बुद्धि का दुरुपयोग तथा अपव्यय ।। (4)
इनसे होता है पापबन्ध प्रबल, आध्यात्मिक शक्ति भी होती दुर्बल।

विविध अनर्थ काम भी होते, बहुविध जीवों के घात भी होते ।। (5)
श्रीपाल को कुष्ठ रोग जो हुआ, पूर्व भव में मुनि को कोढ़ी कहा।
सात सौ मित्रों को हुआ जो कुष्ठ, अनुमोदना के फल से अनिष्ट ।। (6)
मुनिसंघ की निन्दा फल से, साठ हजार व्यक्ति अग्नि से जले।
निन्दा का जिसने परिहार किया था, वह कुटिया सह जिन्दा बचा था ।। (7)
आरम्भ उद्योग आत्मरक्षा निमित्ते, हिंसा होती वह अल्पमात्रा प्रमाण।
संकल्प हिंसा का कटुफल प्रचुर, कृषक व धीवर मध्ये अन्तर ।। (8)
शेर नारी और नर की गति (स्थिति), पंचम षष्ट सप्तम नरक स्थिति।
अतएव खोटा भाव व्यवहार त्यज, 'कनकनन्दी' का है यह भाव ।। (9)

सब न होते महान् या दुर्जन (10)

तर्ज :- (1. दुःख से घबराओ... (श्रीपाल चरित्र) 2. आत्मशक्ति से ओतप्रोत विद्या और ज्ञान से भर दो...)

सत्य शिव सुन्दर है सभी में, सबकी अपनी शान रे। सबकी...
अन्यथा सब हैं शव के समान, शव न शोभनहार रे।। शव... (टेक)
आलिशान महलों में रहने वाले, सब न होते महान् रे-2
पर्णकुटी में रहने वाले, सब न होते नादान रे-2 ।। (1) सत्य...
पुस्तक व ग्रंथ पढ़ने वाले, सब न होते सुज्ञानी रे-2
अंगूठा छाप लगाने वाले, सब न होते कुज्ञानी रे-2 ।। (2) सत्य...
महानगर में रहने वाले, सभी न होते सुसभ्य रे-2
ग्राम पल्ली में रहने वाले, सभी न होते असभ्य रे-2 ।। (3) सत्य...
धार्मिक-क्रिया करने वाले, सभी न होते सुधर्मी रे-2
बाह्य-क्रिया न करने वाले, सभी न होते अधर्मी रे-2 ।। (4) सत्य...

सत्ता-सम्पत्ति सहित वाले, सभी न होते सुखी रे-2
सत्ता-सम्पत्ति रहित वाले, सभी न होते दुःखी रे-2 ।। (5) सत्य...
शरीर से श्रम करने वाले, सभी न होते हीन रे-2
शरीर श्रम न करने वाले, होते क्या? सब श्रीमान् रे-2 ।। (6) सत्य...
दूसरों से सेवा कराने वाले, सभी न होते महान् रे-2
दूसरों की सेवा करने वाले, वे नहीं होते दास रे-2 ।। (7) सत्य...
प्रसिद्धि पूजा सहित वाले, सभी न होते सुगुणी रे-2
प्रसिद्धि पूजा रहित वाले, होते सभी न दुर्गुणी रे-2 ।। (8) सत्य...
परोपदेश करने वाले, सभी न होते पवित्र रे-2
उपदेश न करने वाले, सभी न होते पतित रे-2 ।। (9) सत्य...
सुन्दर देह सहित वाले, होते सभी क्या? सुमन रे-2
सुन्दर देह रहित वाले, होते सभी क्या? कुमन रे-2 ।। (10) सत्य...
दोहाः- ''कनकनन्दी'' ने अनुभव से, जो पाया सो कहा-2
विश्वकल्याण के निमित्त से, लिपि निबद्ध है किया-2 ।। (11)

दूर से सुन्दर लगे (दूर से ढोल सुहावने) (11)

तर्ज :- (1. अच्छा सिला दिया तूने... 2. छोटी छोटी गैया...)

दूर से सुन्दर लगे जंगल समन्दर, दूर से ही मनोहर है महानगर
अनुभव होता है वहाँ जाने से, अनुभव होता हैं किम्पाक खाने से SS
(टेक/स्थायी)
जादूविद्या दूर से भयावह लगती, प्रसिद्धि भी दूर से सुहानी लगती
युद्ध कथा सुनने में मनोहर लगती, आध्यात्मिक चर्चा नीरस ही लगती ... (1)

दूसरों की निन्दा अति मीठी लगती, स्व-सुधार कथा कटु नीम/(विष) लगती
बातें लड़ाने में सूरवीर होते हैं, स्व-कर्त्तव्य करने में हतभाग्य होते हैं ... (2)
बड़े बड़े लोग तो भेड़िया सम होते हैं, दूसरों के शोषण से बड़े जो होते हैं
छोटे छोटे लोग न खोटे ही होते हैं, छोटे छोटे बच्चें क्या दुष्ट ही होते हैं ?... (3)
जंगल तो दूर से सुन्दर लगते हैं, क्रूर पशु-पक्षी कीट पतंग भरे हैं
समन्दर में लवणाक्त पानी ही होता हैं, भूकम्प सुनामी हिंस्र प्राणी भरा हैं ... (4)
महानगरी की महामहिमा न्यारी हैं, जंगल समन्दर सम दूर से प्यारी हैं
भीड़ रहे लाखों की समाज से खाली है, भौतिक साधन युत शान्ति से खाली हैं ... (5)
हर प्रदूषण की जननी है नगरी, साक्षर तो होते है संस्कृति से खाली
शरीर श्रम विहीन तनाव से भरी, धन-जन से भरी संस्कार से कोरी ... (6)
क्रिकेट का नशा भारत मे भारी है, टी.वी. में क्रिकेट देखे जनता सारी है
धर्म कर्म पढ़ाई भी छोड़ती जनता, खाना पीना सोना छोड़ती है जनता ... (7)
इससे धन स्वास्थ्य पढ़ाई की हानि है, राग-द्वेष होने से धर्म की हानि है
गेंद के उछाल को देखती है जनता, गेंद ने गुलाम बनाया अरबों जनता ... (8)
मेला महोत्सव में भीड़ होती है अपार, दूर से देखने में लगती है मनोहर,
भीड़ मे ही होते है अनेक अपराध, दुर्घटना रोग से मरे लोग अपार ... (9)
सत्ता-सम्पत्ति की मोह माया है भारी, मृगमरीचिका सम दूर से मनोहारी..
इसके पीछे भागने वाले दुखियारी, मिले या न मिलें दोनो में दुःखभारी... (10)
कनकनन्दी ने जो पढ़ा सुना गुना है,
जनता के हित हेतु यहाँ लिखा है।
नशेड़ी को नशा तो सदा भाता हैं,
कभी वही जाने जो नशे से दूर हैं।। ... (11)

दुनियाँ की विचित्रता (12)

तर्ज :- (दुनियाँ में रहना है तो काम करो प्यारे...)

दुनियाँ में रहते हुए साम्य रहो प्यारे,
शान्त रहो आगे बढ़ो काम करो प्यारे।
नही तो इस दुनियाँ में शान्ति न मिलेगी,
खाना पीना सोना मे अशान्ति देगी।। टेंक ।।
गिरगिट आक्टोपस के सम है दुनियाँ,
क्षण क्षण बदलने में सक्षम है दुनियाँ।
चित पट दोनों को माने ये दुनियाँ,
मरने जीने दोनों ही न देती ये दुनियाँ।। ... (1)
मच्छर सम गुन गुनाये (पैर पड़े) रोग भी देती है,
जिन्दा में कष्ट देती मरने पे रोती हैं।
विपत्ति में अपमान, सम्पत्ति में ईर्ष्या भी,
थन से दूध पीये जोंक सम दुनियाँ भी।। ... (2)
तीर्थेश बुद्ध ईसा को मारे भी पूजे भी,
अपनी ही सन्तान को गर्भ में मारे भी।
राम की पूजा करे रावण सम क्रिया भी,
'कनकनन्दी' निस्पृह रहे ऐसी दुनियाँ भी।। ... (3)

भ्रष्टाचार की महिमा(13)

(व्यंगात्मक कविता रूपक अलंकार युक्त)

तर्ज :- (यदि भला किसी का ...)

धिक् हो भ्रष्टाचार भस्मासुर, तेरा आतंक अपरम्पार।

लोभ तेरा है राक्षस पिता, तृष्णा तेरी राक्षसी माता।।
बहिन तेरी सम्पत्ति आशा, पत्नी तेरी है सत्ता लालसा।
सन्तान तेरी शोषण वृत्ति, मायाचारी है दास व दासी।।
तेरा आतंक सर्वत्र व्याप्त, शिक्षा व्यापार कानूने व्याप्त।
राजनीति व उद्योग जगत्, सिनेमा संचार विभागे व्याप्त।।
नौकरशाह से चपरासी तक, तेरा आतंक से सब ग्रसित।
तुझे ही पूजे तुझे ही भजे, तेरे आतंक से संत्रस्त।।
इण्डिया तेरा प्रिय पूजा स्थल, पूजक भजक यहाँ प्रचुर।
तू रक्त बीज तू भस्मासुर, रावण सम बहुरूप धर।।
तेरी महिमा सब कोई गाये, तेरी माया से मोहित हुए।
तेरी कृपा की महिमा भारी, रंक से कुबेर भक्त है तेरे ।।
तेरी महिमा रूप दूसरा, भस्म भी होता भक्त सहित।
तू मीठा जहर सम राक्षस,सेवन मीठा अन्त सहित।।

पाप के विभिन्न रूप समझा करो (14)

तर्ज :- (यमुना किनारे ...)

पाप के विभिन्न रुप समझा करो, एक को छोड़कर अन्य न करों।
एक को छोड़कर अन्य किया जब, पाप का बन्धन भी हुआ तब।।
एक छेद बन्द कर अन्य किया है, जहाज मे पानी भी तब आया है।
कोई हिंसा छोड़कर क्रोध करे है, पाप का बन्धन हुआ करे है।।
कोई चोरी छोड़कर लोभ करे है, लोभ के कारण नरक वरे है।
कोई कुशील त्यागकर चुगली करे है, चुगली से भी पाप बन्ध करे है। पाप...
पंचपाप से कर्म बन्ध होता है, वह कर्म कषायों से बन्ध होता है।

बाह्य पंच पाप त्यागी जो होता है, कषायों से वही पापी होता है।।
आत्म हनन रुप से पाप फल सम है, उसके अनुरुप से कर्म बन्ध सम है।। पाप ...
कोई धर्म क्रिया काण्ड रूढ़ि से करे, परिणाम शुद्धि बिना पाप भी करे।
परिणाम ऊपर ही पुण्य पाप निर्भर, परिणाम ऊपर ही बन्ध मोक्ष निर्भर।।
परिणाम शुद्धि हेतु क्रियाकाण्ड करो हे, तप, त्याग, ज्ञान, ध्यान, दान सेवा करो हे।।
बाह्य व्रत तप, ज्ञान, अग्नि पानीसम हैं, अतंरंग परिणाम तंदुलों के सम है।
भात रूप परिणाम इनसे होता है, चाँवल के बिना क्या भात होता है?
उपादान कारण तो अन्तरंग होता है, प्रमुख ही कार्य रूप परिणत होता है।।
बाह्य धर्म कर्म करे बहु जनरे, अन्तरंग शुद्धता में अधिकांश रे।
शुद्धता के बिना वे सुफल चाहे हैं, चाँवल के बिना वे भात चाहे हैं।।
''कनकनन्दी'' उन्हे दया से बतायें, पवित्र भाव को हृदय में धारो रे।।

अपने आत्मा की हत्या किया न करो (15)

तर्ज :- (अच्छा सिला दिया...)

अपने आत्मा की हत्या किया न करो,
रागद्वेष मोह से जिया न करो।
रागद्वेष मोह से आत्म हत्या होती हैं,
अन्य की हत्या हो या न भी होती हो।
तंदुलमत्स्य धीवर चोर डाकू कषायी,
दूसरों की हत्या बिना होते निर्दयी।।(टेंक)
आत्मपरिणाम हिंसन से हिंसा है,
कषाय युक्त होने से परिणाम खोटा है।
खोटा छोटा परिणाम निश्चय से हिंसा है,

जिसके परिणाम से कर्म बन्धे खोटा है।
इसी कर्म से नरक-निगोद में वास है,
अनेक कष्ट सहन करे प्रतिश्वास है। (1) अपने...
हिंसा परिणाम से तनाव होता है,
तनाव से विभिन्न रोग भी होते है।
रोगों से तन मन धन हानि होती हैं,
धन हानि मान हानि अपमृत्यु होती है।
भाव हिंसा ही यथार्थ आत्महत्या होती है,
केवल देह हत्या तो द्रव्यहिंसा होती है। (2) अपने...
भाव हिंसा सहित द्रव्य हिंसा पाप कार्य है,
भावहिंसा सर्वथा त्याग अनिवार्य है।
आनुसंगिक रूप से जो द्रव्यहिंसा होती है,
वो आरंभी, उद्योगी, विरोधी हिंसा होती है।
भावहिंसा से संकल्पी हिंसा ही होती है,
द्रव्यहिंसा बिना महाहिंसा ही होती है। (3) अपने ...
गृहस्थाश्रमी संकल्पी हिंसा त्यागी होता है,
संकल्पी हिंसा त्याग से अल्प हिंसा होती है।
यतीव्रती तो सम्पूर्ण हिंसा त्यागी होते हैं,
आरंभी उद्योगी विरोधी हिंसा से रिक्त हैं।
यत्नाचार पूर्वक जो हिंसा होती है,
पापबंध रहित सो द्रव्यहिंसा होती है। (4)
दोहा :- 'कनकनन्दी' की भावना, बने अहिंसक विश्व।
धर्मनीति कानून का, यही सत्य सर्वस्व।।

सेमारी दि.10/04/2011 रात्रि 11.32

भ. महावीर यदि भारत में होते अभी समस्यायें होती भारी (16)

(भारतीय अव्यवस्था एवं विकृति पर एक व्यंगात्मक रचना)

तर्ज :- (1. मन तड़पत हरिदर्शन ... 2. मेरा मन दर्पण ...)

होते महावीर यदि भारत में, अनेक समस्यायें होती उत्पन्न।
आत्मलक्ष्यहीन इण्डियन मेन, सन्मति को न देते सन्मान।। (टेंक)
वर्द्धमान यदि वर्तमान होते, उन्हें माना जाता पिछड़ा जन।
फैशन व डिग्रीधारी बिना, माना जाता नही सुपरमैन।।
राजतंत्र अभी नहीं होने से, नही होते वे राजकुमार। (1) होते ...
सवर्ण होने से नहीं हो पाते, सरकार के एक वे नौकर।
रत्नवर्षा से वैभव होने से, अपहरण भी होता संभव।।
जगंली राज्य के हेतु से भी, पुनः प्राप्त भी नहीं संभव।। (2) होते ...
दीक्षादि समये कार्य आयोजने, बोली के लिये होती समस्या।
आय अव्यय के हिसाब हेतु भी, समाज मे होती समस्या।।
मौनधर कर साधना रत से, लच्छेदार भाषण का अभाव।। (3) होते...
जिससे न होती प्रसिद्धि व्यवस्था, भीड़ के बिना कहाँ है संभव,
एकान्तवादी उन्हें मानते, द्रव्यलिंगी व ढोंगाचारी।
भौतिकवादी उन्हे बोलते, पलायनवादी मिथ्याचारी।। (4) होते ...
समस्या सहित जंगल रहित, यदि वे होते समाधिरत।
इसे आत्महत्या मानता कानून, ऑर्डर देता कि करो एरेस्ट।।
इसलिये हे महावीर आप ,चतुर्थ काल में हो गये मुक्त।। (5) होते ...
यथार्थ से आप सन्मति निकले, कनकनन्दी अतः तुम्हारा भक्त।

वर्तमान को वर्धमान नही, अभी चाहिये तेरा राज पाट।।
इसलिये तुम वैभव त्यागकर, निज आत्मा ले हो गये मुक्त।। (6) होते ...
सेमारी दि.27/04/2011 रात्रि 12.44

''बड़ी तृष्णाओं का अन्तिम फल असफलता''(17)

तर्ज :- (यमुना किनारे ...)

बड़ी-बड़ी तृष्णायें पाला न करो, विफलता का फल खाया न करो। /
(कटुक फल तुम खाया न करो)।।
तृष्णा तृषा कभी शान्त होती ही नहीं, भौतिकता सिन्धु को पीओ भी सही।
समुद्र का पानी जब पिया जाता हैं, तृषा की वृद्धि अति होती जाती हैं।। तृष्णा ...
तृष्णा रूपी गड्ढा का राज ही यही हैं, जितना भरो उतना होता है खाली।
जितना खाली करोगे भरेगा सही, सम्पूर्ण खाली से पूर्ण भरेगा सही।
इसी रहस्य को जाने आध्यात्मज्ञानी, इसी से परम सुखी आत्मिक ज्ञानी।। बड़ी...
तृष्णा अग्नि शान्त नहीं तृष्णा पूर्ति से, अग्नि न शान्त होती घृत पूर्ति से।
तृष्णा की अग्नि उसे जला देती है, ज्यों इसमें घृत डाला जाता है।।
मृग मरीचिका से प्यास बिना बुझाये, मृग की मृत्यु होती जो पीछे जाये।। बड़ी...
सीता की तृष्णा से मरा राजा रावण, राज्य की तृष्णा से मरे कौरव गण।
कृष्णवध की तृष्णा से मरा है कंस, प्रतिहिंसा से भी मरा जरासंघ।
सिकन्दर मरा राज्य प्राप्ति तृष्णा से, हिटलर मरा विश्वयुद्ध तृष्णा से।। बड़ी...
जो तृष्णा का दास बना हुआ है नाश, जो तृष्णा को दास बना, बना संतोष।
संतोषी सदा सुखी होता है, तृष्णा का दास सदा दुःखी होता है।
तीर्थंकर बुद्ध साधु सन्यासी जन, तृष्णा त्याग से बने आनन्दघन।। बड़ी...
तृष्णा से अतृप्ति उत्पन्न सदा होती, असंतोष वृत्ति भी उससे होती।

इससे है दाहकता उत्पन्न होती, जिससे भौतिक प्यास उद्दीप्त होती।।
इसकी शान्ति हेतु होती अनीति, जिससे जीव की दुर्गति होती।। बड़ी...
आत्मिक तृप्ति से होती तृष्णा शान्ति, जिससे जीव को मिले आत्मिक शान्ति।
आत्मिक शान्ति से होती सर्व निवृत्ति, अन्याय-अत्याचार शोषण वृत्ति।
''कनकनन्दी'' चाहे आत्मिक शान्ति, प्रत्येक जीव को मिले आत्मिक शान्ति।। बड़ी...

विपरीत ज्ञान से विपरीत मान्यता (18)

तर्ज :- (म्हारी माँ जिनवाणी...)

हे विपरीत ज्ञानी! विपरीत मान्यता तेरी ऽऽ...
सत्य को असत्य, असत्य को सत्य, माने है कुबुद्धि तेरी... 2
अमूल्य को मूल्य, मूल्य को अमूल्य, बहुमूल्य को माने कोरी... 2
हे विपरीत ज्ञानी! ... (टेक)

मृगमरीचिका सम असत्य में भी, मान्यता तुमरी भारी... 2
कस्तूरी मृग सम स्वनाभि कस्तूरी, बाहर ढूंढ़ता कोरी...2... हे विपरीत... (1)
सोना चाँदी व मणि माणिक्य को, बहुमूल्य मान्यता तेरी... 2
मिट्टी वायु व पानी के बिना, क्या काम आवे तेरे... 2 ... हे विपरीत... (2)
सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि बुद्धि को, बहुमूल्य मान्यता तेरी... 2
सदाचार व शान्ति के बिना, ये क्या काम आवे तेरी... 2 ... हे विपरीत... (3)
पढ़ाई डिग्री व नौकरी धन में, महत भाव है तेरा... 2
संस्कार विवेक स्वास्थ्य कुटुम्ब बिना, इसका महत्त्व है कोरा...2...हे विपरीत...(4)
धन जन तन अभिमान में, स्वरूप भाव है तेरा... 2
आत्मश्रद्धान आत्मज्ञान बिन, इनका महत्त्व है कोरा... 2 ... हे विपरीत... (5)
धार्मिक पंथ ग्रन्थ पर्व में, आग्रह भाव है तेरा... 2

शुचिता समता सत्यनिष्ठा बिन, महत्त्व शून्य है सारा... 2 ... हे विपरीत... (6)
भोग-उपभोग वैभव को तू , सुख है मानता सारा... 2
ज्ञानानन्द आत्म वैभव समक्ष, तुच्छ है ये सुख सारा... 2 ... हे विपरीत... (7)
संसार वर्द्धक धन जन को तू , मानता सबसे प्यारा... 2
आत्म संवर्धक गुरु ज्ञान तो, अनावश्यक सदा तेरा... 2 ... हे विपरीत... (8)
प्रतिकूल त्यागो अनुकूल चलो, पाओगे सत्य व शान्ति... 2
'कनकनन्दी' तो भावना भाये, होवे है विश्व में शान्ति... 2 ... हे विपरीत... (9)

मानव की विचित्र वधशालायें बन्द हों! (19)

तर्ज :- (चाँदी की दीवार न तोड़ी ...)

मानव ने वधशाला बनाया, भाव व धार्मिक क्षेत्रों में।
उद्योग व्यापार संसद न्यायालये, विवाह महोत्सव खेल में।। (1)
भाव में कषाय प्रगट होने से, वह बन जाता है कषायी।
भाव-कषायी बनकर वह तो, बनता बहुविध कषायी।। (2)
भेद-भाव करे धर्म क्षेत्र में, अपना-पराया द्वेष भी।
आतंकवाद से पशुबलि तक, करता बहुविध पाप भी।। (3)
गृह में गृहयुद्ध करता बहुविध, भ्रूणहत्या आत्महत्या भी।
उद्योग जगत् प्रदूषण द्वारा, जल वायु मृदा हत्या भी।। (4)
शब्द प्रदूषण रेडिएशन द्वारा, बहुविधि मारे जीव भी।
बूचड़खाना में निर्दोष पशु की, हत्या करोड़ों संख्या की।। (5)
श्रमिक के शोषण द्वारा भी, हत्यारा उद्योगपति भी।
व्यापार क्षेत्रे मिलावट शोषण, जमाखोरी दगाबाज भी।। (6)
नकली वस्तु विक्रय द्वारा, कर चोरी, वस्तु चोरी भी।

संसद द्वारा विधि बनाकर, प्रजा की करते हत्या भी।। (7)
शोषण प्रताड़न भेद-भाव द्वारा, युद्ध कलह विखण्डन भी।
न्यायालय तो अन्यायालय है, अन्धा कानून द्वारा भी।। (8)
अर्थ लोभ से करे भेदभाव, हत्या करे न्याय लोक की।
बाल व अयोग्य विवाह द्वारा, धन धर्म की हत्या भी।। (9)
पर्व महोत्सवे आडम्बर द्वारा, धन जन समय की हत्या रे।
आतिशबाजी फैशन व्यसने, पर्यावरण की हत्या रे।। (10)
प्रतिस्पर्द्धात्मक खेल के द्वारा, विविध करे अपव्यय रे।
धन जन श्रम समय बर्बादी, सर्व व्यसनों के अड्डे रे।। (11)
सट्टा शेयर हिंसा ईर्ष्या, प्रतिद्वन्द्व खेल के नाम रे।
सम्भ्रान्त वर्ग के मनोरंजन में, ग्लेडिएटर मरे लाखों रे।। (12)
पशु के साथ क्रूरता बहुविध, सर्कस, सिनेमा खेल में।
सिनेमा में हत्या होती संस्कृति, बहुविध पापाचार रे।। (13)
दानव प्रवृत्ति को मानव त्यागो, त्याग रे हिंसा की प्रवृत्ति।
'कनकनन्दी' की भावना यह है, मानव की बने शुद्ध वृत्ति।। (14)

"खोटे छोटे लक्ष्यधारी अनुदारी" (20)

तर्ज :- (ऊँचे ऊँचे शिखरो वाला है...)

खोटे-छोटे लक्ष्यधारी हैं, ये अनुदार जन रे।
ये अनुदार जन रे, अज्ञानी जन रे। खोटे-छोटे...
सच्चे धर्म को नहीं अपनाते, रूढ़ि को ही सदा पीटते।
लकीर के फकीर वाले हैं... खोटे-छोटे...
सत्य-तथ्य से अनभिज्ञ रहते, देखा-देखी धर्म पालते

अनुभव विहीन सदा जो रहते, कथनी करनी में अन्तर रखते।

कूट-कपट के धारी हैं... खोटे-छोटे...

बाह्य आडम्बर बहुत जो करते, भावना बिना घटा-टोप जो धरते।
गर्जन-तर्जन बहुत हैं करते, प्रेम-शान्ति से रिक्त ये रहते।।

बहुरूपीया धारी हैं... खोटे-छोटे...

सच्चे धर्मी से द्वेष जो करते, उनका विरोध जो सदा ही करते।
फूट डालकर राज जो करते, स्वार्थ सिद्धि में धर्म को लगाते।।

क्रोध, मान, माया धारी हैं... खोटे-छोटे...

अन्ध श्रद्धा के धारी जो रहते, बलि प्रथा भी पालन करते
भेद-भाव जो सदा ही रखते, लड़ाई झगड़ा सदा ही करते

संकीर्ण भाव के धारी हैं... खोटे-छोटे...

निन्दा चुगली सदा ही करते, ईर्ष्या घृणा की खान ये रहते
अहंकार का पोषण करते, स्वर्ग मोक्ष का टिकट जो देते

उत्शृंखलता भाव धारी हैं... खोटे-छोटे...

ज्ञान-विज्ञान से रहित जो रहते, आध्यात्मिकता की हत्या करते
आधुनिकता से दूर जो रहते, चमत्कार से स्वार्थ साधते।

एकता के घोर बैरी हैं... खोटे-छोटे...

''कनकनन्दी'' शुभ भावना भाये, रूढ़िवाद सब दूर भगायें।
उदारता को सब कोई पाये आध्यात्मिकता से शान्ति पाये।

सच्चे-ऊँचे लक्ष्य धारी है... ये है उदार जन रे!

''धर्म शून्य धर्माचार''(21)

तर्ज :- (1. आओ बच्चों तुम्हे दिखाएँ... 2. धर्म से हम नहीं रख सके वास्ता...)

धर्म से सम्बन्ध नहीं है भाई, छल कपट आडम्बर का
बाह्य दिखावा करके न बनता, कोई सच्चा धर्मी महान्
जानो सच्चा धर्म... जय हो सत्य धर्म... ।।टेक।।

धर्म न होता केवल ढोंग से, पूजा-पाठ नाम जप से
धर्म तो होता पवित्र भाव व प्राणी मात्र की दया से
किन्तु धर्म के नाम पर किया, कुभाव न जीव संहार
बाह्य दिखावा करके न बनता, कोई सच्चा धर्मी महान्... जानो सच्चाधर्म (1)

धर्म ग्रन्थ पढ़कर भी किया, कंठस्थ व वाद विवाद
पर उपदेशी बना स्वयं भी, कभी न किया आत्म संवाद
तो भी स्वयं को ज्ञानी मानकर, अहंकार को किया विस्तार
बाह्य दिखावा करके न बनता, कोई सच्चा धर्मी महान्... जानो सच्चाधर्म (2)

पर्व व्रत दान है करता, उपवास उत्सव त्यौहार
ठाठ बाट में राज पाट में, जुलुस निकाले भीड़ अपार
तथापि शान्ति समता न मन में, करता कलह क्रूर आचार
बाह्य दिखावा करके न बनता, कोई सच्चा धर्मी महान्... जानो सच्चाधर्म (3)

ईश्वर प्रभु की चर्चा करता, चाह करता धन-मान की
धन से धर्म या धर्म से धन की मांग करता है भोग की
पारमार्थिक शून्य भाव से, परिभ्रमण होता संसार
बाह्य दिखावा करके न बनता, कोई सच्चा धर्मी महान्... जानो सच्चाधर्म (4)

''क्यों करो अभिमान रे!''(22)

तर्ज :- (जरा सामने तो आओ छलिये... इस काया...)

रे मानव क्यों करो अभिमान रे!

अनित्य वस्तु में क्यों यह दंभ रे-2 (टेक)

रे मानव...

यह देह तो मांस का पिण्ड रे, इसके लिये तू करे घमण्ड रे।
जातिकूल रजवीर्य सम्बन्ध रे, घृणित वस्तु में तेरा ये दंभ रे-2

रे मानव...

सौन्दर्य तो चमड़ी ही मात्र रे, इससे भिन्न तू चैतन्यगात्र रे।
धन से तू हो न मानो धन्य रे, तेरा धन तो शुद्ध चैतन्य रे-2

रे मानव...

तेरी प्रसिद्धि आत्मा की सिद्धि रे, लोक संग्रह नहीं है सिद्धि रे।
त्याग - तपस्या दान के मान रे, पतन ऊँचे वृक्ष से जान रे।। -2

रे मानव...

ज्ञान का मान अग्नि समान रे, स्वपर दाहक यह कुज्ञान रे।
आयु का मान तेरा अज्ञान रे, तू तो अनन्त अवाहमान रे।। -2

रे मानव...

अक्षय अव्यय वैभव धारी रे, पूर्ण कामा तू आत्मविहारी रे।
तू तो अनन्त ज्ञान धन रे, सत्य शिव सुन्दर तेरा मान रे।। -2

रे मानव...

''कनकनन्दी'' तो आह्वान करे, विभाव त्यागो स्वभाव वरो रे।
शवत्व त्याग के शिवत्व वरो रे, सच्चिदानंद में रमण करो रे।। -2

रे मानव...

''विनाश होता है धीरे धीरे''(23)

(-) (नकारात्मक विकास के सूत्र)

तर्ज :- (1. हे राम हे राम... 2. मोक्ष पद मिलता धीरे धीरे...)

विनाश होता है धीरे धीरे... 2

साधना त्यागे, संक्लेश/(तनाव) करे/(भ्रष्ट भी बने)

कुफल मिलेगा धीरे धीरे ऽऽ (टेक/स्थायी)

काम न करके, दाम चाहने से...2 बीज न बोकर, खेती/(फल/धान्य) चाहने से... 2

चोर भी बनते हैं धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (1)

अभक्ष खाने से, व्यसनी होने से...2 श्रम न होने से, फैशन करने से ऽऽ

रोग भी होता है धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (2)

उद्दण्ड बनने से स्वाध्याय न करने से... 2 संकीर्ण बनने से, गुण हीन होने से ऽऽ

अज्ञानी बनते हैं धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (3)

उद्योगहीन से, न्याय न पालने से... 2 याचना करके, व्यय करने से ऽऽ

गरीब बनते है धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (4)

क्षुद्रता करने से, बड़ाई चाहने से... 2 अभद्र बनने से, शोषण करने से ऽऽ

निन्दा भी होती है धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (5)

अधिक चाहने से, ईर्ष्या करने से... 2 धैर्य न धरने से, संक्लेश करने से ऽऽ

दुःखी भी बनते हैं धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (6)

मोह करने से, कषाय पालने से... 2 सत्य न मानकर, घमण्डी बनने से ऽऽ

जैनत्व छूटेगा धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (7)

पाप करने से, व्रत न पालने से... 2 स्वाध्याय हीनता से, दान न देने से ऽऽ

श्रावक व्रत/(सागार धर्म से) च्युत धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (8)

परिग्रह रखने से, साधुता/(साधना) न होने से... 2 असमता से, कुध्यान से ऽऽ

आत्मा न पाओगे धीरे धीरे ऽऽ... विनोश होता... (9)
मोह बढ़ाकर, कषाय करने से... 2 कुध्यान ध्याकर, संक्लेश करने से ऽऽ
संसार बढ़ेगा धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (10)
धैर्य न धरने से, विश्वास त्याग से... 2 साधना हीनता से, कुभाव करने से ऽऽ
विनाश होयेगा धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (11)
'कनक' कहे ऐ मानव सुनो... 2 इन कारणों से, दूर ही रहो ऽऽ
विकास होयेगा धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (12)

''विकास होता है धीरे धीरे''(24)

(+) (सकारात्मक विकास के सूत्र)

तर्ज :- (पूर्वोक्त ...)

विकास होता है धीरे धीरे... 2
साधना करो साध्य मिलेगा/ (लक्ष्य मिलेगा)
सुफल मिलेगा धीरे धीरे ऽऽ (टेक/स्थायी)
बीज भी बोओ, अंकुर होगा... 2 वृक्ष भी बनेगा, फल भी आयेंगे ऽऽ
रस भी पाओगे धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (1)
भ्रूण से पूर्णता, बिन्दु से सिन्धु... 2 कदम से राह, तन्तुओं से वस्त्र ऽऽ
भोजन रस बने धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (2)
सात्विक खाओ, सदाचारी बनो... 2 श्रम भी करो, प्राणायाम करो ऽऽ
स्वस्थ्य भी रहोगे धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (3)
विनम्र बनो, स्वाध्याय करो... 2 उदार बनो, गुण को मानो ऽऽ
ज्ञानी भी बनोगे धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (4)

उद्योग करो, न्याय पे चलो... 2 दान भी करो, संयमी बनो ऽऽ
सम्पन्न बनोगे धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता है धीरे धीरे... (5)
महान् करो, महान् बनो... 2 निःस्वार्थ/(पवित्र) बनो, सेवा भी करो ऽऽ
प्रसिद्धि होयेगी धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (6)
सन्तोषी बनो, ईर्ष्या भी त्यागो... 2 धैर्य को धारो, संक्लेश त्यागो ऽऽ
सुःखी भी बनोगे धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (7)
मोह को छोड़ो/(त्यागो), कषाय त्यागो... 2 अष्टांग पालो, व्यसन त्यागो ऽऽ
जैनत्व पाओगे/(सम्यक्त्वी बनोगे) धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (8)
पापों को त्यागो, व्रतों को/(प्रतिमा) पालों... 2 स्वाध्याय करो, दान भी करो ऽऽ
श्रावक बनोगे धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (9)
परिग्रह त्यागो, श्रमण बनो... 2 समता धारो, सुध्यान करो ऽऽ
आत्मा को पाओगे धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (10)
कषाय नाशो, लीनता/(समाधि) पाओ... 2 शुक्ल भी ध्याओ, क्षपक चढ़ो ऽऽ
मोक्ष भी पाओगे धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (11)
धैर्य को धारो, विश्वास करो... 2 साधना करो, विकास करो/(भावना भाओ) ऽऽ
''कनक'' पाओगे लक्ष्य धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (12)

''अनुभव आता है धीरे धीरे- (अनुभव के मोती)''

(++) (25)

तर्ज :- (1. मोक्ष पद मिलता धीरे धीरे... 2. हे राम हे राम...)

अनुभव आता है धीरे धीरे ऽऽ

स्वाध्याय करो चिन्तन करो

पालन करो शिक्षा भी ले लो... (टेक/धत्ता)

दुःख से सीखो, सुख में पालो/ (सुखे न भूलो)

निष्पक्षता से समीक्षा करो

समता पालो धैर्य भी धरो ऽऽ... अनुभव... (1)

तुलना करो गुणन करो

हानि लाभ के बारे में सोचो

अभाव सद्भाव दोनों में सोचो ऽऽ... अनुभव... (2)

गुणी से सीखो अगुणी से सीखो

पशु पक्षी प्रकृति सभी से सीखो

गुण-गुणी को स्वयं में जीयो ऽऽ... अनुभव... (3)

घटनाओं को स्व में उतारो

विवेक द्वारा उसे निखारो/(परखो)

उसे भी प्रयोग करके देखो ऽऽ... अनुभव... (4)

अनुभव हैं सब से श्रेष्ठ/(ज्येष्ठ)/(क्लिष्ट)

जानकारी या और कोई पाठ

इसके बिना सभी है व्यर्थ ऽऽ... अनुभव... (5)

जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि

जहाँ न पहुँचे कवि वहाँ पहुँचे अनुभवी

अनुभव की महिमा महान् ऽऽ... अनुभव... (6)

'कनकनन्दी' का बड़ा है पाठ

तुम ही मेरा पथ दर्शक/(प्रदर्शक)

तुम्हें ही मैं सतत मानूँ रे ऽऽ... अनुभव... (7)

भारतीयों की स्टेटस् सिम्बल-अपटूडेट की विकृत मानसिकता (26)

(भारतीयों की अभिजात्य प्रवृत्ति एवं आधुनिकता)

(वॉरेन बफेट व बिल गेट्स से आधुनिकता सीखें भारतीय)

राग :- (1. सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालों... 2. है यही समय की पुकार...)

सुनो सुनो हे! दुनियाँ वालों, हम इण्डियन की थोथली वृत्ति/(प्रवृत्ति)
वर्षा पानी बिन यथा बादल, गर्जन तर्जन बाह्य प्रवृत्ति... सुनो सुनो... (टेक)

यथा मयूर के पंख विशाल, देखने से लग अति सुन्दर
दूर गगन में उड़ने योग्य न, कदापि यदि आ जावे संकट
बकरे के गले के थन समान, दूध न झरे करे सारसंभार
मृग मरी चिका सम दूर से रम्य, प्यास न बुझे भ्रमात्मक रम्य... सुनो... (1)

अभिजात्य वृत्ति या आधुनिकता, हम इण्डियन की खोखली वृत्ति
बर्थ डे सेरेमोनी से प्रारम्भ होती, डैथ डे सेरेमोनी तक होती वृत्ति
बच्चों की पढ़ाई अंग्रेजी स्कूल, अधिक फीस अधिक ट्यूशन
बस्तों के तले कराह रहा है, कोमल शरीर व अबोध मन... सुनो... (2)

नम्बर लाना प्रोग्राम देना, डाँस स्पर्धा में भाग भी लेना
डिग्री भी लेना जॉब करना, महानगरों या क्लब में जाना
शराब पीना मांस भी खाना, तम्बाकू सिगरेट नशा भी करना
बाजारू खाना कोका भी पीना, बफे सिस्टम में खड़े खड़े खाना... सुनो... (3)

खड़े खड़े ही पेशाब जाना, सूटबूट सह शौच भी जाना
उसी ड्रेस से काम करना, भोजन गृह या मन्दिर जाना
गॉगल्स टॉई सूट पहनना, गरमी में भी सूटेड होना
मद्य पीकर गाड़ी चलाना, यातायात के नियम तोड़ना... सुनो... (4)

चमचमाती गाड़ी भी होना, अनावश्यक गाड़ी चलाना
कोई मरे या अपंग होय, अपना शौक पूरा करना
नटनटी को शिर चढ़ाना, उनका गाना उनका खाना
नाम रखना स्टाइल करना, गुण भी गाना पूजा करना... सुनो... (5)
ऐसा ही नेता खेल खिलाड़ी के, अन्धे होकर नकल करना
पाश्चात्य देशों की अपसंस्कृति को, अकल बिना ही ओढ़े रहना
नेल पॉलिश लिपिस्टिक के बिन, फैशन का मजा न आना
अनावश्यक हिंगलिश बोलना, मातृभाषा भी सही न आना... सुनो... (6)
घड़ी पहनकर गप्पे मारना, समय पे कोई काम न होना
अश्लील गाना सिनेमा हेतु, मोबाइल टी.वी. कैसेट होना
गृह सज्जा हेतु शौकीन वस्तु, हिंसात्मक बहुमूल्य चलेगा
जिससे आधुनिकता फैशन झलकती, धर्म-अधर्म सभी चलेगा... सुनो... (7)
मन्दिर पर्व तीर्थयात्रा भी, इसी निमित्त प्रयुक्त होते
विवाह उत्सव मृत्यु संस्कार, स्टेटस सिम्बल कारण होते
इसी हेतु हे दुनियाँ वालो!, हम इण्डियन रहे इडियट (कंगाल, अनाड़ी, पिछड़े)
पेट तो खाली मूँछ में घी, इसलिए हम बने अनाड़ी... सुनो... (8)
इसलिए तो हमें जगाने, वॉरेन बफेट आये भारत
बिल गेट्स भी साथ में आये, इण्डियन को दानी बनाने
हाय रे इण्डिया! ये क्या हुआ, विश्वगुरु बना पाश्चात्य चेला
गुरु तो बना गँवार आज, शिष्य बन गये श्री गुरुराज... सुनो... (9)
इसीलिये तो 'कनकनन्दी' तुम्हें, ललकारे उठो हे आर्य!
हुत गौरव गत गौरव पुनः, प्राप्त कर बनो आत्मा के राज... सुनो... (10)

झाड़ोल (स.) दि= 23.5.2011 रात्रि 12.07

भारतीयों की कमी सम्बन्धी व्यंगात्मक चित्रण

हाय रे! दयालु भारत (27)

तर्ज :- (1. बस्ती-2 पर्वत-2... 2. तीरथ करने... 3. जैन धर्म के... 4. जीवन में कुछ... 5. दुःख से घबराओ...)

हाय रे! दयालु भारत तेरी, दया माया तो अपरम्पार। हाय...

आतन्की कसाब सुरक्षा हेतु, खर्च किया धन बेशुमार।। हाय... (टेक)

अन्नदाता किसान मरे हजार, आत्महत्या से हर साल,

उसकी सुरक्षा करने हेतु, भारत न खर्चे एक दीनार।। हाय रे... (1)

आम जनता की सुरक्षा सुविधा हेतु नहीं है देशी सरकार,

आतंकवादी भ्रष्टाचारी हेतु, सुविधा सुरक्षा है दमदार।। हाय रे... (2)

बाघ की सुरक्षा करने हेतु, करते हो धन खर्च अपार,

धन के लिये तुम मारो, हो उपकारी माता गौ हजार।। हाय रे... (3)

बोरवेल में गिरे बच्चों को, निकालने में धन जन अपार,

किंतु न मुँह बोरवेल का बंद करे, ऐसी निकम्मी दया निधान।। हाय रे... (4)

अहिंसा परमो धर्म वाला, देश कहा जाता सदा ही काल,

शिक्षित सभ्य सम्पन्न ही अधिक, बनते हैं कन्याओं के काल।। हाय रे... (5)

शराब पिलाकर मांस खिलाकर, कोकाकोला से करो बीमार,

तम्बाकू खिलाकर, बीड़ी पिलाकर, देते हो तन्दुरुस्ती स्फूर्ति अपार।। हाय रे.. (6)

वृक्षारोपण स्वास्थ्य सफाई हित, विदेशों से आये धन अपार,

भ्रष्टाचार फैशन व्यसनों में, उससे अधिक खर्चे धन अपार।। हाय रे... (7)

मत्स्यपालन मुर्गी पालन को, कृषि कहकर करते हो प्रचार,

उन्हें पालकर बड़ा होने पर, उन्हें मारकर करो आहार।। हाय रे... (8)

आक्रान्ता लुटेरे शासक जनों को, महान् कहकर करो आदर,

भारत के महान् पुत्रों को, नहीं देते हो सही आदर।। हाय रे... (9)

हीरो-हीरोईन खेल-खिलाड़ी, दुष्ट नेता का करते आदर

देश उपकारी सज्जन किसान, श्रमिक सन्तों का नहीं सम्मान।। हाय... (10)

और भी तेरी अनेक दया, माया के कारण होता बेकार,

इसलिये सत्य बताने हेतु, ''कनकनन्दी'' की यह दरकार।। हाय... (11)

झाड़ोल 26/5/2011, मध्याह्न-1.57

क्यों करो हैं ढोंगाचार ?(28)

तर्ज :- (1. बस्ती-बस्ती पर्वत-पर्वत... 2. जैन धर्म के हीरे मोती...)

यदि करना है विपरीत काम, क्यों करो है ढोंगाचार ... 2

घडियाली आँसू बहाये नयने, करणी तुम्हारा क्रूराचार ... (टेक/स्थायी)

ग्रन्थ भी पढ़ों भाव न धरो, न करो तुम सदाचार

धर्म भी करो पावन न बनो, नही है तुममें पवित्राचार ...(1)

मन्दिर जाओ गप्पे लगाओ, फैशन करते दुष्टाचार/(पापाचार)

दर्शन कम प्रदर्शन भारी, करते हो तुम मायाचार... (2)

पूज्य गुण प्राप्ति हेतु न पूजा पन्थ मत (का)बाह्य आडम्बर

निन्दा चुगली ईर्ष्या-द्वेष भाव, मोक्ष मार्ग से बाह्य आचार ... (3)

तीर्थयात्रा का बहाना बनाकर, करते हो तुम मनोरञ्जन

फैशन-व्यसन पिकनिक करते, किन्तु न करते मनमञ्जन ... (4)

धर्म कार्य के अध्यक्ष बनो, बनो तुम है पदाधिकारी

दया दान सेवा कुछ न करो, बनते हो तुम शासनकारी ... (5)

पर्व उपवास रुढ़ि पालते, पालो नही है नैतिकाचार

सहज सरल भाव न रखते, न ही पालते समताचार ... (6)

पढ़ाई करो आधुनिक बनो, नही हैं तुममें आधुनिक ज्ञान
बगुला समान सफेद पोष, अन्तरंग मे है कुटिलाचार/(धूर्ताचार) ... (7)
नेता भी बनो भाषण करो, नहीं है तुममें सदाचार
रक्षक बनकर भक्षक बनो, राष्ट्र द्रोहात्मक भ्रष्टाचार ... (8)
डिग्री प्राप्त कर नौकर बनो, चाकर बनकर नौकरशाह
काम न करो शोषण करो, भ्रष्टाचार में शाहन शाह ... (9)
धार्मिक बनो दिल न कोमल, गुरु गुणी जने नहीं आदर
सर्व जीव में आत्मा भी मानो, तो भी उनसे क्रूराचार ... (10)
सभ्य भी बनो शिक्षित बनो सेवा न करो है बुजुर्गजन
माता पिता के भी आदर न करो, सभ्य आचरण से हो अज्जान ... (11)
''कनकनन्दी'' का आह्वान सुनो, त्याग करो है ढोंगाचार
सरल सहज पावन बनो, जिससे पाओगे शान्ति अपार ... (12)

झाड़ोल (सराडा) दि. 25/05/2011 रात्रि 3.04

तुच्छ (नीच) व्यक्ति के व्यक्तित्व (29)
(दुर्जन की आत्मकथा)

राग :- (ऊँचे ऊँचे शिखरो वाला है...)

छोटे खोटे लक्ष्य धारी हैं, ये तुच्छ दुर्जन रे !
दुर्जन तुच्छ, सज्जन वैरी हैं ... छोटे खोटे ... (टेंक)
बड़बड़ाने में शुष्क बादल हैं, दिखावा करने में हाथी के दाँत है
ढपोरशंख सम ये महादानी है, बकरे के गलस्तन सम ज्ञानी है
बगुला समान महाध्यानी ये, बिल्ली समान महाधर्मी है
चालनी समान ये गुणग्राही है, कैंची समान मिलनसारी हैं ... छोटे-खोटे (1)

धर्म मोक्ष बिना अर्थ काम मोही, स्वार्थपूर्ति हेतु सदा आग्रही
परोपदेश मे कुशलता भारी, लोमड़ी जिसकी धुर्तता से हारी
क्रोध मान माया लोभ के स्वामी, सत्य तथ्य से जो दूरगामी
अमोघ कठोर वचन के धारी, बिजली समान स्थिर प्रेम धारी ... (2)

तोड़-फोड़ के जो अधिकारी, लड़ाई-झगड़ा के प्रिय पुजारी
संक्लेश तनाव में ममताधारी, समता शान्ति के कट्टर वैरी
तिल का ताल (ताड़) वर्णनकारी, घडियाली आँसू के (तुम) धारी
खलनायक के उपमाधारी, दुष्टगुणों के तुम भण्डारी ... छोटे-खोटे (3)

पूर्वाचार्यों ने वर्णन भी किया, श्रोता में तुम्हें अयोग्य बताया
दोष वर्णन कर सबको बताया, दुर्गुण त्यागने को प्रेरित भी किया
दुर्गुण दुर्गुणी से सतर्क कराया, दुर्गुण त्यागने वाला सज्जन कहलाया
दोष-गुणों की समीक्षा कराया, मनोवैज्ञानिक पद्धति बताया ... (4)

काहूँ न मैत्री है सब से है वैरी, स्वार्थ सिद्धि हेतु वैश्या सम यारी
मान मर्यादा के जो परम पैरी, नीली लोमड़ी सम आडम्बर धारी
मुख में राम बगल मे छुरी, दूरस्थ पर्वत सम शोभा के धारी
दुर्जन प्रथम वन्दे अधिकारी, 'कनकनन्दी' इनसे माध्यस्थ धारी... (5)

दर्पण समान काम जो किया, स्व-स्व दोषों/(गुणों) को सब को बताया
दोषों को देखकर उसे मिटाओ, जिससे पतित भी पावन हो
ईर्ष्या द्वेष भाव किसी से नहीं है, सबका मंगल हो यह कामना है
पाप मिटे पापी कदापि नहीं, पाप मिटने से पापी न कोई... (6)

सेमारी, दि= 9/6/2011 रात्रि 11.15

न करो हे आत्महत्या(29)

राग :- (तुम ही मेरा उद्धार करो...)

सुनो सुनो सुनो हे भव्य जीव...2, सुनो है दिव्य वाणी...2
श्रीजिनवाणी सर्वज्ञवाणी...2, विश्वहितंकर अमृतवाणी...2।।टेंक।।
आत्मा की हिंसा अन्तःप्रवृत्ति, क्रोध मान माया लोभ से होती...2
कषाय जब उत्पन्न होती, आत्मा की हत्या तब से होती...2
श्री जिनवाणी सर्वज्ञवाणी ...(1)
कषाय भाव होते उत्पन्न, स्व की हिंसा होती निदान...2
निगोद जीव इसी भाव से, पाये अनन्त जन्म-मरण...2
श्री जिनवाणी सर्वज्ञवाणी ...(2)
कषायी होता कषाय भावे, बिना पशु वध इस दुर्भावि...2
शान्ति इच्छुक हे भव्य जीव, कषाय त्यागो धार्मिक भव...2
श्री जिनवाणी सर्वज्ञवाणी...(3)
कषाय यत्र तत्र ही हिंसा, यत्र समता तत्र अहिंसा...2
अहिंसा यत्र तत्र ही धर्म, जैन धर्म हैं अहिंसा धर्म...2
श्री जिनवाणी सर्वज्ञवाणी...(4)

विपरीत ज्ञान से विपरीत मान्यता (31)

राग :- (म्हारी माँ जिनवाणी...)

हे विपरीत ज्ञानी! विपरीत मान्यता तेरी SS ...
सत्य को असत्य, असत्य को सत्य, माने है कुबुद्धि तेरी ... 2
अमूल्य को मूल्य, मूल्य को अमूल्य, बहुमूल्य को माने कोरी ... 2
हे विपरीत ज्ञानी!...(टेक)

मृगमरीचिका सम असत्य में भी, मान्यता तुमरी भारी...2
कस्तूरी मृग सम स्वनाभि कस्तूरी, बाहर ढूंढ़ता कोरी...2 हे विपरीत...(1)
सोना चाँदी व मणि माणिक्य को, बहुमूल्य मान्यता तेरी...2
मिट्टी वायु व पानी के बिना, क्या काम आवे तेरे..2...हे विपरीत...(2)
सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि बुद्धि को, बहुमूल्य मान्यता तेरी...2
सदाचार व शान्ति के बिना, ये क्या काम आवे तेरी...2 हे विपरीत...(3)
पढ़ाई डिग्री व नौकरी धन में, महत भाव है तेरा...2
संस्कार विवेक स्वास्थ्य कुटुम्ब बिना, इसका महत्त्व है कोरा ...2हे विपरीत...(4)
धन जन तन अभिमान में, स्वरूप भाव है तेरा...2
आत्मश्रद्धान आत्मज्ञान बिन, इनका महत्त्व है कोरा...2 हे विपरीत...(5)
धार्मिक पंथ ग्रन्थ पर्व में, आग्रह भाव है तेरा...2
शुचिता समता सत्यनिष्ठा बिन, महत्त्व शून्य है सारा...2 हे विपरीत... (6)
भोग-उपभोग वैभव को तू, सुख है मानता सारा...2
ज्ञानानन्द आत्म वैभव समक्ष, तुच्छ है ये सुख सारा...2 हे विपरीत...(7)
संसार वर्द्धक धन जन को तू, मानता सबसे प्यारा...2
आत्म संवर्धक गुरु ज्ञान तो, अनावश्यक सदा तेरा...2 हे विपरीत...(8)
प्रतिकूल त्यागों अनुकूल चलो, पाओगे सत्य व शान्ति...2
''कनकनन्दी'' तो भावना भाये, होवे है विश्व में शान्ति...2 हे विपरीत...(9)

महान् हिंसक, रोगकारक, ज्वालामुखी कारक रसोई गैस(32)

राग :- (जमुना किनारे...)

गैस से बना भोजन किया न करों, हिंसा के भागीदार बना न करो
गैस से बना भोजन जो करे है, हिंसा, रोग, दूषण के भागी बने हैं

गैस कुआँ खोदने से हिंसा प्रारम्भ होती, ज्वालामुखी विस्फोट तक जो चलती...

गैस से बना भोजन ....(टेक/स्थायी)

तीन कि.मी. तक कुआँ खोदा जाता है, जिससे असँख्य जीव मारे जाते हैं
गैस पैकिंग ट्रान्सपोर्ट आदि के कारण, असँख्य जीव मरे त्रस स्थावर
गैस की उच्च तापीय दहन क्रिया से, विभिन्न विषाक्त गैस होती निर्माण...(1)
इसी दहन से जो जो भोजन बने, वह वह भोजन भी विषाक्त बने
भोजन के स्पर्श रस गन्ध गुण में, विकृति भी आती है भोजन पानी में
उससे विभिन्न रोग उत्पन्न होते, वातावरण तथा भोज्य पानी से ....(2)
फूडपाइजन बने पानी भोजन, विषाक्त बने है वातावरण
श्वाँस से हर समय विष पीते हैं, शरीर भी हरदम विषैले होते है
बर्तन, आसन, निवास विषाक्त होते, वेश-भूषा उपकरण विषाक्त होते ...(3)
नाइट्रोजन डाई ऑक्साइड गैस के कारण, वातावरण भोजन विषाक्त बने
श्वास तथा भोजन से जो ग्रहण करे, अस्थमा, एलर्जी, श्वास रोग से घिरे
फेफड़ो के रोग, खाँसी, श्वास फूलना, रक्ताल्पता, घुटन तथा छींक भी आना...(4)
स्मृति लोप चक्कर बेहोशी आना, मुर्च्छित होना, पित्त, वायु बढ़ना
वमन अरुचि आदि रोग घेरना, आलस्य, प्रमाद विकृत भाव भी होना
वायु प्रदूषण से असँख्य जीव है मरते, विस्फोट से घर जले मानव मरते...(5)
इण्डोनेशिया का ज्वालामुखी विस्फोट, पाँच वर्षो से करे महाविध्वंस
गैस कुँआ खुदाई से हुआ अनर्थ, तीन कि.मी. खुदाई से चट्टान ध्वंस
जिससे गरम कीचड़ निकल रहा है, गैस के मिश्रण में घातक बना है...(6)
विस्थापित हुए जन चालीस हजार, बारह ग्रामों का जो हुआ संहार
तीस फैक्ट्रीयों का हो गया विनाश, अनेक दुकानों का हो गया नाश
जल वायु प्रदूषण फैल रहा है, धन-जन-स्वास्थ्य नष्ट हो रहा है...(7)

दश हजार क्यू. मीटर उगल रहा है, हर रोज कीचड़ निकल रहा है
पच्चीस वर्ष तक यह होता रहेगा, फसल, घरों को भी नष्ट करेगा
ज्वालामुखी का विस्तार होता रहेगा, गैस का दुष्परिणाम गाता रहेगा...(8)
गैस व पैट्रोल नहीं शुद्ध भौतिक तत्त्व, एकेन्द्रिय स्थावरों का नहीं है सत्व
यह तो त्रस जीवों का होता है सत्व, करोड़ों अरबों जीवों का होता है रस
भूस्खलन आदि के बार-बार होने से, करोड़ों प्राणी मरते पृथ्वी के मध्ये...(9)
चाप व ताप कारणों से लाखों है वर्ष, पशु-पक्षी, मछलियों से बने ये तत्त्व
इसलिये रेगिस्तान व समुद्र मध्ये, प्रचुरता से उपलब्ध पृथ्वी के मध्ये
वनस्पति के कारण बने है कोल तारकोल, कोलमाइन में न होता गैस पैट्रोल...(10)
इसलिये गैस प्रयोग हिंसाकारक, हिंसा का सहभागी होता अवश्य
नवकोटि से पाप होता निदान, प्रत्यक्ष या परोक्ष से होता सुजान
यथा मांस खाओ या खिलाओ बेचो, अनुमोदना करो सर्वथा पाप....(11)
हो अहिंसक! इसका न करो प्रयोग, साधुव्रती तो सर्वथा करो ही त्याग
पर्यावरण प्रेमी तथा स्वास्थ्य इच्छुक, इसके प्रयोग से रहो हे! विमुख
''कनकनन्दी'' करे नवकोटि से त्याग, सर्वजन त्याग करें मेरा प्रयास...(12)

झाड़ोल (सराडा) दि. 28/05/2011 रात्रि 11.38

इण्डियनों के पिछड़ापन के कारण एवं निवारण (33)
(भारत के पतन एवं उत्थान के कारण)

राग :- (सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालो...)

सुनो इण्डियन सुनो हिंग्लिस्थानी, पिछड़ापन की सच्ची कहानी
जिसे सुनकर जिसे गुनकर, तुम रचाओ प्रगति कहानी .... (स्थायी)...
पिछड़ापन के प्रधान हेतु, अव्यस्थित कार्य पद्धति

अनुशासनहीन तेरी प्रवृत्ति, कार्य करने में आलस्य वृत्ति
कर्त्तव्यनिष्ठा तुम में नही है, दक्षता प्राप्त करते नहीं है
अकल बिना नकल प्रवृत्ति, सत्य-तथ्य बिना तेरी कृति ...(1)
शोध-बोध बिना तुम्हारी शिक्षा, साक्षर होना ही तुम्हारी इच्छा
डिग्री प्राप्त करो नौकरी हेतु, नौकरी करना शोषण हेतु
भ्रष्टाचार हेतु तेरी राजनीति, रक्षक बनकर भक्षक नीति
जाति पंथ क्षेत्र भाषा आधारित, राजनीति तेरी फूट की नीति ...(2)
न्यायालय तेरा अन्याय हेतु, प्रभावशाली व्यक्ति रक्षा हेतु
अतिदेरी से फैसला करो, साक्षी आधारित निर्णय करे
आतंकवादी व दोषी नेता हेतु, करोड़ो का खर्च रक्षण हेतु
छोटे दोषी हेतु कठोर नीति, सही में कानून अन्ध ही नीति ...(3)
गुलामी कानून अभी भी चले, बेचारी जनता अभी भी मरे
मद्य विक्रय अभी भी चले, पशु हत्या अभी भी चले
तुम्हारी पुलिस सब से भ्रष्ट, रक्षक रूप में महाराक्षस
नौकर रूप मे साक्षात् यम, धन जान मान करे हरण ...(4)
व्यापार उद्योग में सच्चाई कहाँ, झूठ मिलावट शोषण वहाँ
जमाखोरी नकली वस्तु विक्रय, करचोरी धोखाघड़ी प्रचुर
गन्दगी फैलाओ प्रदूषण करो, वृक्ष पशु की हत्या भी करो
फैशन-व्यसन दिखावा करो, आधुनिकता का ढोंग भी करो ...(5)
धर्म में नही है आध्यात्म लक्ष्य, पवित्र भावना महान् लक्ष्य
सत्य अहिंसा व परोपकार, प्रामाणिकता व नैतिकाचार
धर्म में भी चले राजनीति व्यापार, बाह्य में प्रचार ढोंगाचार
धन जन मान का प्रदर्शन होता, आत्मप्रदर्शन का नहीं है पता ...(6)

मातृभाषा का नहीं सही ज्ञान, अंग्रेजी भाषा का करो है मान
इसलिए स्वसंस्कृति ज्ञान से, अनजान होकर बने हीयमान
इसका प्रतिफल मिल रहा है अभी, विभिन्न रोगों के बन गये हो रोगी
तनाव एड्स डायबिटीज रोगी, हृदयाघात से क्षय के भोगी ...(7)
दुर्घटना से आत्महत्या पर्यन्त, तलाक, विघटन, हड़ताल तक
आतंकवाद से नस्लवाद पर्यन्त, ये प्रतिफल तुम्हारे कृत्य
दोषों को जानकर कर निवारण, जिससे होगा तेरा कल्याण
'कनकनन्दी' की यही भावना, इसी हेतु हुई यह रचना...(8)

सेमारी, दि.13/07/2011, मध्याह्न 2.48

आधुनिक इंडियन की एक ही भाषा (34)

(व्यंगात्मक उद्‌बोधनपरक कविता)

तर्ज :- (1.सुनो सुनो ए दुनियाँ... 2. नगरी-नगरी...)

मै हूँ आधुनिक इंडियन मुझे आती है एक ही भाषा।
हिन्दी अंग्रेजी व मातृभाषा मेरी केवल है सहायक भाषा।। ...
मूल भाषा मेरी एक ही होती है वह है धन की भाषा।
परिवार, शिक्षा, व्यापार, समाज, न्याय, राजनीति, धर्म की भाषा।।
धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में मुझे आवे अर्थ पुरुषार्थ की भाषा।
अर्थ बिना मुझे सब अनर्थ लगे न आवे मुझे दूसरी भाषा।। मै हूँ...(1)
अर्थ की आवश्यकता को मैंने बना लिया है सर्वे सर्वा।
साधन को मैने साध्य बनाकर आत्मा का कर दिया खातमा।।
भौतिकवादी पाश्चात्य देश आज समझ रहे नैतिक भाषा।
आध्यात्मवादी मैं इंडियन भूल गया हूँ नैतिक भाषा।। मै हूँ...(2)

परिवार

धन ही मेरा होता सर्वस्व, मै धन मय धन ही मैं हूँ।
धन ही मेरा माता-पिता भाई-बहिन व धन में मैं हूँ।।
परिवार में होता आदर जब मेरे पास होता है धन।
धन के बिना मेरे सुगुण हो जाते हैं रफु चक्कर।। मैं हूँ...(3)

शिक्षा

शिक्षा का लक्ष्य, माध्यम, उत्तीर्ण डिग्री उपयोग होता है अर्थ।
अर्थ बिना शिक्षा का सर्वस्व हो जाता है पूर्ण अनर्थ।।

व्यापार

व्यापार में कहना ही क्या इसकी भाषा तो सदा प्रसिद्ध।
व्यापार का सर्वस्व ही धन, इसके बिना न कहीं प्रसिद्ध।। मै हूँ...(4)

समाज

समाज में भी प्रतिष्ठा मिले, जिसके पास हो धन की भाषा।
इस भाषा बिन समाज न चलता अभी तो है इसी का सिक्का।।

न्याय

न्याय में भी चले धन की भाषा जिसका धन उसका न्याय।
धन की भाषा बिना बेचारा, निर्दोषी भी दण्ड़ पाय।। मैं हूँ...(5)

राजनीति

राजनीति में तो सदा ही चले, धन की भाषा अति प्रचुर।
राजनीति तो धन आधारित, लोकतंत्र से समाजवाद।।

धर्म

धर्म सीमा से परे धन की भाषा अभी चल रही धर्म क्षेत्र में।
धन ही धर्म धन ही मर्म धन ही स्वर्ग मोक्ष क्षेत्र में। मैं हूँ...(6)
गर्भ से लेकर मरण तक मेरा वास्ता पड़े धन भाषा से।

इसलिये मुझे इसी भाषा का प्रयोग आता है हर क्षेत्र में।।
जागरण व सुप्त अवस्था अथवा सुषुप्त या स्वप्न अवस्था।
हर अवस्था मे इसी भाषा का प्रयोग करना मेरी निष्ठा।। मै हूँ...(7)
इसलिये मेरी भाषा बिना कहीं भी न होता कोई काम।
अन्य भाषा को समझने योग्य नहीं है क्षमता मेरे पास।।
इसी भाषा का अन्य नाम है मुद्राराक्षस या अर्थ अनर्थ।
कनक, कांचन, वैभव, सम्पत्ति, परिग्रह या संग्रह अर्थ।। मै हूँ...(8)
इसलिये तो प्रसिद्ध हुआ सब रस राम रूपैया भैया।
बाप बड़े न भैया जग में सबसे बड़ा रूपैया।।
गोल्ड इज गॉड गॉड इज गोल्ड भी कहलाये भैया।
मनी मनी मनी स्वीटर देन हनी तुम हो प्यारे भैया।। मै हूँ...(9)
इसी भाषा की उपभाषा भ्रष्टाचार, मिलावट नकली माल।
शोषण, कालाधन, धोखाघड़ी, अन्याय जमाखोर अत्याचार।।
भ्रूण हत्या व दहेज हत्या, चोरी, डकैती, आतंकवाद।
अपहरण, अहंकार व भेद-विभेद अथवा होवे नस्लवाद।। मै हूँ...(10)
इसलिये मुझे समझ न आती, धर्म की भाषा या गुरु की भाषा।
नैतिक भाषा या कानूनी भाषा देशी भाषा या विदेशी भाषा।।
इसलिये तो तीर्थंकर बुद्ध साधु मेरी भाषा से विरक्त।
अर्थ को अनर्थ का मूल जानकर स्वार्थ लाभ में होते हैं रक्त।। मैं हूँ...(11)
इससे मझे आभास होता अर्थ त्याग से हो स्वार्थ लाभ।
इसलिये गुरु ''कनकनन्दी'' ने कविता से किया हमारा लाभ।।
मै हूँ आधुनिक इंडियन मुझे आती है एक ही भाषा।
हिन्दी अंग्रेजी व मातृभाषा मेरी केवल है सहायक भाषा।। मै हूँ...(12)

सेमारी, दि.15/07/2011, रात्रि 11.32

भारतीय नारी की गरिमावस्था एवं पतितावस्था(35)

तर्ज :- (1. है यही समय की पुकार... 2. सुनो सुनो...)

सुनो सुनो हो भारतीय नारी, सुनो हे तेरी गौरव गाथा।
तुम हो आर्या सुपुत्री तुम, उभय कुलकी दीपिका सुता...2 (टेक)
अनेक रूप तेरे जग में, कन्या, माता (भार्या), आर्या, बहिन...2
विदुषी, सती, संस्कार दात्री, लेखिका, धात्री, पोषणकर्त्री...2
तुम से जन्में तीर्थंकर बुद्ध, ऋषि, मुनि, ज्ञानी, सती सावित्री,
तत्त्ववेत्ता व दार्शनिक, वीर, राजा, महाराजा, सकल चक्री...2 (1)
अनेक तेरा प्रसिद्ध नाम, ब्राह्मी, सुन्दरी, सीता, सावित्री...2
गार्गी, लीलावती, चन्दनामती, चेलना, मैनासुन्दरी सती...2
मैडमक्यूरी, मदर टेरेसा, नाइटेंगेल, जीजाबाई
निवेदिता व कस्तुरीबाई, सरोजिनी नायडू, लक्ष्मीबाई...2 (2)
तेरे से अनेक रूपक बने, लक्ष्मी, सरस्वती, सती दुर्गा...2
तेरा विशेषण पहले आवे, मात-पिता, भगिनी-भैया...2
जन्मस्थान को मातृभूमि कहे, स्वभाषा है मातृभाषा।
''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी'' कहती देव भाषा...2 (3)
''यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता'' आर्य भाषा...2
गृह लक्ष्मी, धन लक्ष्मी, सरस्वती, रणचण्डी कहे संस्कृत भाषा...2
इसलिये तो भारत रहा कभी, विश्वगुरु व समृद्ध देश।
चार आश्रम से युक्त भारत, सामाजिक रचना से महान् देश।।...(4)
दीर्घ परतंत्रता के कारण, उपरोक्त गरिमा विकृत हुई...2
शिक्षा दीक्षा संस्कार विहीन, भारतीय महिला विकृत हुई...2
स्वतंत्र भारत में तो और भी विकृतियाँ विकसित हुई।

पाश्चात्य अन्धानुकरण के कारण, फैशन-व्यसन में वृद्धि हुई...2 (5)
पढ़ाई, नौकरी, किट्टी पार्टी व टी.वी. सिरियल ने जहर घोला...2
टेन्शन, फोबिया, चिड़चिड़ापना, अश्लील हरकतों को बल मिला...2
इनकारणों से सबसे अधिक, टेन्शनयुक्त भारतीय नारी
भ्रूणहत्या से आत्महत्या तक, फल भोग रही आधुनिक नारी...2 (6)
जो वृक्ष स्वमूल से कट जाये, उसकी सुरक्षा वृद्धि न होती...2
वैसा ही जो स्व-संस्कृति से, कटजाये उसकी उन्नति कभी न होती...2
परिवार सेवा गुरु सेवा, शील सदाचार से जो होती दूर
उसका पतन वैसा होता, जैसे वृक्ष के मूल से दूर...2 (7)
साक्षर के साथ संस्कार पालो, आधुनिकता के साथ शील...2
प्रगति के साथ विनम्र बनो, दृढ़ता से रहो पापों से दूर...2
कुरीति त्यागो नैतिक बनो, मान-मर्यादा का करो पालन
गरिमामय जीवन जीओ, ''कनकनन्दी'' का है आह्वान...2 (8)

सेमारी दि=15/7/2011, मध्यान्ह 3.6

आधुनिक पढी-लिखी रानी (36)

(आधुनिकता से नारी के लिए सुविधा एवं समस्यायें)

तर्ज :- (1. हे गुरुवर धन्य हो तुम... 2. होठों पे सच्चाई...)

आधुनिक पढ़ी-लिखी रानी है, कौन भरेगी (अब) पानी (है)
नदी भी आ गई किचन में, डिनर खाते है होटल में 2 (टेक)...
आटा मसाला न पीसती है, पैकेट में रेडीमेड लाती है
सड़े गले मिलावट मिलते, चमक दमक पैकिंग भाती है 2 (1)...
पानी छानना नहीं आता है, बिसलेरी वाटर (जो) पीती है।

दश रूपयों में मिले एक लीटर जिससे लगे स्टेटस सिम्बल।। (2)...
बाइक से वार्किंग जाती है, मन्दिर पैदल न जाती है।
किटी पार्टी क्लब (में) जाती, आहार दान न करती है।। (3)...
टीवी सिरियल देखती, स्वाध्याय प्रवचन न जाती है।
फैशन से शरीर सजाती है, मन का मंजन न करती है।। (4)...
ब्यूटी पार्लर जाती है, बडों की सेवा न करती है।
गप्प में समय बिताती है, बच्चों को संस्कार न देती है।। (5)...
लिपिस्टीक ओठ में लगाती (है), खाना बनाना न जानती है।
नेलपालिश नखों में लगाती है, घर की सफाई न आती है।। (6)...
अप टू डेट मैडम बनती है, ज्ञान-विज्ञान न जानती है।
हाईहिल सेण्डल पहनती है, स्वास्थ्य रक्षा न जानती है।। (7)...
प्रेमी के साथ घूमने जाती, अनैतिक पूर्ण काम करती।
इससे उसे शर्म न आती, अच्छे कामों में शर्माती है।। (8)...
इन कारणों से होती निष्क्रिय, आलस्य प्रमाद छा जाता है।
व्यवहार ज्ञान सदाचार बिना, बुद्धि का विकास न होता है।। (9)...
हिताहितज्ञान पुण्यपापबिना, महान् विचार न होता है।
इसके बिना सुख-शान्तिमय, जीवन कभी न बनता है।। (10)...
तनाव रहता प्रेम न मिलता, सहयोग भी न मिलता है।
एकली होती उदास रहती, खोटा (छोटा) विचार आता है।। (11)...
मोटापा आता शुगर लाता, दिल भी कमजोर होता है।
हड्डी भी होती कमजोर भंगुर, शरीर होता रोग का घर।। (12)...
इत्यादि से वह दुःखी भी होती, झगड़ा संक्लेश निन्दा होती।
तलाक देती या घर से जाती, आत्महत्या से जीवन देती।। (13)...

इसलिए बहिनों संभल जाओ, शिक्षित बनो, आदर्श बनो
मूल को सींचो विकास करो, कनकनन्दी का आह्वान सुनो।। (14)...

सेमारी, 4/7/2011, मध्याह्न 3.10

सुखी एवं दुःखी होने के कारण (37)

(दुःखी की विकृत भावना)

हे दुःखी देश इंडिया सुखी बनने का उपाय करो
(खुशी के पैमाने पर भारत का स्थान 90वे स्थान पर पृथ्वी में)
(एक अन्तर्राष्ट्रीय विदेशी रिपोर्ट पर आधारित)

तर्ज :- (1. है यही समय की पुकार... 2. सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालों...)

सुनो इंडियन! सुनो दुःखी देश, तुम्हारे दुःखों के सच्चे कारण।
इसे सुनकर निवारण कर दुःखों के कारण हर प्रकार।।...
तुम हो आध्यात्म देश भारत, विश्व गुरु भी कहलाते थे।...2
अक्षय अनन्त निर्वाण सुख तुम्हारे पूर्वज पाते थे।।...2
इस सुख हेतु चक्रवर्ती का भी भोग-वैभव त्यागते थे।
आत्मा के शोध-बोध-प्राप्ति से परम सुख को पाते थे।। (1) सुनो इंडियन...
तुम तो तुम्हारे पूज्य पुरूषों से विपरीत काम करते हो।...2
इसलिए तो खुशीस्तर पर 90 वें स्थान को पाते हो।।...2
लक्ष्य तुम्हारा भौतिक हुआ खाना-पीना मजा करना।
इसी लक्ष्य से चमड़ी, दमड़ी, पढ़ाई, बढ़ाई में मस्त रहना।। (2) सुनो इंडियन...
इसलिए न्याय-अन्याय व करणीय-अकरणीय न मानते।...2
भ्रष्टाचार व मिलावट तथा धोकाधड़ी पाप करते।।...2

अकल बिना नकल करते स्वयं को सुपर मानते हो।
फैशन-व्यसन बाह्य दिखावा में शक्ति सम्पत्ति गंवाते हो।। (3) सुनो इंडियन...
आलस्य, प्रमाद, कामचोरी में समय व बुद्धि गवाँते हो।...2
जिसके कारण स्वास्थ्य हानि व आत्मिक पतन करते हो।।...2
फेइम-नेइम मनी गेइन हेतु हर काम तुम करते हो।
शिक्षा, व्यापार राजनीति, सेवा धर्म भी करते हो।। (4) सुनो इंडियन...
दूसरों के गुण विकास से भी ईर्ष्या-द्वेष-घृणा करते हो।...2
दुःखी रोगी दीन, गरीब का घृणा से सहयोग न करते हो।।...2
गुण-ग्रहण का भाव न रखते, निन्दक गुण द्वेषी बनते हो।
गुण हीन व सदोषी होते भी स्वयं को महान् जताते हो।। (5) सुनो इंडियन...
सादा जीवन उच्च विचार हीन कृत्रिम जीवन ढोते हो।...2
सात्विक पौष्टिक ताजा भोज्य छोड़ तामस भोजन करते हो।।...2
माता-पिता की सेवा न करते संयुक्त परिवार न भाता है।
संकीर्ण-स्वार्थ व स्वच्छन्द जीवन तुमको अधिक सुहाता है।। (6) सुनो इंडियन..
प्रदूषण व गन्दगी फैलाना तेरा जन्म सिद्ध अधिकार।...2
जाति धर्म भाषा क्षेत्र हेतु भेद भाव तुझे प्रियकर।।...2
मन के कुछ, वचन में कुछ और काया में कुछ करते हो।
धर्म शिक्षा व कानून, कार्य में एक रूप न लाते हो।। (7) सुनो इंडियन...
अति लालसा तृष्णा हेतु अन्याय से भी धन कमाते।...2
जन्म-मृत्यु-विवाह-पार्टी में फिजूल खर्च भी करते।।...2
इसके हेतु ऋण भी लेते, ब्याज से धन हानि करते हो।
खेल-खिलाड़ी, नट-नटी हेतु फिजूल खर्च भी करते हो।। (8) सुनो इंडियन...
अन्नदाता किसान हेतु सरकार न धन खर्च करती।...2

मांस, मद्य व खेलादि हेतु प्रचुर धन भी खर्च करती।।...2
कानून तुम्हारा अति खर्चीला शीघ्र भी न्याय न मिलता है।
राजतंत्र अतिभ्रष्ट तंत्र जंगली राज भी चलता है।। (9) सुनो इंडियन...
इत्यादि कारण तनाव, अशान्ति रोग से पीड़ित होते हो।...2
डिप्रेशन फोबिया आदि से आत्म हत्या तक करते हो।।...2
इन कारणों से तुम्हारी खुशी का स्तर भी घट जाता।
खुशी ही नहीं तो आत्मिक शान्ति का आनंद तूँ कहाँ पाता।। (10) सुनो इंडियन...
सुख यदि चाहो कुप्रवृत्ति त्यागो करो हे! सत प्रवृत्ति।...2
''कनकनन्दी'' की पवित्र भावना पाओ हे आत्म संतुष्टी।।...2
सुनो इंडियन! सुनो दुःखी देश, तुम्हारे दुःखों के सच्चे कारण।
इसे सुनकर निवारण कर दुःखों के कारण हर प्रकार।। (11) सुनो इंडियन...

सेमारी दि= 26/7/2011 प्रातः 8.40

भारतीयों के भ्रष्टाचार एवं पापाचार के कारणों का अनुसन्धान (38)

तर्ज :- (1. पावन है इस देश... 2. मन की मुरलिया...)

भारतीयों के भ्रष्टाचारों का मैं कर रहा हूँ अनुसन्धान।
सनम्र सत्यग्राही दृष्टि से, दया भाव से परिशोधन।। ... (टेक)
अन्तरंग में पूर्वार्जित कर्म वर्तमान हैं बाह्य कारण।
समग्रदृष्टिकोण समन्वित, मनोविज्ञान से वातावरण।।...2
सैकड़ों वर्ष गुलाम होने से, मौलिकता का हुआ क्षरण।
गुलाम मानसिकता से लेकर अकल बिना नकल कारण।। (1) भारतीयों...

स्व आध्यात्मिक संस्कृति भूला, भौतिकता का किया वरण।
स्वतंत्रता के परिवर्तन में, स्वच्छन्दता का दीवानापन।।...2
शासक विदेशी आक्रान्ताओं को, मान बैठा है अतिमहान्।
इसलिए तो स्वतंत्र भारत में, उनका होता अन्धानुकरण।। (2) भारतीयों...
उनके समान खान-पान व वेश-भूषा औ चाल चलन।
उनकी शिक्षा व भाषा, कानून, सिनेमा, गान संविधान।।...2
उनके आर्थिक विकास ज्ञान से हो रहा है सम्मोहित
आध्यात्मिकता विवेक त्याग कर मुद्रा राक्षस से हुआ पतित।। (3) भारतीयों...
अनन्तकाल की अतृप्त इच्छा, कलयुग (कलियुग) में करे दमन।
निर्जीव यंत्रों का दास बनकर, त्याग किया है स्वावलम्बन।।...2
भोग विलासिता तृष्णा के कारण, धन आपूर्ति का बढ़ा प्रमाण।
इसलिए हर भ्रष्टाचार, बढ़ रहा दिनों-दिन.. जान।। (4) भारतीयों...
इसी हेतु पढ़ाई भी करे जिससे न आता गुण महान्।
फैशनी-व्यसनी-आलसी होकर कर रहा है आत्म पतन।।...2
ऐसा ही नौकरी, व्यापार, कला व राजनीति में बन बेईमान।
कानून, उद्योग, धर्म आदि में, बेईमानी से भी करे वर्तन।। (5) भारतीयों...
परिवार से संसद तक व देवालय से न्यायालय काम।
हर काम व हर स्थिति में, सच्चाई अच्छाई है बेकाम।।...2
इनसे होता पाप का बन्ध व आचार-विचार होता विलोम।
विवेक, विनय कार्यपद्धत्ति का, भारत में हो रहा है लोप।। (6) भारतीयों...
अनुभव हीन पद्धति विहीन, अनुशासन न होता पालन।

गुण-गुणियों का नहीं सम्मान इसलिए हो रहा पतन।।...2
हीरो-हीरोईन, अश्लील-उद्दण्ड बाहुबल का होता सम्मान।
इसलिए वे मालिक बनकर, संस्कृति को करे हीयमान।। (7) भारतीयों...
धर्म में भी नहीं नैतिकता, आडम्बर सर्वत्र जान।
आध्यात्मिकता के परिवर्तन में भौतिकता का है सम्मान।।...2
इनका कुफल भारतीय जन, भोग रहे हैं प्रतिदिन।
जनसंख्या वृद्धि भ्रष्टाचार रोग गन्दगी में हो रहा अग्रिम।। (8) भारतीयों...
ईमानदारी में सत्त्यासी स्थान, खुशी में नब्बेवें स्थान।
वैश्विक दृष्टि से आज इंडिया का नहीं रहा है कुछ सम्मान।।...2
संयुक्त राष्ट्र संघ तक में, नहीं मिल रहा है योग्य स्थान।
सर्वोच्च विश्व विद्यालयों में भी भारत का नहीं उच्चस्थान।। (9) भारतीयों...
न्यायालयों में नहीं शीघ्र निर्णय न्यायोचित सत्य प्रमाण।
संसद तो सबका दादा काला अंग्रेज व बेईमान।।...2
पृथ्वी भर में तीन-चार देश इंडिया से निम्न स्थान।
विश्वगुरु भारत प्रतिस्पर्द्धारत, प्राप्त करने को निम्नस्थान।। (10) भारतीयों...
इन कुकृत्यों को जानकर त्यागो, तब होगा भारत महान्।
''कनकनन्दी'' तो इसी प्रयास में कर रहा है तुम्हें आह्वान।।...2
भारतीयों के भ्रष्टाचारों का मैं कर रहा हूँ अनुसन्धान।
सनम्र सत्याग्राही दृष्टि, दयाभाव से परिशोधन मान।। (11) भारतीयों...

सेमारी 30/7/2011 रात्रि 1.09

सुधारपरक व्यंगात्मक कविता

विश्वगुरु भारत बन गया बेईमानों का देश (39)

(ईमानदारी में भारत का स्थान 87वें पायदान पर)

आधुनिक इण्डिया की सच्ची तस्वीर

राग :- (1. कहाँ गये चक्री... 2. सुनो सुनो ऐ दुनियाँ... 3. तन में तम्बूरे में... 4. पूजा-पाठ...)

कहाँ गयी वह ईमानदारी जिससे भारत महान् था
प्राण जाये पर वचन न जाये ऐसा जिनका शपथ था
प्रामणिकता के हेतु ही भीष्म ब्रह्मचर्य का नियम लिया/(व्रत को धारा)
पिता के वचन पालन हेतु श्रीराम वनवास स्वीकारा
हरिश्चन्द्र भी प्रतिज्ञा हेतु स्मशान में शवदाह भी किया
प्रामाणिकता की सिद्धि हेतु सीता ने अग्नि में प्रवेश किया... (1)

''सत्यमेव जयते'' जिस भारत का महान् भी मन्त्र रहा
वही भारत आज ईमानदारी में, सत्यासीवें (87) स्थान में रहा
यह तो आज चिन्ता, चिन्तन व शर्मनाक परिस्थिति ही मानो
इससे श्रेष्ठ प्रामाणिक हेतु मरण वरना उचित जानो... (2)

यत्र तत्र सर्वत्र आज इण्डिया में बेईमानी छाई
मन वचन व कार्य से आज ईमानदारी गायब हुई
स्कूल में देखो शिक्षक न पढाते ट्यूशन पढ़ाते धन लोभ से
छात्र भी देखो नकल करके डिग्री पाकर नौकरी करते... (3)

नौकर बन के काम न करते भ्रष्टाचार से धन कमाते
व्यापार उद्योगे मिलावट तथा शोषण करके धन जोड़ते
लोकसभा व विधानसभा में जनसेवक बने तानाशाह

काम न करके हंगामा करते भ्रष्टाचार के शाहनशाह... (4)
पुलिस देखो रक्षा हेतु नौकर बन के राक्षस बनते
हर पाप में इनका हाथ चोरी भी करते लाठी भांजते
डॉक्टर आज डाकू बने है धन सहित जान भी लेते
हड़ताल करके रोगी को मारते फर्जीवाड़ा से धन कमाते... (5)

न्यायालय बना यम का आलय समय धन के शोषण द्वारा
कर्मचारी से वकील तथा जज भी कमाते अन्याय द्वारा
धर्म में देखो बाह्य दिखावा पवित्र कर्त्तव्य नहीं करते
नौकर द्वारा धर्म करते गुरु की सेवा नहीं करते... (6)

परिवार व समाज में देखो, स्व-स्व कर्त्तव्य नहीं करते
माता-पिता व वृद्ध रोगी के समुचित सेवा नहीं करते
स्व-स्व के परिसर की सफाई-काम भी नहीं करते
यत्र तत्र भी गन्दगी करके पर्यावरण को नष्ट करते... (7)

अनुशासन व आचार न पालते अश्लील उद्दण्ड काम करते
तथापि स्वयं को सभ्य मानते आधुनिकता का ढोंग रचाते
''कर्मण्येव अधिकारस्तु'' यह सन्देश श्रीकृष्ण ने दिया
''मा फलेषु कदाचन'' ऐसी निस्पृहता गीता में कहा... (8)

महावीर ने 'वीतरागता' को सबसे महान् धर्म भी कहा
'तृष्णा त्याग' को बुद्धदेव ने दुःख निवृत्ति का उपाय कहा
''साँच बराबर तप नहीं है'' झूठ बराबर होता पाप
जाके हिरदे साँच बैठा है वाके हिरदे बैठा है आप... (9)

''जिनको मानते उनकी न मानते'' कर रहे हैं विपरीत काम
'मुँह में राम बगल में छुरी' ऐसे चल रहा देश का काम
बाहर में भगवान् की जय हो, अन्दर में बेईमान की

गोमुख व्याघ्र' समान क्रिया चल रही इण्डिया महान् की... (10)
इण्डियन बने बड़े इडियेट काम न करते गाल बजाते
सफेद पोश दिन के चोर कर्त्तव्य चोरी प्रायः करते
इसी कारण आज संत्रस्त भारत में हो रहा है हाहाकार
इसे दूर करने का उपाय, ईमानदारी को करो स्वीकार... (11)
इसी हेतु यह रचना हुई, 'कनकनन्दी' की यही पुकार
मिथ्या को त्यागो सत्य को भजो जिससे होगा बेड़ा पार...

सेमारी, दि= 1/8/2011, प्रातः 8.45

''पापी पेट से अधिक पाप मन से मानव करता पापाचार (40)''

तर्ज :- (नगरी नगरी...)

सुनो सुनो हे! मानव जाति, सुनो तुम्हारी नीच प्रवृत्ति।
इसे सुनकर इसे मानकर, धारो हे सच्ची प्रवृत्ति।।
तुम तो स्वयं को श्रेष्ठ मानकर, करते हो अभिमान।
अभिमान के कारण तुम, करते हो नीच काम।।
कुछ ही महापुरूष हेतु, मानव जाति महान् हुई।
अधिकांश मानव जीव की होती अधम प्रवृत्ति।। (1) सुनो सुनो...
तुम्हारा जीवन तथा वैभव, निम्न जीवों के आश्रित हैं।
उनके दोहन शोषण द्धारा, करते एशो आराम हैं।।
भोजन से प्राणवायु तक, दूध घी व मक्खन है।
औषधि, वस्त्र, फर्नीचर भी, तिर्यंचों के अवदान है।। (2) सुनो सुनो...
तुम्हारे बिना तिर्यंच जीव, अधिक होते खुशहाल हैं।
उनके बिना तुम्हारा जीना, नहीं होता सरल है।।
तथापि तुम स्वयं को देते, उनसे अति गौरव।

समस्त पाप, फैशन, व्यसन, तुम ही करते हो सेवन।। (3) सुनो सुनो...

छोटा युद्ध से महायुद्ध तक, तुम ही करते हो सर्जन।

स्वजाति से पशु-पक्षी तक, तुम ही करते हो मर्दन।।

आवश्यक या अनावश्यक, तुम तो करते हो संहार।

प्रायः सिंहादि भोजन हेतु, करते हैं शिकार।। (4) सुनो सुनो...

अथवा आत्मरक्षा के हेतु, अन्यथा नहीं शिकार।

तुम तो खाली पेट से अधिक, भरा पेट करो शिकार।

पेट से अधिक पेटी के लिए, करते हो अत्याचार।

भ्रष्टाचार व शोषण युद्ध, पापमन से करो आचार।। (5) सुनो सुनो...

वृक्ष से लेकर स्वजाति तक, तुम से होते हैं संत्रस्त।

पर्यावरण के नाशक तुम, अन्य से होते हैं रक्षित।।

जो होता है मननशील, वह होता है मानव।

अतएव तुम मनन करके, त्यागो हे! दुष्ट स्वभाव।। (6) सुनो सुनो...

इसी हेतु ही ''कनकनन्दी'' करते हैं तुम्हें आह्वान।

दानवता छोड़ मानवता करो, करो हे विश्व कल्याण।। (7) सुनो सुनो...

सेमारी- 6/8/2011 प्रातः 8.20

क्या मानव यथार्थ से सर्वोदयी बना है?! (41)

''कम सृजनशील क्यों है नयी पीढ़ी''

(माता-पिता-गुरु की सेवा में धनी लोग होते हैं गरीब)

(मेरा दीर्घ अनुभव तथा वैज्ञानिक नया शोध)

राग :- (1. ये मेरा प्रेम पत्र पढ़कर... 2. चले जाना जरा कह दो... 3. क्या मिलिए ऐसे लोगों से...)

ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे, तथा ही पूछूँ दुनियाँ/(मानवों) से

क्या मानव विकास किया है, प्रत्येक क्षेत्र-भावों में? ... स्थायी ...
विकास हो क्षेत्र भौतिक में, किया हो भौतिक ज्ञान से
किया हो स्वार्थ संकीर्ण, किया हो तनाव धन से
किया हो प्रकृति शोषण, प्रदूषण वृद्धि क्षेत्र में...3
... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (1)

आतंकवाद व भ्रष्टाचार, युद्ध महायुद्ध क्षेत्र में
सदी इक्कीस प्रवेश किया, मानव अति गर्व भावों से
तो भी मानव पिछड़ रहा, सृजन शीलता के भाव में...3
... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (2)

विज्ञान के नव शोधों से भी, ज्ञात मेरा दीर्घ शोध है
आगम पुराण ग्रन्थों में, उल्लेख विज्ञान शोध हैं
इसके कारण कर्म सिद्धान्त, मनोविज्ञान तथ्य है...3
... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (3)

संकीर्ण वृत्ति कुशिक्षा टी.वी, भौतिक आसक्त चित्त है
इसके कारण सृजनशीलता, न असामान्य विचार है
नयी पीढ़ी में न उत्पन्न, यह विज्ञान विचार है...3
... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (4)

मेरा अनुभव दीर्घकालीन, यथा विज्ञान विचार है
प्राचीनकाल के अनेक व्यक्ति, होते थे सृजनहार रे
आत्मा से विश्वात्मा तक, होते थे उच्च विचार रे...3
... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (5)

इसी कारण आचार-विचार, उनके होते थे श्रेष्ठ रे
सभ्यता संस्कृति व विज्ञान, आध्यात्म होते थे ज्येष्ठ रे

महाज्ञानी हुए इससे, दिव्यध्वनि ज्ञान बोध रे...3

... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (6)

राजा महाराजा चक्री हुए, सर्वत्यागी सन्त भी हुए
ध्यान अध्ययन आत्मा के, शोध से ऋद्धिधारी हुए
सूरी उपाध्याय गणधर, सर्वज्ञ शुद्धात्मा हुए...3

... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (7)

अभी तो संकीर्ण सोच से, भौतिक दृष्टि के धारी हैं
छात्र से वैज्ञानिक तक, तथा धार्मिक जन भी है
अतएव महान् लक्ष्य का, होता जा रहा लोप है...3

... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (8)

भोजन पेय शिक्षा संस्कृति, संस्कार व सदाचार
समन्वय व परोपकार, क्षीण आत्म विचार है
इसके कारण सृजनशीलता, अद्धितीय भाव लोप है...3

... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (9)

धनी व्यक्ति भी न करते, सेवा माता-पिता-गुरु की
धन वृद्धि से लोभ बढ़े, गरीब होता है भाव से
तन-मन-आत्मा विकास हो, सबके हो ऐसा भाव में...3

... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (10)

सृजनशीलता भाव में सदा, 'कनकनन्दी' प्रवृत्त है
विश्वमानव भी करें काम, ऐसा पवित्र चित्त है
जिससे हो वैश्विक प्रगति, ऐसा हो भाव चित्त में...3

... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (11)

सेमारी दि= 14/9/2011, रात्रि 12.40

-कम सृजनशील हैं आज के युवा- (Provoking thought)

कुछ वयस्कों को यह बात शिकायत जैसी लग सकती है लेकिन वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि आज के युवा पुराने जमाने के युवाओं की तुलना में कम सृजनशील और कल्पनाशील हो गये हैं। वर्ष 1970 के दशक में करीब तीन लाख सृजनशीलता परीक्षणों के अध्ययन के बाद अमेरिका के विलियम एण्ड मैरी कॉलेज के शोधकर्त्ताओं ने पाया है कि हाल के वर्षों में बच्चों के बीच सृजनशीलता में कमी आयी है। इस अध्ययन का नेतृत्व करने वाली क्यूंग ही किम ने कहा कि वर्ष 1990 से बच्चों की अद्धितीय और असामान्य विचार लाने की क्षमता कम हो गई है। उन्होंने कहा कि वे अब कम विनोदप्रिय कम कल्पनाशील हो गये हैं और नये नये विचार सामने रखने की उनकी क्षमता भी घटी है। (राजस्थान पत्रिका)

-बच्चों में कम होती रचनात्मकता-

उनमें नई चीजों के प्रति कल्पनाशीलता कम होने लगी है। वे अपने विचारों की ठीक से प्रदर्शित करने में भी असफल हो रहे हैं। किम ने बताया कि स्कूलों में एक ऐसी नीति की जरूरत है जिसमें साल में एक बार इस तरह का टेस्ट हो जिसमें बच्चों की रचनात्मकता का पता लगाया जा सके और इसके परिणाम के आधार पर राज्यों के शिक्षा का मानक तय किया जाना चाहिए। किम ने बताया कि बच्चों में रचनात्मकता के कम होने का सबसे बड़ा कारण टी.वी. है। यह एक अप्रत्यक्ष गतिविधि है, जो कि बच्चों का दूसरे से सम्पर्क नहीं होने देता। (प्रातःकाल)

-अमीर लोग नहीं करते माता-पिता का ख्याल-

अमीर लोग अपने बुजुर्ग माता-पिता का ख्याल कम रखते हैं। यह बात एक अध्ययन में साबित हुई है। अमेरिका में लगभग 2790 लोगों पर अध्ययन

में पाया गया है कि सैलरी बढ़ते ही लोग अपने माता-पिता को लेकर लापरवाही बरतने लगते हैं और वे अपने माता-पिता के काम में मदद करना लगभग बन्द कर देते हैं। इसके साथ ही रोज का काम और घर की साफ-सफाई के लिए भी कम वक्त देते हैं। शोध के अनुसार प्रति साल 10 प्रतिशत सैलरी बढ़ने के साथ ही अमेरिकी महिलाएँ बुजुर्ग का खयाल 36 प्रतिशत तक कम कर देती हैं, वहीं अपने काम में पुरुष 18 फीसदी तक कम कर देते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि सगे भाई-बहन या किसी और को मदद के काम में लगाना स्थिति को और भी जटिल कर देता है। कीव इकोनोमिक इन्स्टीट्यूट के प्रमुख शोधकर्त्ता ओलीना नीजालोवा ने बताया कि इस अध्ययन से यह बात सामने आई है कि देखभाल के लिए बनाई गई वर्तमान वैश्विक नीतियाँ एक-दूसरे से मेल नहीं खाती हैं। उन्होंने कहा कि बुजुर्गों के लिए देखभाल करना ज्यादा कठिन समस्या बनती जा रही है, क्योंकि जन्म दर घट रही है और लोग ज्यादा दिनों तक जीवित रहने लगे हैं। रिकॉर्ड संख्या में लोग रिटायर हो रहे हैं। अर्थशास्त्रियों ने सलाह दी है कि इस बोझ से निपटने के लिए ज्यादा संख्या में महिलाओं की नौकरी को प्रोत्साहित करना चाहिए और रिटायरमेन्ट की उम्र को भी बढ़ा देना चाहिए। इसके साथ परिवार और दोस्तों से यह कहा जाना चाहिए कि बुजुर्गों का खयाल करें। हालांकि अध्ययन में पाया गया कि बुजुर्गों की देखभाल के प्रति ताजा रूझान अच्छा नहीं है।

(प्रातःकाल से साभार)

रोग एवं हिंसाकारक है- टूथपेस्ट प्रयोग (42)
(वैज्ञानिक शोध एवं धार्मिक दृष्टि से)

रागः- (यमुना किनारे...)

टूथपेस्ट का प्रयोग किया न करो, ... भैया किया न करो
पैसा देकर रोगों को क्रय न करो।

फैशन-व्यसन से प्रयोग किया न करो, ... बहिनों किया न करो
निकोटिन, फ्लोराइड खाया न करो।
यूजीनॉल टार भी इसमें मिले होते हैं,
जिससे विभिन्न रोग तुम पाते हो।। (टेक)
नौ सिगरेट सम (तुम) पाते निकोटिन,
टूथपेस्ट एक के प्रयोग से ज्ञान।
इन सब विषों से होते विभिन्न रोग,
कैंसर, दन्तक्षय व हृदयाघात।
पेट रोग, भूख कम, धमनी रोग,
स्टेट्स सिम्बल आदि मन के रोग।।... (1)
कुछ में होते भी हड्डी चर्बी मिश्रण,
पशु-पक्षी-हिंसा (हत्या) के पाप मिश्रण।
इससे भी पापबन्ध, रोग होते हैं,
पशु की हड्डी-चर्बी तुम खाते हो।
मुख शुद्धि नहीं होता मसाण घाट,
चलते-फिरते कब्रगाह तुम हो धीवर/केवट... (2)
भारतीय अहिंसक उपाय करो रे,
धन-धर्म-स्वास्थ्य की रक्षा भी करो रे।
भ्रमात्मक विज्ञापन बेड़ी को काटो रे,
अकल बिना नकल वृत्ति को छोड़ो रे।।
दयाद्र हृदय से 'कनकनन्दी' ये कहे,
धर्मज्ञान विज्ञान, शोध से कहे।।... (3)

सेमारी, दि= 17/9/2011, मध्यान्ह 3.8

प्रदूषणों से विभिन्न रोग एवं समस्यायें (43)

राग :- (यमुना किनारे...)

प्रदूषणों को मानव पैदा न करो, रोग हिंसा प्रलय को पैदा न करो।
भाव प्रदूषण सर्व प्रदूषणों का मूल, क्रोध, मान, माया, लोभ इसके है मूल।।
इन कारणों से हिंसा, परिग्रह होते हैं, जिससे सर्व प्रदूषण जन्म लेते हैं।। (टेक)
मृदा, जल, वायु, शब्द प्रदूषण भी होते, रेडियो धर्मी प्रदूषण घातक होते हैं।
यान-वाहन-यंत्र व फेक्ट्री आदि से, विषाक्त रसायनों के प्रयोग आदि से।।
प्रदूषण उत्पन्न होते हैं पृथ्वी में, प्रदूषण वृद्धि होते जीवों के नाश से।। (1)
वायु प्रदूषण से होते अनेक रोग, लकवा कैंसर व हृदय रोग।
दमा, श्वास, रोग तथा गले का दर्द, निमोनिया त्वचा रोग आँखों में रोग।।
अनिद्रा शिरदर्द अधिक क्रोध, सिलिकोसिस खाँसी तथा प्रदर रोग।। (2)
वायु प्रदूषण से मृत्यु बीस लाख, प्रतिवर्ष पृथ्वी में यह रिपोर्ट।
हृदयरोग, अस्थमा, फेफड़े कैंसर, इत्यादि रोगों से होता मृत्यु कहर।।
शहरों में प्रदूषण हुआ पन्द्रह गुना, मोटर उद्योग आदि से प्रदूषण।। (3)
जल प्रदूषण से होते हैजा खुजली, फ्लोरोसिस पेचिश व अमीबायसिस।
टाइफाइड, पीलिया व चर्म रोग विभिन्न, जियारडिएसिस आदि रोग सम्पूर्ण।।
मृदाप्रदूषण जन्म लेते मक्खी मच्छर, जिससे जन्म लेते हैं अनेक ज्वर।। (4)
मलेरिया, डायरिया टी.बी. व डेंगु, दुर्गंध भी उत्पन्न होती इसी हेतु।
शब्द प्रदूषण से होता बहरापन, शिरदर्द न्यूरोटिक चिड़चिड़ापन।।
अनिद्रा हृदयघात पागलपन, दुश्चिन्ता उद्वेग व स्मृति विभ्रम।। (5)
रक्त चाप उच्च व स्मरण ह्रास, मानसिक, अस्थिरता बुढ़ापा शीघ्र।
रेडियो धर्मी दूषण से होता कैंसर, विकलांग, चर्मरोग, चक्षुविकार।।
थकावट, दंतक्षय, बाल गिरना, गर्भपात, देहदाह, बुढ़ापा आना।। (6) ।।

प्रदूषणों से होते हैं इत्यादि रोग, ग्लोबल वार्मिंग तथा अन्य विप्लव।
अतिवृष्टि , अनावृष्टि ओजोन छेद, ग्लेसियर क्षय आदि प्रलय तक।।
जो भी प्रदूषणों को उत्पन्न करे, वह इन पापों को तैयार करे।। (6)
इसलिए पापों से बचने हेतु, सबकी सुरक्षा भी करने हेतु।
प्रदूषणों को न करो संचार, प्राणी जगत् का न करो संहार।।
विश्व कल्याण की करें सभी भावना, इसलिए ''कनकनंदी'' की यह रचना।। (7)

सेमारी, 28/9/2011 प्रातः 6.08

जीवों के अनन्त परिभ्रमण तथा परिनिर्वाण (44)

तर्ज :- (1. उडिया-बंगला... 2. तुम्हीं हो माता...)

कहाँ से आया... कहाँ है जाना
क्या है पाया... क्या है पाना
सूक्ष्म से आया... सिद्ध बनना, नीचे/(निगोद) से आया... ऊर्ध्व में जाना
इसे जानना... स्वयं को पाना, अन्यथा नहीं... सुख को पाना... (टेक)
निगोद मध्ये काल अनन्त... जन्म मरण किया है अनन्त
पुण्य योग से त्रस में जन्मा... कीट पतंगादि तिर्यञ्च हुआ
नारकी मनुष्य देव भी हुआ... सुख से अधिक दुःख ही पाया... (1)
मन रहित असंज्ञी हुआ... मन रहित सत्य न जाना
मन सहित संज्ञी भी हुआ... सम्यक्त्व रहित सत्य न जाना
आहार निद्रा मैथुन किया... भय माया से जीवन जीया... (2)
तिर्यञ्चगति में पाप जो किया... उसके फल से नरक गया
अतिशीत कहीं गरम सहा... विषाक्त दुर्गन्ध भोजन किया
जलाना काटना पीड़ा को सहा... सुदीर्घ जीवन दुःख ही सहा... (3)

किञ्चित् पुण्य से देव भी हुआ... भोगासक्ति से जीवन जीया
काम क्रीड़ा से अतृप्त रहा... दीनता-ईर्ष्या से दुःख भी पाया
आत्मिक विकास कर न पाया... च्युत हो एकेन्द्रिय भी हुआ... (4)
अति ही दुर्लभ मानव हुआ... तीनों गति सम काम ही किया
फैशन-व्यसन कषाय किया... सत्ता-सम्पत्ति में आसक्त रहा
परम सत्य से अज्ञात रहा... आत्म विशुद्धि से विरक्त रहा... (5)
इसी से आत्मिक सुख न पाया... व्यर्थ में मानव जीवन गया
अनन्तवार ऐसा ही हुआ... पञ्चवर्तन अनन्त किया
सुख निमित्त विश्व को छाना... कहीं न मिला सुख ठिकाना... (6)
सुख तो स्वयं में स्थित ही जानो... इसी हेतु तू स्वयं को जानो
स्वयं प्राप्ति हेतु करो प्रयास... समता शान्ति व आत्मविश्वास
'कनकनन्दी' तो प्रयासरत... सर्व जीव करे आत्म विकास... (7)

सेमारी, दि= 26/7/2011, रात्रि 11.42

पावन तीर्थ क्षेत्र से पवित्रता सीखें, किन्तु पाप न करें! (45)

(तीर्थक्षेत्रों का सदुपयोग करें, न कि दुरुपयोग)

राग :- (1. झिलमिल सितारों का आंगन...)

जय जय तीर्थ भूमि/(क्षेत्र) पावन पुण्य/(पूज्य)
तेरी गोदी/(आंचल) में जन्मे तीर्थेश पूज्य...
गर्भ तप ज्ञान मोक्ष कल्याण...
तेरी कुक्षी/(धरती) में होते महान् काम... स्थायी...
ऋषि मुनि गणधर के दो कल्याण... ज्ञान मोक्ष से पावन जान
जन्मक्षेत्र, तप ज्ञान या मोक्ष... अतिशय से युक्त क्षेत्र महान्... तेरी... (1)

पावन क्षेत्र दर्शन पूजन रक्षण... पावन होने हेतु होते कारण
पावन भाव से पाप संवर होता... पुण्यकर्मों का भी आस्रव होता... (2)
श्रद्धा ज्ञान वैराग्य का होता विकास... जिससे मोक्षमार्ग होता प्रशस्त
द्रव्यक्षेत्र भाव हेतु होता निमित्त... इसी हेतु तीर्थक्षेत्र होता पवित्र... (3)
इसी हेतु तीर्थक्षेत्रों का करो दर्शन... पूजन आराधना संरक्षण
जीर्णोद्धार विकास व संवर्धन... पंथ-मत स्वार्थ का न हो प्रयोजन... (4)
कई स्वार्थी अज्ञ मोही जन... तीर्थक्षेत्रों में करते पाप उपार्जन
पंथ-मत-भेद भाव चलाते... संकीर्ण स्वार्थ की सिद्धि भी करते... (5)
फैशन-व्यसनों का सेवन करते... धर्म के नाम से धन ही कमाते
अनैतिक रूप से कब्जा भी करते... धर्म का नाम ले अधर्म करते... (6)
इससे महापाप अर्जन करते... धर्म की आस्था को व्याघात करते
स्व-पर धर्म में बाधा डालते... कथनी करनी में साम्य न रखते... (7)
अन्यक्षेत्र कृत पाप दूर हेतु... धर्मक्षेत्रों का सेवन होता
धर्म क्षेत्रों में पाप जो करता... वज्र सम पाप वह बांधता... (8)
इसी हेतु तीर्थक्षेत्र जो पावन... अपावन कभी न करो सज्जन
इसी हेतु यह रचना हुई है... 'कनकनन्दी' की लेखनी चली है... (9)

सेमारी, दि= 28/9/2011, रात्रि 1.50

सत्य-समता-शान्ति के बिना शिक्षा, धर्म आदि अहितकर (46)
(नैतिकता बिना धर्म शिक्षा आदि का दुष्परिणाम या कुफल)

तर्ज :- (जिस गली में तेरा घर न हो...)

पुस्तकों की पढ़ाई करने वाले,

स्वयं की पढ़ाई भी तुम करो।

बाह्य को देखने वाली आँखें,

स्वयं का स्वरूप स्वयं तुम देखो/लखो।। (टेक)

विद्यालयों में पढ़ाई करते, व्यवहार नैतिक ज्ञान नहीं,

डिग्री प्राप्त करते तो कागजी-2, भाव ड्राई हुआ यह भान नहीं।।... (1)

फैशन-व्यसन स्वार्थ निष्ठा में, शिक्षा का स्वरूप तुमने देखा,

आदर्श-संस्कार परोपकार में-2, तुमने पिछड़ापन ही तो देखा।।... (2)

इसलिए तो साक्षर बनकर, राक्षस बनना तुम्हें भाया,

इसलिए तेरे जीवन की सुरभि-2, कागज कुसुम सम ही रही।।... (3)

टेन्शन दुश्चिन्ता डिप्रेशन से, तेरा जीवन दूभर हुआ,

जिससे कलह से आत्महत्या तक-2, तुम्हारे जीवन में प्रवेश किया।।... (4)

धर्म भी पढ़ा धार्मिक बना, ढोंग-पाखण्ड का धर्म भी किया।

समता पवित्रता शान्ति त्याग-2, राग-द्वेष को तुमने अपनाया।।... (5)

भेद-भाव व अहंकार में, तुमने धर्म को सही माना।

जिससे तुमने शान्ति के बदले-2, अशान्तिमय जीवन ही जीया।।... (6)

इसी से कलह वाद-विवाद व, हिंसा प्रतिहिंसा का जन्म हुआ।

आतंकवाद व युद्ध महायुद्ध-2, धर्म के नाम पर तुमने किया।।... (7)

राजनीति व्यापार आदि में, ऐसा ही दुरुपयोग किया।

सत्य समता शान्ति के बिना-2, सभी प्रयासों ने कुफल ही दिया।।... (8)

अभी तो चेतो सत्य को जानो, स्व पर विश्व का कल्याण करो।

''कनकनन्दी'' का आह्वान सुनकर-2, सत्य-तथ्य का भान स्वयं ही करो।।... (9)

सेमारी- 30/9/2011, मध्याह्न 3.00

परिशिष्ट

शिक्षा-विज्ञान-मातृ सम्मेलन

(धर्म के बिना विज्ञान अन्धा एवं विज्ञान रहित धर्म पंगु, दोनों बिना शिक्षा कुशिक्षा)

मेवाड़ अञ्चल में स्थित ग्राम सेमारी के विद्या निकेतन उ.प्रा. विद्यालय के परिसर में आयोजित विद्यालय स्तरीय विज्ञान मेला व मातृसम्मेलन में प.पू. वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ससंघ द्वारा विद्यार्थियों द्वारा बनाये विज्ञान मॉडलों का निरीक्षण-अवलोकन किया गया। आचार्य श्री ने बच्चों से विज्ञान के लाभात्मक व शिक्षात्मक प्रश्न किये जिसका उत्तर प्रतिभागी बच्चों ने अपनी क्षमता, योग्यता के अनुरूप अच्छा दिया। आचार्य भगवन्त ने भी बच्चों को योग्य समाधान शिक्षा मार्गदर्शन व स्व-रचित साहित्य देकर पुरस्कृत किया, जिससे बच्चों में उत्साहवर्धन हुआ। इस अवसर पर पधारे मुख्य वक्ता श्रीयुत सुन्दर जी कटारिया ने अपने बहुमूल्य व्याख्यान के माध्यम से शिक्षा के उद्देश्य आदि पर प्रकाश डालते हुए कहा सच्ची शिक्षा वह है जो विद्यार्थियों के शरीर, प्राण, मन, बुद्धि व आत्मा का विकास करे। शिक्षा में आई विकृतियों से वर्तमान में योग नहीं, यौन शिक्षा पढ़ाई जा रही है। रिश्तों में याचक भाव बढ़ रहा है, हमें अब दातार भाव जगाना है।

प.पू. शिक्षा मनोवैज्ञानिक आचार्य भगवन्त श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ने इस अवसर पर शिक्षा के गूढ़ार्थ का प्रतिपादन करते हुए कहा कि धर्म के बिना विज्ञान अन्धा है, विज्ञान के बिना धर्म पंगु है एवं धर्म व विज्ञान इन दोनों के बिना शिक्षा कुशिक्षा है। देश-विदेश के अनेक महापुरुषों व वैज्ञानिकों का उदाहरण देते हुए गुरुवर ने कहा हमारी आन्तरिक क्षमताओं को प्रगट करना, उपलब्ध करना ही वास्तविक शिक्षा है। ''सा विद्या या विमुक्तये'' सूत्र से विद्या का रहस्य बताया। गुरुदेव ने वर्तमान भारत की दुर्दशा का कारण शिक्षा में

व्याप्त विकृतियों के माध्यम से कहा कि विश्व गुरु भारत जिसने जीरो विश्व को दिया आज विदेशी जीरो से हीरो बन गये एवं हम भारतीय अपनी कमजोरियों से जीरो अर्थात् इण्डियन (इडियट) बन गये। सर्वांगीण विकास से ही हम समर्थ बन सकते है। समारोह के अध्यक्ष कृष्णदास जी वैष्णव ने कहा गुरुदेव आपका शिक्षा सम्बन्धी उच्च चिन्तन हमारी परिकल्पनाओं से परे है। आगन्तुक अतिथि, शिक्षक आदि को भी गुरुदेव ने स्वरचित साहित्य आशीर्वाद स्वरूप भेंट किया। विद्यालय के विद्यार्थियों एवं छात्राओं ने भी गीतों के माध्यम से अच्छी प्रस्तुति दी। आचार्य श्री रचित प्रसिद्ध कविता ''आधुनिक पढ़ी लिखी रानी'' की प्रस्तुति श्रीमती ज्योति अनिल कुमार मेहता ने दी।

शुभाकांक्षा सह- मुनि सुविज्ञसागर

संघस्थ- आ. श्री कनकनन्दी जी

स्वसंघ के आदर्शों के द्वारा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार विश्व स्तर पर संभव

(आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के संघ की नियमावली)

1. संघ में चातुर्मास, केशलोंच, (दीक्षा जयन्ति, आचार्य पद जयन्ती, जन्म-जयन्ती आदि नहीं मनेगी) की आमंत्रण पत्रिका नहीं छपेगी। वैसे गुरुदेव इन पत्रिकाओं को पहले से ही छपवाने के पक्ष में नहीं थे, अगर श्रावक अपनी स्वेच्छा व भक्ति से चातुर्मास की पत्रिका छपवाते भी हैं तो गुरुदेव संघस्थ उनको नहीं भेजेंगे, श्रावक ही भेजेंगे। इसलिए सूचना हेतु सामान्य व कम मात्रा में ही श्रावक पत्रिकाएँ छपाये। संगोष्ठी, शिविर, दीक्षा-महोत्सव आदि विशेष कार्यक्रम की पत्रिका के लिए उपर्युक्त प्रावधान नहीं है।

2. प्रवचन-विधान/पंचकल्याणक/मठ-मन्दिर-मूर्ति निर्माण/वेदी

प्रतिष्ठा/शिविर/संगोष्ठी/साहित्य प्रकाशन/देश-विदेश में धर्म प्रचार कार्य/विश्व-विद्यालयों में शोधकार्य/विश्व-विद्यालयों में आचार्य कनकनन्दी साहित्य कक्ष की स्थापना इत्यादि कार्य पहले से ही स्वेच्छा, सहजता-सरलता से होते थे तथा आगे भी होंगे।

3. जिससे श्रावक पर अधिक आर्थिक बोझ पडता हो ऐसे कार्य स्वयं श्रावक अपनी शक्ति-भक्ति स्वेच्छा से करते हैं तो स्वयं करें, संघ ऐसे कार्यों को करने हेतु दबाव नहीं डालेगा।

4. आचार्य भगवन् की अनुमति के बिना संघ के कोई भी सदस्य (साधु/साध्वी, ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी-श्रावक) किसी भी प्रकार की वस्तु श्रावक से नहीं माँगेंगे और न आदेश देंगे।

5. किसी भी प्रकार की बोली हेतु संघ दबाव नहीं डालेगा।

6. संस्था के विभिन्न वैज्ञानिक उपकरण आवश्यकता के बिना संघ में नहीं संस्था में ही रहेंगे।

7. संकीर्ण पंथवादी, अर्थलोलुपी, अयोग्य, अनुशासनविहीन, अविनयी, गृहस्थ, विद्वान, पंडित, ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी, साध्वी, साधु (स्व या परसंघ) के लिए भी संघ में अनुमति नहीं है। उपर्युक्त गुणों से युक्त व्यक्ति से लेकर साधुओं को संघ में स्वीकार्य करने का कार्य आचार्य गुरुदेव के निर्णय पर ही होगा।

8. संघ में संकीर्ण मतवाद, पंथवाद, परम्परावाद, संतवाद, ग्रन्थवाद, जातिवाद, राष्ट्रवाद से परे उदार सहिष्णु, सनम्रसत्यग्राही, अनेकान्तमय वैज्ञानिक पद्धति से स्व-पर-विश्वकल्याणकारी विचार-व्यवहार-कथन लेखन-अनुसंधान-प्रचार-प्रसार को ही महत्व दिया जा रहा है, आगे भी दिया जायेगा।

9. जिस द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, परिस्थिति, समाज में उपर्युक्त उद्देश्य एवं

कार्य सम्पन्न होंगे ऐसे क्षेत्रादि विशेषतः योग्य ग्रामादि, शहरादि में ही संघ का विहार निवास, चातुर्मास अधिक से अधिक होगा।

10. संघ के सभी सदस्य स्वावलम्बी बनेंगे यानि अपना कार्य स्वयं करेंगे तथा स्वानुशासी यानि संघ के नियम-कानून-अनुशासन का पालन करेंगे एवं प्रत्येक कर्त्तव्य समय पर करेंगे।

11. स्वास्थ्य की विशेष समस्या के कारण अपवाद से जो उपचार के रूप में पंखादि, औषधि आदि का प्रयोग होता है उस समस्या का समाधान होने के बाद उसका प्रयोग नहीं करना।

12. संघस्थ सभी सदस्य परस्पर में वात्सल्य, सेवा, सहयोग, स्थितिकारण, उपगूहन से युक्त होंगे।

I आहार सम्बन्धी नियम-

1. रसोई गैस से बना भोजन-पानी-दूध का त्याग-

करोड़ों त्रस जीवों के शरीर से निर्मित, असंख्य स्थावर जीवों के हिंसाकारक,विस्फोट से घर के जलने से लेकर अनेक नर-नारियों के मृत्यु के कारक तथा अनेक रोगों के कारणभूत गैस से निर्मित भोजन आदि का त्याग का नियम है। विस्तृत विवरण आचार्य कनकनन्दी के साहित्यों से प्राप्त करें।

2. मटर, टमाटर, ग्वारफली, बेसन, उड़द, मसूरदाल, तुन्दरू (टिंडूरी,टोंडले), सेंगरी (मोगरी), तरबूज, खरबूज, सेमफली, लाल मिर्च तेल आदि का त्याग।

3. शक्कर, नमक आदि का कम प्रयोग।

4. अधकच्चा-अधपका भोजन अभक्ष एवं स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होने से त्याग।

5. कच्चा खट्ट फल, खट्ट दही-मट्ठ आदि त्याग।

II योग्य निवास- स्वास्थ्य रक्षा, ध्यान, अध्ययन, अध्यापन, साहित्य-लेख-कविता आदि लेखन, धार्मिक कक्षा, शिविर, संगोष्ठी, देश-विदेश में धर्म की प्रभावना, विश्राम-शयन, आहार क्रिया आदि के योग्य स्थान-ग्राम-नगर में आचार्य श्री कनकनन्दी ससंघ का विहार, प्रवास, चातुर्मास आदि होंगे।

III शौच क्रिया योग्य स्थान- साधुओं के मूलगुण स्वरूप प्रतिष्ठान समिति (शौचक्रिया), प्रातः- सन्ध्या भ्रमण, योगासन, प्राणायाम, ध्यान आदि के लिए योग्य प्रदूषणों से रहित-शान्त-स्वच्छ स्थान (निवास स्थान से 2-3 कि.मी. दूर तक) सहित ग्राम-नगरादि में श्री संघ सहित आचार्य श्री निवास-चातुर्मास आदि करेंगे।

IV आचार्य कनकनन्दी की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याः-

आचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव की विदग्ध अम्लपित्त (हाईपर एसिडिटी) शारीरिक गर्मी, एलर्जी के कारण उपरोक्त योग्य भोजन, निवास स्थान आदि की आवश्यकता है अन्यथा आचार्य श्री की स्वास्थ्य समस्याएँ (वमन (उल्टी-कै) चक्कर, बेहोशी, हैजा, पीलिया, सुस्ती आदि) हो जाती है। आचार्य श्री शीत-ऋतु को छोडकर अन्य समय में गरम करके ठंडा किया हुआ पानी, दूध, भोजन आदि आहार में लेते हैं।

V विविध ज्ञानार्जन के नियमः-

अनुशासन, समयानुबद्धता, समय की कमी के कारण धर्म, दर्शन, विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, भाषा, व्याकरण, नैतिक शिक्षा, सामान्य ज्ञान, प्रूफ रीडिंग, प्रबन्धन आदि का अध्ययन-अध्यापन-प्रशिक्षण, चर्चा, शंका समाधान आदि सामुहिक रूप से कक्षा, शिविर, संगोष्ठी आदि में संघ में होता है। विशेष परिज्ञान आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के साहित्य से प्राप्त कर सकते हैं।

VI स्वास्थ्य सम्बन्धी सामुहिक प्रशिक्षण के नियमः-

स्वास्थ्य रक्षा के नियम, रोग दूर करने के उपायभूत आदर्श आहार,

विचार, दैनिकचर्या, प्राणायाम, योगासन, ध्यान आदि का प्रशिक्षण संघ में सामूहिक कक्षा, शिविर, संगोष्ठी में ही दिया जाता है तथा आचार्य श्री के विभिन्न साहित्यों में भी वर्णित है किन्तु व्यक्तिगत नहीं दिया जाता है अतः कक्षा आदि से लाभान्वित हों परन्तु व्यक्तिगत न चाहें, न ही पूछें न ही कुछ मांगे। विशेष परिज्ञान आचार्यश्री के साहित्यों से प्राप्त कर सकते हैं।

ऐसा ही अन्यान्य समस्या/शंका-समाधान सम्बन्धी जान लेना चाहिए।

आचार्य श्री कनकनन्दी- साहित्य कक्ष की सूची

भारत के 14 प्रदेशों के 57 विश्वविद्यालयों में साहित्य कक्ष की स्थापना अभी तक हो चुकी है, आगे प्रायः 100 वि.वि. में स्थापना होगी। विश्व विद्यालयों के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर साहित्य स्थापित होने की सूची-

1. श्री दि. जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, कविनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)
2. श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर, शास्त्रीनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)
3. श्री दि. जैन मन्दिर, दादरी गाजियाबाद (उ.प्र.)
4. श्री दि. जैन मन्दिर, ऐल्लकजी, माण्डोला, गाजियाबाद (उ.प्र.) (श्री विज्ञान सागर द्वारा स्थापित)
5. श्री दि. जैन मन्दिर, बुलन्दशहर (उ.प्र.)
6. प.पू. मुनिश्री विहर्षसागर जी
7. श्री सिद्धान्त तीर्थक्षेत्र, शिकोहपुर, गुडगाँव (हरियाणा)
8. श्री दि. जैन मन्दिर पुस्तकालय, वसुन्धरा, गाजियाबाद (उ.प्र.)
9. श्री दि. जैन मन्दिर, शंकरपुर, शाहदरा, दिल्ली
10. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, वहलना, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
11. डॉ. (पं.) ताराचन्द्र पाटनी ज्योतिषाचार्य, 1132, मनिहारों का रास्ता, जयपुर (राज.)
12. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर पुस्तकालय, गोरेगाँव, मुम्बई (महा.)
13. श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर लाइब्रेरी, सेक्शन-16, फरीदाबाद (हरियाणा)

14. श्री एल.डी.जैन, अनिल जैन, श्री महावीर भगवान् दि. जैन मन्दिर, हरिनगर, घण्टाघर, दिल्ली

15. ऋषभाञ्चल जैन मन्दिर, ध्यान केन्द्र, मोरटा, गाजियाबाद (उ.प्र.)

16. श्री वासुपूज्य पार्श्वनाथ दि.जैन मन्दिर, कांधला, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

17. श्री दि. जैन मन्दिर, सासनी, अलीगढ़ (उ.प्र.)

18. श्री दि. जैन मन्दिर, राधोपुरा, शाहदरा, दिल्ली

19. श्री दि. जैन मन्दिर, कैलाशनगर, गली-2, शाहदरा, दिल्ली

20. श्री दि. जैन मन्दिर, कैलाशनगर, गली-12, शाहदरा, दिल्ली

21. श्री दि. जैन मन्दिर, राधोपुरा

22. श्री दि. जैन मन्दिर, रघुबरपुरा, दिल्ली

23. श्रमती कुंकुम जैन, श्री विनोद कुमार जैन 1-3/9 कृष्णानगर, दिल्ली

24. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, सूरजमल विहार, दिल्ली

25. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, सूरजमल विहार, दिल्ली

26. श्री रूप कुमार जैन, ए-236, सूरजमल विहार, दिल्ली

27. श्री अनिल कुमार अग्रवाल जैन, दिलशाद गार्डन मन्दिर दिल्ली

28. श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर, घण्टाघर, गाजियाबाद (उ.प्र.)

29. श्री दि. जैन मन्दिर, त्रिलोकधाम तीर्थ, बड़ागाँव, बागपत (उ.प्र.)

30. श्री चन्द्रवती जैन महिलाश्रम, बड़ागाँव , बागतपत (उ.प्र.)

31. श्री दि. जैन मन्दिर, सञ्जयनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)

32. श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर, मुनीम कॉलोनी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

33. श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर, पंचायती मन्दिर, अनुपुरा, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

34. श्री हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र पुराना मन्दिर, हस्तिनापुर, मेरठ (उ.प्र.)

35. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, जनरलगंज, कानपुर (उ.प्र.)

36. श्री दि. जैन मन्दिर, मसूरी रोड, देहरादून (उत्तरांचल)

37. श्री भगवान् महावीर दि. जैन मन्दिर, अशोकनगर फेज-1, नई दिल्ली

38. श्री भगवान् महावीर दि. जैन मन्दिर, रोशनपुरा, नई सड़क, दिल्ली

39. श्री भगवान् महावीर दि. जैन मन्दिर, N-10 ग्रीनपार्क एक्सटेन्शन, नई दिल्ली

40. श्री दि. जैन मन्दिर, नोएडा सेक्टर 29, नोएडा (उ.प्र.)

41. श्री दि. जैन मन्दिर, सेक्टर 7, अहिंसा विहार, नई दिल्ली (रोहिणी)

42. उत्तर प्रदेश भवन लाइब्रेरी, शिखरजी, जि. गिरीडीह (झारखण्ड)

43. श्री दि. जैन मन्दिर, मुंगाणा, जि. उदयपुर (राज.)

44. श्री दि. जैन मन्दिर, श्री महावीर जी पुस्तकालय, श्री महावीरजी (राज.)

45. श्री दि. जैन मन्दिर लाईब्रेरी, चूलगिरी, जयपुर, राजस्थान

46. श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर लाईब्रेरी, सेठी कॉलोनी, जयपुर, (राज.)

47. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, साहिबाबाद, गाजियाबाद

48. श्री दि. जैन मन्दिर, जम्बूद्वप, हस्तिनापुर, मेरठ (आ. ज्ञानमीह माता जी)

49. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर पुस्तकालय, जैन मोहल्ला, पानीपत (हरियाणा)

50. श्री दि. जैन मन्दिर, अहियागंज, लखनऊ (उ.प्र.)

51. श्री दि. जैन मन्दिर, मुन्नालाल कागजी धर्मशाला, लखनऊ (उ.प्र.)

52. श्री दि. जैन मन्दिर, विवेक विहार, शाहदरा, दिल्ली

53. श्री रतनलाल जैन लाईब्रेरी, यूसूफ सराय, नई दिल्ली

54. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर (पुराना), बड़ागाँव, बागपत

55. श्री दि. जैन मन्दिर, देवलगाँव राजा (महाराष्ट्र)

56. श्री दि. जैन मन्दिर, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

57. श्री दि. जैन मन्दिर, समनेवाडी (कर्नाटक)

58. श्री दि. जैन धर्मतीर्थ (महाराष्ट्र) कचनेर के पास

59. कन्थुगिरि, आलते, जिला-कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

60. अभिनन्दन साधना केन्द्र, त्रिमूर्ति, शेषपुर मोड, जिला-उदयपुर (राज.)

61. दि. जैन अतिशय क्षेत्र, जटवाड़ा, औरंगाबाद

62. अतिशय क्षेत्र, सीपुर, जिला-उदयपुर

63. श्री दि. जैन मन्दिर, झाड़ोल (फ.) जिला-उदयपुर

64. श्री दि. जैन मन्दिर, केकड़ी, जि. अजमेर (राज.)

65. श्री दि. जैन मन्दिर, प्रगति कॉलोनी (नगर), डूंगरपुर (राज.)